हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

सुन्दरलाल

विश्ववाणी कार्यालय, इलाहाबाद
१९४५

प्रकाशक : विश्ववाणी कार्यालय, इलाहाबाद

मूल्य डेढ़ रुपया

मुद्रक : विश्वम्भरनाथ, विश्ववाणी प्रेस, इलाहाबाद

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

१—हज़रत ईसा से पहले १
२—यहूदियों पर असर २३
३—रोम के ख़िलाफ़ बग़ावतें ३५
४—मसीहा की पेशीनगोइयाँ ३८
५—महात्मा यहूना ४४
६—हज़रत ईसा का जन्म ५०
७—यरुसलम में पहिली बार ५३
८—सचाई की खोज ५५
९—गुरू की तलाश ६३
१०—यहूना का क़त्ल ६३
११—हज़रत ईसा का स्वभाव और रहन सहन ... ७०
१२—उपदेशों का खुलासा ७८
१३—दूसरे उपदेश ८९
१४—लोगों का उनके ख़िलाफ़ हो जाना ... १०७
१५—यरुसलम जाना ११४
१६—हज़रत ईसा का पकड़ा जाना ११९

१७—आखरी उपदेश १३०
१८—सूली १३३
१९—इञ्जील १४१
२०—सूली के बाद १४६
२१—निचोड़ १६३-६८

दो बातें

हज़रत ईसा दुनिया की उन महान से महान आत्माओं, उन बड़ी से बड़ी रूहों में से थे जो सैकड़ों और कभी कभी हज़ारों बरस के बाद दुनिया के लोगों को धर्म, मज़हब, सच्चाई और अपनी असली और टिकाऊ भलाई का रास्ता दिखाने के लिये अलग अलग देशों में जन्म लेते रहे हैं। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ज़रथुस्त्र, इब्राहीम, मूसा, कन्फ़्यूसिअस, लाओत्ज़े, इखनातन, और मोहम्मद सब इसी तरह की महान आत्मा थे। अलग अलग देशों और अलग अलग ज़मानों के लोग इन्हें अपने अपने ढङ्ग से अवतार, पैग़म्बर, तीर्थङ्कर जैसे अलग अलग नामों से पुकारते रहे हैं।

इस तरह के बड़े लोग मोटे तौर पर दो तरह के होते हैं। जिस ज़माने में जैसी ज़रूरत होती है वैसा ही रास्ता बताने वाले का ढङ्ग होता है। इनमें से एक की मिसाल ताड़ के पेड़ से दी जा सकती है और दूसरे की बड़ के पेड़ से। ताड़ के साये में बहुत ही कम लोग बैठ सकते हैं, लेकिन ताड़ मीलों दूर से मुसाफ़िर को ठीक रास्ता बता देता है, और बहुत

बार ग़लत रास्ते और बरबादी से बचा लेता है। बड़ का पेड़ इतनी ज्यादा दूर से तो दिखाई नहीं देता लेकिन फिर भी राह-गीर को बहुत बड़ी मदद देता है और सैकड़ों और हज़ारों थके मांदे उसके साये में आराम पाते हैं। हज़रत ईसा इनमें से पहले ढङ्ग के रास्ता दिखाने वाले थे।

मोटे तौर पर हज़रत ईसा की तालीम का निचोड़ यूँ बयान कया जा सकता है—

ईश्वर अल्लाह एक है। वह हम सब का 'बाप' है। हम सब उसके बच्चे हैं। इस नाते से हम सब भाई बहिन हैं। हमें इसी तरह एक दूसरे से बरतना चाहिये। अपनी ख़ुदी को मिटाना, अपने आपे को जीतना, सब से प्रेम करना, दूसरों की सेवा में अपना बड़प्पन समझना, किसी को अपने से छोटा न मानना, किसी से ज़रा सी भी नफ़रत न करना और अपने ख़याल से, अपने बोल से या अपने किसी काम से किसी को ज़रा सी भी तकलीफ़ न पहुँचाना यही हज़रत ईसा के उपदेशों का निचोड़ है। दूसरों के लिए यहाँ तक कि बुरे ज़ालिम और पापी समझे जाने वालों के लिए अपने ऊपर मुसीबतें झेल कर रित रित कर जान दे देना उनकी निगाह में सब में बढ़कर, सब से ऊँची और सब से प्यारी मौत है। हज़रत ईसा का मशहूर उपदेश है कि 'अगर कोई तुम्हें एक मील ज़बरदस्ती ले जाना चाहे तो तुम उसके साथ दो मील जाओ, अगर कोई तुम्हारा कोट मांगे तो तुम उसे अपना कुरता भी दे दो, कोई तुम्हारे एक गाल पर चपत मारे

तो तुम प्रेम से दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो।

आज दुनिया में लगभग साठ करोड़ आदमी अपने को ईसाई धर्म के मानने वाले कहते हैं। लेकिन इन साठ करोड़ में शायद साठ भी हज़रत ईसा की इस नसीहत पर अमल करने वाले न मिल सकेंगे। पिछले दो हज़ार बरस के अन्दर ईसाई मठों और ख़ानकाहों में रहने वाले थोड़े से इनेगिने साधू महन्तों को छोड़ कर शायद बिरले ही ऐसे रहे होंगे जिन्होंने हज़रत ईसा के इन उपदेशों को जीवन में अमल करने की चीज़ बनाया हो। यूरोप और अमरीका की आज क़रीब क़रीब सौ फ़ी सदी आबादी ईसाई है। लेकिन वहां का एक एक देश आज हज़रत ईसा के उपदेशों के ठीक उलटा चल रहा है और इसी को ठीक समझता है। ज़ाहिर है कि हज़रत ईसा की तालीम दुनिया के ईसाइयों की निगाह में अमल कर सकने की चीज़ नहीं है। दूसरे धर्म मज़हबों के सोचने समझने वाले लोग भी ज़्यादातर इसी ख़याल के हैं।

दूसरी तरफ़ आज कल ही की दुनिया को ध्यान से देखने पर हमें पता चलता है कि शायद हज़रत ईसा की दी हुई तालीम इतनी ग़लत या इतनी निकम्मी न थी। यह भी पता चलता है कि मानव जाति इन्सानी क़ौम के ऊपर वह तालीम 'जंगल में रोना' ही साबित नहीं हुई। आज से पचास साल पहिले लियो टाल्सटाय जैसे विद्वानों ने और अभी हाल में रेडाल्फ़ हक्सले जैसे सोचने समझने वालों ने दुनिया को फिर वही

पुराना रास्ता दिखाने की कोशिश की है। सन् १९१४-१९१९ की जंग में यूरोप भर के अन्दर जंग के खिलाफ़ आवाज़ उठाकर जेल जाने वालों की तादाद लाखों तक पहुंची थी। अकेले इङ्गलैण्ड में इस तरह के लोगों की तादाद एक वक़्त ४५,००० से ऊपर बताई जाती थी। यूरोप के अच्छे से अच्छे सोचने वाले इस बात को महसूस कर रहे हैं कि उनका आज कल का रास्ता ग़लत है और उन्हें किसी दूसरे रास्ते की तरफ़ चलना चाहिये। बड़ी से बड़ी फ़ौजी ताक़त के खिलाफ़ आत्मबल या रूहानी ताक़त से काम लेने के तजरबे पिछले सौ डेढ़ सौ बरस के अन्दर यूरोप में भी हुए हैं। हिन्दुस्तान में महात्मा गान्धी ने राज काज जैसे टेढ़े मैदान के अन्दर अहिंसा यानी अदम तशद्दुद के उसूल को जारी करके एक बार दुनिया भर का ध्यान अपनी तरफ़ खींच लिया है। ज़ाहिर है कि इस वक़्त की भटकी हुई दुनिया किसी नए रास्ते की खोज में है। बहुत मुमकिन है कि हज़रत ईसा के दो हज़ार बरस पुराने उपदेशों में जिन्हें इतने दिनों तक दुनिया के ज़्यादातर नेताओं ने निकम्मा समझ कर छोड़ रखा था अब दुनिया को नए और ठीक रास्ते का अता पता मिले।

अगर हम पिछले हज़ारों और लाखों बरस के अन्दर आदमी के विकास, उसकी, तरक़्क़ी, उसके आगे बढ़ते रहने को ध्यान से देखें तो इसमें कुछ भी शक नहीं रह जाता कि आदमी पहले कुटुम्ब खानदान के अन्दर, फिर क़बीले बिरादरी के अन्दर, फिर गाँव क़स्बे शहर के अन्दर, और अब धीरे धीरे

मुल्क और मुल्कों के आपसी बर्ताव के अन्दर पराये से अपने पन की तरफ़, नफ़रत से प्रेम की तरफ़, जिस्मानी यानी शारीरिक ताक़त के इस्तेमाल से इख़लाक़ी नैतिक समझौते की तरफ़ और हिंसा तशद्दुद से अहिंसा अदमतशद्दुद की तरफ़ बढ़ता रहा है।

हम सिर्फ़ एक छोटी सी मिसाल देंगे। डेढ़ सौ दो सौ बरस पहिले तक यूरोप की बड़ी बड़ी कौन्सिलों, एसेम्बलियों और पार्लिमेण्टों में जब कभी दो आदमी दो राय के होते थे तो किसकी राय ठीक है यह तय करने के लिए वे अकसर कुश्ती का तरीक़ा काम में लाते थे जिसे 'डुअेल' कहते थे। जो जीत जाता था उसी की राय ठीक मानली जाती थी। आज यह चीज़ हँसी की चीज़ समझी जाती है। एक एक देश के अन्दर हज़ारों और लाखों आपसी झगड़े जो पहिले इन्हीं ढङ्गों से तय किए जाते थे अब अमन के साथ अदालतों में तय किये जाते हैं। कोई वजह मालूम नहीं होती कि आगे चलकर क़ौमों क़ौमों और मुल्कों मुल्कों के बीच के झगड़े भी इसी तरह अमन के साथ तय न हो सकें। जिस तरह पिछले पाठ आदमी ने सैकड़ों बरस के कड़वे तजरबों से सीखे हैं उसी तरह आज दुनिया अपने अब तक के सब से कड़वे तजरबे से नया सबक़ सीखने की कोशिश कर रही है।

हमें नहीं मालूम कि इस दुखी धरती पर कभी वह दिन आयेगा या नहीं जिसे हज़रत ईसा ने 'गाड्स किंगडम आन

अर्थ', 'राम राज्य' या 'हकूमते इलाही' कह कर पुकारा है लेकिन इसमें शक नहीं कि आदमी ज्यूं त्यूं कर इस सबक़ को सीखता जा रहा है कि ख़ुदी, स्वार्थ की निस्बत सब के भले का रास्ता, नफ़रत के मुक़ाबले में प्रेम का रास्ता, आपाधापी के मुकाबले में एक दूसरे का हाथ बटाने का रास्ता और हिंसा तशद्दुद के मुक़ाबले में अहिंसा अदम तशद्दुद का रास्ता उसके लिये ज़्यादा भलाई का रास्ता है।

हज़रत ईसा की प्रेम और अहिंसा की तालीम भी कोई नई या अनोखी तालीम नहीं है। थोड़े बहुत ऊपरी फ़रक़ के होते हुए भी दुनिया के सब धर्म मज़हब और सब अवतार पैग़म्बर, तीर्थङ्कर हमें एक ही तालीम देते रहे हैं। इन सब धर्म मज़हबों की ख़ास ख़ास किताबें भी बहुत दर्जे तक एक दूसरे की गूंज हैं और दुनिया को एक ही पाठ पढ़ाती हैं। हज़रत मूसा के मशहूर दस हुकमों में से, जो यहूदी धर्म की बुनियाद हैं, सब से पहिला हुकम यह है-"किसी की जान न लेना"। इसमें किसी शर्त्त का सवाल नहीं है। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के उपदेश हज़रत ईसा के उपदेशों से इतने ज़्यादा मिलते हुए हैं कि सारी दुनिया इन तीनो को एक बराबर अहिंसा का प्रचारक मानती है। महात्मा ज़रथुस्त्र के उपदेशों में भी इसी तरह की चीज़ें भरी हुई मिलेंगी। ऊपरी निगाह से देखने में दो मज़हबी किताबें हैं गीता और क़ुरान जो ख़ास हालतों में हथियार उठाने की इजाज़त देती हैं। लेकिन यह निगाह सिर्फ़ ऊपरी निगाह है।

गीता के बारे में बहुत से विद्वानों की राय है और हमेशा से चली आई है कि गीता में लड़ाई का बयान सिर्फ एक रूपक या मिसाल के तौर पर है और उस किताब के अन्दर कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई से मतलब आदमी के दिल के अन्दर की भलाई और बुराई की ताक़तों की लड़ाई से है। इसे छोड़ कर भी गीता के अन्दर अहिंसा (१६–२) को सब से ऊँचा धर्म बता कर उसकी जगह जगह तारीफ़ की गई है। गीता बार बार कहती है कि आदमी को हमेशा 'सब का भला चाहना चाहिये' (३-२५), 'कभी किसी के साथ भी दुशमनी नहीं करनी चाहिये' (११–५५) और हमेशा 'सब के भले के काम में लगे रहना चाहिये' (५–२५,१२–४)।

फ़िलिस्तीन में उपदेश देने का हज़रत ईसा का कुल ज़माना ३ साल से ज्यादा नहीं गिना जाता। हज़रत मुहम्मद ने अपना उपदेश शुरू करने के १३ साल बाद तक कभी दूसरे के हमले के जवाब में भी हथियार उठाने की किसी को इजाज़त नहीं दी। उनके उपदेशों में इस तरह की चीज़ें भरी हुई हैं—

अहमद ने पूछा "ईमान क्या है?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों की भलाई करना।"

किसी ने पूछा "मोमिन यानी ईमान वाला कौन है?" जवाब मिला "मोमिन वह है जिसके हाथों में सब आदमी अपनी जान और माल को सौंप कर बेखटके रहें।" (बुख़ारी)।

"अगर मोमिन होना चाहता है तो अपने पड़ौसी का भला कर

और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिए अच्छा समझता है वही सब के लिए अच्छा समझ !" [तिरमिज़ी]।

"ताक़तवर वह नहीं है जो दूसरों को नीचे गिरा दे, हममें ताक़तवर वह है जो अपने ग़ुस्से को क़ाबू में रखता है" (बुख़ारी)।

मुहम्मद साहब की तलवार की मूठ पर यह शब्द खुदे हुए थे—

"जो तेरे साथ बेइन्साफ़ी करे उसे तू माफ़ कर दे, जो तुझे अपने से अलग करदे उससे मेल कर, जो तेरे साथ बुराई करे उसके साथ तू भलाई कर···" (रजीन)।

यह एक मशहूर बात है कि मुहम्मद साहब ने अपनी ज़िन्दगी भर कभी भी किसी पर तलवार या कोई हथियार नहीं चलाया।

क़ुरान में भी इस तरह की आयतें भरी हुई हैं—

"अगर तुम्हें कोई दुःख पहुँचावे तो तुम उससे उतना ही बदला ले सकते हो, यानी जो उसने तुम्हारे साथ किया उससे ज़्यादा तुम उसके साथ हरगिज़ न करो। लेकिन अगर तुम सब्र के साथ बरदाश्त कर जाओ तो सचमुच सब्र करने वालों को सब से अच्छा फल मिलेगा। इसलिए सब्र ही करो। अल्लाह की मदद से ही तुम सब्र कर सकोगे, दूसरों की फ़िक्र मत करो। तुम इस फ़िक्र में मत पड़ो कि दूसरे क्या सोच रहे हैं। सचमुच अल्लाह उन्हीं के साथ है जो बुराई से बचते हैं, और सब के साथ भलाई करते हैं।" (१६·१२६ से १२८)।

"बुराई और भलाई बराबर नहीं हो सकतीं, बुराई का बदला भलाई से दो, और तुम देखोगे कि जिसे तुमसे दुश्मनी थी वह भी तुम्हारा गहरा दोस्त हो जायगा"। (४१-३४)।

"बुराई का बदला भलाई से दो" (२३-९६)।

सच यह है कि दुनिया के सब बड़े बड़े धर्म मज़हबों और सब मज़हबी किताबों के बुनियादी उसूल एक हैं। फ़रक़ ज़्यादा-तर सिर्फ़ ऊपर के कर्म काण्डों और पूजा के तरीक़ों में है या उन छोटी छोटी बातों में है जो देश और काल, मुल्क और ज़माने के साथ साथ बदलती रही हैं। हिन्दुस्तान में या किसी भी देश में मज़हब के नाम पर झगड़ों की वजह सिर्फ़ यह है कि हम अपने अपने मज़हबों के बुनियादी उसूलों पर इतना ज़ोर नहीं देते जितना ऊपर के रीत रिवाजों और दूसरी छोटी छोटी बातों पर। इसीलिए सब से ज़्यादा ज़रूरी यह है कि हम हमदर्दी के साथ एक दूसरे के मज़हबों को समझें और एक दूसरे के पैग़म्बरों, अवतारों और तीर्थङ्करों की दिल से क़द्र करना सीखें।

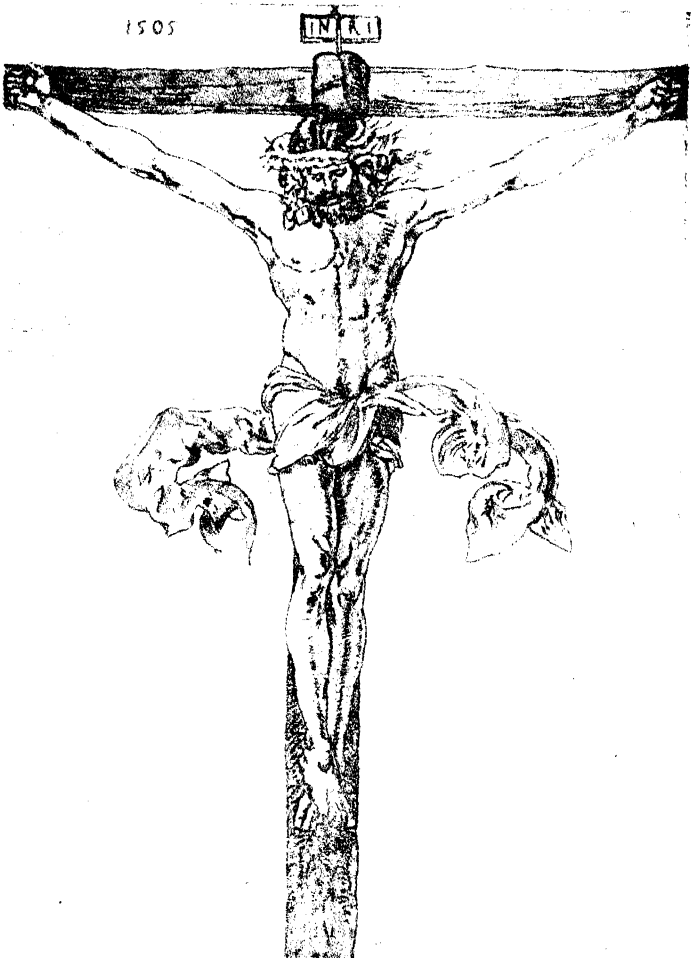
ख़ुश क़िस्मती से हमारे देश में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी वग़ैरह सब मज़हबों के लोग मौजूद हैं। यह मुल्क सब का एक बराबर मुल्क है। इसीलिए हमारे लिए एक दूसरे के मज़हबों और मज़हब के क़ायम करने वालों को ठीक ठीक समझना और भी ज़्यादा ज़रूरी है। अगर उस परमात्मा ने जो सब का ईश्वर, अल्लाह, गॉड है, चाहा तो इसी तरह हम

सब अलग अलग धर्मों को मिलाकर उस एक मानव धर्म, उस एक मज़हबे इन्सानियत की बुनियाद अपने देश मे रख सकेंगे जिसकी दुनिया इस वक्त़ बाट जोह रही है। फिर न हज़रत ईसा सिर्फ़ ईसाइयों के रह जायेंगे और न हज़रत मुहम्मद सिर्फ़ मुसलमानों के, और न श्री कृष्ण सिर्फ हिन्दुओं के। ये और इस तरह की सब महान आत्माएं उस दिन सचमुच दुनिया भर के सब आदमियों की बपौती और दुनिया भर के लिये बरकत दिखाई देंगी। उस शुभ घड़ी के आने की तय्यारी के तौर पर यह छोटी सी किताब पढ़ने वालों की भेंट की जाती है।

किताब का असली हिस्सा कई महीने से छपकर पड़ा हुआ था। भूमिका के न मिलने और लेखक के इलाहाबाद से बाहर रहने की वजह से इसके निकलने में देरी हुई।

५६ चक, इलाहाबाद
१० - २ - ४५

सुन्दरलाल



चित्रकार — अलब्रेख्त ड्यूरर] [बर्लिन म्यूजिअम

हज़रत ईसा से पहले

जब से आदमी के कामों का पता चलता है तब से आज तक धर्म और कलचर की बहुत सी ज़बरदस्त लहरें एशिया के कई देशों से उठकर यूरोप और बाक़ी पच्छिमी दुनिया को बार बार सर सब्ज़ करती रही हैं और वहाँ की करोड़ों आत्माओं को नया जीवन देती रही हैं।* ईसाई धर्म भी इन्हीं एशियाई लहरों में से एक था। इस धर्म के क़ायम करने वाले हज़रत ईसा एशिया की उन महान आत्माओं में से थे जिनकी ज़िन्दगी और जिनके उपदेशों का बाद की दुनिया के ऊपर बहुत गहरा और टिकाऊ असर पड़ा।

ईसा फ़िलिस्तीन के रहने वाले थे। वे एक यहूदी घराने में पैदा हुए थे। ईसाई धर्म शुरू में यहूदी धर्म की ही एक शाख था। यहूदी क़ौम एशिया की एक पुरानी क़ौम है। यहूदियों के धर्म, उनके समाज और उनके राज काज का सारा इतिहास एशिया के एक दूसरे के बाद ज़्यादह फैले हुए और ज़्यादह

* S. A. C. in Encyclopedia Brittanica, Vol. II, P 363.

महान आन्दोलनों के साथ गहरा सम्बन्ध रखता है और एशिया के ज्यादह बड़े इतिहास का सिर्फ़ एक हिस्सा या अध्याय है।

ईसा के कम से कम ढाई तीन हज़ार साल पहले से लेकर दुनिया के धर्म सिखाने, समाज को सुधारने और दुनिया की कलचर को ऊँचा ले जाने की ग़रज़ से इस तरह की बहुत सी लगातार लहरों का पता चलता है जो चीन, हिन्दुस्तान और ईरान से उठकर इराक़, पच्छिम एशिया और मिस्र तक चलती रहीं और जो बीच में फ़िलिस्तीन के लोगों के रहन सहन, उनके चलन और उनके ख़यालों को भी रंग रूप देती रहीं।

मिस्र भी एक बहुत पुराना देश है। हिसाब यानी अंकगणित और ज्योमेट्री यानी रेखागणित जैसी विद्याएं, इमारत बनाने की कला, पुली, घिरनी और लिवर (Liver) का काम में लाना, तरह तरह की दस्तकारियां, यहां तक कि काग़ज़ और स्याही का बनाना और इस्तेमाल करना मिस्र ही ने यूनान को और यूनान ने सारे यूरोप को सिखलाया। शुरू ही से मिस्र की कलचर का असर भी फ़िलिस्तीन पर बराबर पड़ता रहा। इन सब लहरों और फ़िलिस्तीन पर उनके असर का ज़िक्र लेखक की दूसरी किताबों में किया गया है।

ईसा के ज़माने में यहूदियों की हालत

यहूदियों की ज़िन्दगी, उनके राजकाज, उनके समाज उनके रहन सहन, उनके धर्म का पूरा पूरा हाल एक अलग किताब में दिया जा चुका है। यहूदियों की हालत उस वक़्त ख़ासी नाज़ुक

थी। राज के मामले में वे दूसरों के ग़ुलाम थे और उस ग़ुलामी से छुटकारे की कोई उम्मीद दिखाई न देती थी। पढ़े लिखे यहूदियों का यक़ीन ईरान और यूनान की ऊंची ऊंची किताबों को पढ़ने और वहां के विद्वानों से मिलने की वजह से अपने पुराने धर्म की रस्मों पर से हटता जा रहा था। आम जनता भद्दे से भद्दे वहमों और झूठे विश्वासों में डूबी हुई थी। छुआछूत और खान पान के भेदों में उस ज़माने के यहूदी आजकल के हिन्दुओं को भी मात करते थे। कोई इख़्लाक़ी बुराई या बदचलनी उनमें उतना बड़ा पाप न समझी जाती थी जितना उनके देवता "याहवे" की सेवा या पूजा में किसी छोटी से छोटी रस्म का भी छूट जाना। खेतों की फ़सल का होना इस बात पर माना जाता था कि मन्दिर में पूजा की सब रस्में ठीक पूरी की गईं या नहीं। जादू टोने, गण्डे तावीज़ का ख़ूब रिवाज था। सनीचर उनके धर्म का ख़ास पाक दिन था, इसलिए सनीचर को आग जलाने के लिए लकड़ियां जमा करना इतना बड़ा पाप था कि उसकी सज़ा मौत थी। दूसरी तरफ़ रोज़ सैकड़ों जानवरों को काट काट कर हवन कुण्ड में उनकी आहुति देना धर्म का एक ज़रूरी हिस्सा था। पुरोहितों का ज़ोर, उनका संगठन, उनकी धन दौलत, उनकी आराम तलबी, उनकी बदचलनी और उनका ढोंग हद को पहुँचे हुए थे।

इस पर भी यहूदियों को यक़ीन था और बार बार यक़ीन दिलाया जाता था कि यहूदी ही ईश्वर की सब से प्यारी, सब से

बड़ी चढ़ी और सब से पाक क़ौम है अकेला यहूदी धर्म ही सच्चा धर्म है और राज के मामले में कभी न कभी कोई न कोई नबी, पैग़म्बर या महापुरुष पैदा होकर यहूदियों को विधर्मी ईरानवालों, मिस्रवालों या रोमवालों की हुकूमत से आज़ाद करेगा, दुनिया में उन्हें सब से ऊँचा बनावेगा, और सारे संसार के लोगों को यहूदी धर्म के झण्डे के नीचे लाकर खड़ा करेगा और उस वक्त चारों तरफ़ के देशों से लोग नज़रें, चढ़ावे और सामान ले लेकर यरुसलम के यहूदी मन्दिर में दर्शन और पूजा के लिये जमा हुआ करेंगे। यहूदियों को यह भी यक़ीन था कि बाक़ी दुनिया से अपनी अलहदगी को बनाए रख कर ही वे उस दिन को नज़दीक ला सकते हैं।

दूसरे देशों की लहरें : (१) चीन में लाओत्ज़े

थोड़ा पीछे जाकर अब एशिया के दूसरे मुल्कों की उन ख़ास ख़ास धार्मिक और समाजी लहरों पर भी एक नज़र डालना ज़रूरी है, जो फ़िलिस्तीन पर अपना असर डाले बिना न रह सकती थीं और जिन्होंने यहूदियों के अन्दर कई सुधार की कोशिशों को जन्म दिया और आगे चलकर जिहोंने ईसाई धर्म को क़ायम करने में हिस्सा लिया।

ईसा से ६०४ साल पहले चीन में मशहूर महात्मा लाओत्ज़े (Lao-tze) का जन्म हुआ। इसके सदियों पहले से चीन में दर्शन शास्त्र, फ़लसफ़े हिक्मत और रूहानियत का ज़ोर था। बहुत से ऊँचे दरजे के हकीम और दार्शनिक पैदा हो चुके थे।

सोचने समझने वाले लोगों में इस तरह की बातों पर काफ़ी बहसें होती रहती थीं। लाओत्ज़े एक सच्चे सन्त और बहुत ऊँचे दरजे के हकीम यानी दार्शनिक थे। उनके उपदेश उनकी मशहूर किताब 'ताओ-ति-किङ्ग' (Tao-ti-king) में दिये हुये हैं। क़रीब क़रीब उन्हीं के शब्दों में उन उपदेशों का निचोड़ यह है—

"इस बाहर की दुनिया में जो कुछ दिखाई देता है इस सब के पीछे इसे चलाने वाली एक ताक़त है जो सब जगह मौजूद है, उसका न कोई शुरू है न आख़ीर, उसका कोई रंग रूप नहीं, वह व्यक्तित्व यानी शख़्सीयत से परे है, उसमें ख़ुदी या आपा है। वह एक उसूल के मातहत, एक क़ुदरती यानी स्वाभाविक ढंग से सब जानदारों के ज़्यादह से ज़्यादह भले के लिये लगातार काम करती रहती है। इस ताक़त का नाम 'ताओ' है। इस 'ताओ' से 'यिन' और 'याङ्ग' यानी पुरुष और प्रकृति या नर और मादा दो तत्त्व पैदा हुए, जिनसे सारी दुनिया की रचना हुई। ताओ के मातहत और उसके हुकुम से दुनिया में जितनी बड़ी बड़ी चीज़ें निकलतीं, बढ़ती और काम करती हैं, उनमें से कोई एक शब्द भी मुँह से नहीं निकालतीं, किसी को अपने किये का न दावा है और न घमण्ड, न कोई किसी चीज़ को अपनी समझती है। उनके सब काम सीधे, सरल और क़ुदरती हैं। इसी तरह आदमी को चाहिये कि अपना सब काम ख़ुदी को अलग रखकर एक सरल स्वाभाविक और क़ुदरती ढङ्ग से करे। उसके किसी भी काम में ख़ुदी या अहंकार न हो, न घमंड हो, न अपने पराये, मेरी तेरी का

फ़रक़ हो। आदमी को फिर से "एक छोटा बालक" बनकर ख़ुद अपने ऊपर, अपने नफ़्स के ऊपर क़ाबू हासिल करना चाहिये। इस तरह चलकर आदमी दुनिया में अपने कर्तव्य यानी फ़र्ज़ को पूरा कर सकेगा, और अपनी शुरू की शान्ति, सरलता, भोलेपन और सुख को फिर से हासिल कर लेगा। यही आदमी का 'ताओ' यानी धर्म मार्ग या मज़हब है। सारे समाज को सुन्दर और सुखी बनाने का भी यही तरीक़ा है कि समाज की बाग डोर समाज की हुकूमत, देश का राज इस तरह के सोच समझ कर चलने वाले नेक दिल सन्तों के हाथों में हो जो इसी ख़याल को सामने रखकर अपने कर्तव्य को पूरा करें जिससे लोगों के दिल ख़्वाहिशों और कामनाओं के जंजाल से आज़ाद रहें, उनके पेट भरे रहें, उनकी ज़रूरतें कम हों और उनकी हड्डियां मज़बूत हों। यह समाज का 'ताओ' है।"

अपने चलन को नेक और पाक और मन को शान्त रखने पर लाओत्ज़े बहुत ज़ोर देते थे। वह कहते थे कि इन दो बातों से ही आदमी अपने आप सीधे रास्ते पर आ जाता है। दीनता और इनकसार के वह बड़े क़ायल थे। तीन गुणों को वह सब से बढ़कर मानते थे—(१) सब पर दया करना, (२) कम ख़र्च करना और (३) दूसरों से ऊपर चढ़कर बैठने की चाह न करना। एक जगह वह लिखते हैं—

"ताओ का रास्ता यह है कि आदमी काम करने में अपनी किसी निजी ख़्वाहिश को बीच में न आने दे, बिना घबराहट या बेचैनी के एक क़ुदरती ढंग से सब काम करे, खाए लेकिन स्वाद का पता न

हो, बड़े कहलाने वालों को छोटा और छोटों को बड़ा समझे और जो कोई उसके साथ बुराई करे उसको बुराई का बदला भलाई से दे।"

लाओत्ज़े ईश्वर अल्लाह को सारी दुनिया का चलाने वाला और 'ताओ' में 'ताओ' के ज़रिये 'ताओ' से ही क़ायम यानी जिसमें कभी कोई तब्दीली नहीं होती ख़ुद अपनी ही क़ुदरत में उसी क़ुदरत से क़ायम मानते थे। वह प्राणायाम, (हब्सेदम), ध्यान (ज़िक्र), समाधि (तग़रीक़) और रोज़े (व्रत) रखने को अच्छा मानते थे। लेकिन उनकी किताबों में कहीं किसी रूढ़ि पूजा, किसी तरह के रीति रिवाज पर ज़ोर या किसी वहम या अंधी मानता की गन्ध तक नहीं है।*

धरती से मिलकर रहने को यानी खेती करने और किसान की ज़िन्दगी बसर करने को और उसके सीधे सादे सुखों को वह आदमी के लिये सब से अच्छा समझते थे। राज काज में वह ऐसी हुकूमत के ख़िलाफ़ थे जिससे सब ताक़त एक के हाथों में आ जावे। आम जनता को वह ज़्यादह से ज़्यादह आज़ादी देने के तरफ़दार थे। वह चाहते थे कि देश का हर गांव अपने भीतर के शासन में पूरी तरह आज़ाद हो, जहाँ तक हो सके अपना सब इन्तज़ाम ख़ुद करे, और सब गांव मिलकर एक दूसरे के साथ प्रेम से रहें। हर गांव एक छोटा सा आज़ाद राज हो। लाओत्ज़े हर तरह के क़ानूनी और दूसरे ज़बरदस्ती के बन्धनों

* J. Le, A. N. J. W. in Encyclopedia Brittanica, Vol.13.

के ख़िलाफ़ थे। फ़ौज रखने को वह बहुत बुरा मानते थे और आदमी आदमी के आपसी व्यवहार में अहिंसा के उसूल पर अमल चाहते थे।

लाओत्ज़े एक तरह की मुक्ति या निजात में भी यक़ीन रखते थे। वह मानते थे कि अपने अन्दर से हर तरह की ख़ुदी और अहंकार को मिटा कर आदमी ध्यान यानी ज़िक्र के ज़रिये अनन्त ईश्वर में लीन होकर निजात हासिल कर सकता है। वह यह भी मानते थे कि प्राणायाम (हब्सेदम) से आदमी की उमर बेहद बढ़ सकती है। कहा जाता है कि लाओत्ज़े ख़ुद १६० वर्ष तक जिये। लेकिन उन्होंने कोई अलग धर्म नहीं चलाया। उनके कुछ सदियों बाद उनके उसूल, 'ताओ धर्म' के नाम से, चीन में एक अलग धर्म बन गये। ईरान, इराक़, शाम और यूनान तक एक बार लाओत्ज़े के विचार ख़ूब फैले और उन्होंने चारों तरफ़ अपना असर डाला। कुछ लोगों ने दूसरी सदी ईसवी में लाओत्ज़े के उसूलों पर चीन में एक अलग छोटा सा आज़ाद प्रजातन्त्र राज भी क़ायम कर लिया। आज तक करोड़ों चीनी अपने देश के महापुरुषों में लाओत्ज़े को ऊँची से ऊँची जगह देते हैं।

दूसरे देशों की लहरें : (२) चीन में कुंग-फ़ू-त्ज़े

सन् ५५१ ई० पू० में चीन के अन्दर एक दूसरे महात्मा कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े (Kung Fu-tze or Confucious) का जन्म हुआ।

आज तक चीनियों के सोच विचार और उनकी ज़िन्दगी पर जितना टिकाऊ, सुन्दर और अच्छा असर लाओत्ज़े और कुङ्ग-फू-त्ज़े का पड़ा है उतना किसी तीसरे महा पुरुष का नहीं पड़ा। महात्मा बुद्ध और उनके क़ीमती उपदेशों का असर भी इन दोनों चीनी महात्माओं के असर से उतर कर ही मालूम होता है।

लाओत्ज़े जब बूढ़े हो गए थे तो नौजवान कुङ्ग-फू-त्ज़े के साथ उनकी कई बार भेंट हुई। कुङ्ग-फू-त्ज़े को फ़लसफ़े या दर्शन शास्त्र से ज़्यादह प्रेम न था। वह सिर्फ़ सदाचार यानी सचाई और नेकी पर ज़ोर देते थे और इसको ही धर्म मानते थे। उनका ख़ास उपदेश यह था—

"समाज को यानी सब लोगों को मिला कर संभाले रखना ही ईश्वर अल्लाह के हुकुम को मानना है। यही ईश्वर का हुकुम है। समाज पांच ख़ास रिश्तों पर क़ायम है। १-राजा और प्रजा का रिश्ता, २-ख़ाविन्द और बीवी का रिश्ता, ३-बाप और बेटे का रिश्ता, ४-बड़े भाई और छोटे भाई का रिश्ता और ५-दोस्त और दोस्त का रिश्ता। पहले चार में एक का काम शासन करना और दूसरे का काम हुकुम मानना है। लेकिन यह शासन न्याय और धर्म को निगाह में रखकर और दूसरे की भलाई की नज़र से ही होना चाहिये। दूसरी तरफ़ से हुकुम मानना भी न्याय और धर्म को सामने रखकर और सच्चे दिल के साथ होना चाहिये। दोस्तों में दोनों की कोशिश हमेशा यही होनी चाहिये कि एक दूसरे को ज़्यादह नेक बनावें।"

कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े का ख़ास उसूल यह है कि हर आदमी की अन्तरात्मा, उसकी ज़मीर यानी उसका अन्दर का असली स्वभाव पूरी तरह नेकी ही की तरफ़ जाता है, इसलिये हर आदमी अपने अन्दर से ही अपना रास्ता बताने वाला ढूंढ़ सकता है। जहाँ तक पता चलता है कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े दुनिया में पहला आदमी था जिसने आपसी व्यवहार के इस सुनहरे उसूल को दुनिया के सामने रखा—"जो बात तुम अपने साथ किया जाना पसन्द नहीं करते वह कभी किसी दूसरे के साथ भी न करो।" चीनी क़ौम हमेशा से मछली और चिड़ियां मारती और खाती रही है। लेकिन लिखा है कि कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े ने सारी उमर न कभी डाल पर बैठी हुई किसी चिड़िया को मारा और न मछली पकड़ने के लिये जाल डाला।

कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े कहता है—"आदमी की आत्मा ईश्वर परमात्मा का ही एक हिस्सा है। इसलिये बेरोक टोक अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ पर चलना ही ईश्वर अल्लाह का हुकुम मानना है।" एक बार उससे पूछा गया समझदारी क्या है? उसने जवाब दिया—"पूरे दिल के साथ सब लोगों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में अपने को लगाए रखना, और देवताओं और पितरों की मन में इज़्ज़त करते हुए उनसे अलग और बेलाग रहना इसी का नाम समझदारी हो सकता है।"

फिर पूछा गया देवताओं और पितरों की सेवा कैसे की जावे? जवाब मिला "जब तक तुम आदमियों की सेवा पूरी

नहीं कर सकते, देवों और पितरों की सेवा कैसे कर सकते हो ?"

पूछा गया मौत क्या है ? जवाब मिला—"जब तक तुम यह नहीं जानते ज़िन्दगी क्या है, तुम मौत को कैसे जान सकते हो ?"

कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े कहता था—"मैंने कोई नई सच्चाई नहीं गढ़ी, मैं सिर्फ़ पुरानी सच्चाइयों की तरफ़ फिर से तुम्हारा ध्यान दिला रहा हूँ।"

कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े ईश्वर अल्लाह को मानता था, लेकिन मरते वक़्त भी उसने किसी तरह की दुआ प्रार्थना नहीं की और न चेहरे पर उस वक़्त किसी तरह का शक या डर दिखाई दिया। चीनी जनता को आज तक कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े की सैकड़ों कहावतें उसी तरह याद हैं जिस तरह बहुत से हिन्दुस्तानियों को कबीर की। और उनके जीवन पर उन कहावतों का बहुत ही अच्छा असर पड़ता रहा है।

लाओत्ज़े की तरह कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े का असर भी कम से कम यूनान तक पहुँचा। कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े और यूनान का मशहूर फ़िलासफ़र पिथागोर (पाइथेगोरस) दोनों का एक ही ज़माना था। पिथागोर ने मिस्र का और एशिया के बहुत से देशों का सफ़र किया था। दर्शन शास्त्र यानी फ़िलासफ़ी पर पिथागोर की एक मशहूर किताब "दी एलीमेण्ट्स आफ़ नम्बर्स ऐण्ड दी एलीमेण्ट्स आफ़ रिआलिटी" के कई हिस्से ऐसे हैं कि

जिनका एक एक शब्द पुरानी चीनी किताब 'ची-किंग' से मिलता है। चीनी किताब 'ची-किंग' ईसा से तीन हज़ार साल पहले की लिखी है। कुङ्ग-फू-त्ज़े उस किताब को सब किताबों से ज़्यादा प्यार करता था। कुङ्ग-फू-त्ज़े ने ही उस इतनी पुरानी चीनी किताब की तरफ़ पिथागोर का ध्यान दिलाया और उसमें उसका प्रेम पैदा कराया।

दूसरे देशों की लहरें : (३) हिन्दुस्तान में बुद्ध

हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास की तारीखें अभी तक ठीक ठीक तय नहीं हैं। महात्मा बुद्ध का ज़माना आम तौर पर चीनी महात्मा लाओत्ज़े का ज़माना और उनका जन्म ६२३ ई० पू० यानी लाओत्ज़े के जन्म से १६ साल पहले का माना जाता है। कुछ विद्वानों की राय है कि बुद्ध का ज़माना इससे भी एक हज़ार साल या कुछ और पहले का था। जो हो, लेकिन जिस तेज़ी के साथ बौद्ध धर्म दक्खिनी एशिया, पूर्वी एशिया और एशिया के बीच के हिस्से को जीतकर शान्ति के साथ पच्छिम की तरफ़ बढ़कर एक बार सारे रोमी साम्राज्य में फैल गया, उस तेज़ी के साथ और उतनी दूर तक दुनिया के किसी दूसरे धर्म के इस तरह फैलने की मिसाल नहीं मिलती। हिन्दुस्तान, चीन और जापान के बीच में उन दिनों काफ़ी आना जाना था। इसलिये यह नामुमकिन है कि हिन्दुस्तानी बौद्ध उपदेशकों के चीन पहुँचने से सदियों पहले महात्मा बुद्ध ही के ज़माने में उनके उपदेशों की ख़बर चीन तक न पहुंची

हो। थोड़े दिनों के अन्दर लाओ-त्ज़े और कुङ्ग फू-त्ज़ के उपदेश और उसूल भी बौद्ध धर्म के विचारों, उसूलों और रीति रिवाजों में रंग गए। ये तीनों धर्म एक दूसरे में इतने ज्यादह मिल जुल गए कि आज तक हर चीनी अपने को बौद्ध धर्म और ताओ धर्म दोनों का मानने वाला और कुङ्ग-फू-त्ज़ का चेला, तीनों एक साथ समझता और कहता है।

महात्मा बुद्ध से सदियों पहले वैदिक धर्म में उपनिषद लिखे जा चुके थे। उपनिषद दुनिया को बता चुके थे कि सब देवी देवता एक ईश्वर अल्लाह ही के अलग अलग गुनों के फ़रज़ी रूप हैं। ईश्वर एक है, वही सब के घट में मौजूद है, और मुक्ति या निजात का रास्ता किसी तरह के यज्ञ हवन, कर्म काण्ड या रीति रिवाज को पूरा करना नहीं है। अपनी इन्द्रियों को, अपने नफ़्स को जीतकर ख़ुदी, अहंकार और दुई को मिटाकर सब के अन्दर एक ही आत्मा को देखते हुए, सब का भला चाहते हुए, सब को अपनी तरह समझते हुए आख़ीर में उस घट घट व्यापी बेअन्त ईश्वर में अपनी आत्मा को लीन यानी फ़ना कर देना ही मुक्ति है। महात्मा बुद्ध के वक़्त तक हिन्दुस्तानी फिर सचाई को भूल चुके थे। जाति पाँति, ऊँच नीच, छुआ छूत, बेमाइने रस्म रिवाज और जानवरों की बलि का ज़ोर था और सचाई, नेकी और ईमानदारी को इनके मुक़ाबले में कम ज़रूरी समझा जाता था। महात्मा बुद्ध ने उपदेश दिया—

सच्चे सुख, ज्ञान और निर्वाण या निजात का रास्ता न इन्द्रियों या ख़्वाहिशों के पीछे दौड़ना है और न शरीर को फ़िज़ूल सुखाना या तकलीफ़ देना है। सच्चा रास्ता इन दोनों के बीच से है। इस रास्ते पर चलने के लिये नीचे लिखी सच्चाइयों को समझ लेना चाहिये। पैदा होना, बूढ़ा होना, बीमार होना, मरना, प्यारी चीज़ों से बिछुड़ना और जो चीज़ें हमें प्यारी नहीं लगतीं उनका मिलना, इन सब से आदमी को दुख होता है। इस दुख की जड़ तृष्णा यानी ख़्वाहिश है। इसी से जीव (रूह) को फिर फिर जन्म लेना पड़ता है। इसमें भोगों की ख़्वाहिश, स्वर्ग (जन्नत) की ख़्वाहिश और ख़ुद अपनी हत्या कर दुनिया से गुम हो जाने की ख़्वाहिश, इन तीन ख़्वाहिशों में सब ख़्वाहिशें आ जाती हैं। ये ख़्वाहिशें जीव के लिये रोग की तरह हैं, या ये जीव के रोगी होजाने की वजह से पैदा होती हैं। तृष्णा या ख़्वाहिश को पूरी तरह जीत लेना सब दुखों से बच जाना है। तृष्णा को जीतने का तरीक़ा है अष्टांगक मार्ग पर चलना यानी आठ बातों का करना। यही असली धर्म है। वे आठ बातें ये हैं—

(१) सम्यक दृष्टि (ठीक समझ)—यानी दुख, उसके असली सबब और उसे दूर करने के तरीक़ों को ठीक ठीक समझ लेना।

(२) सम्यक सङ्कल्प (ठीक इरादा)—यानी इस बात का इरादा करना कि मैं अपने सब काम अनासक्त भाव से यानी मोह, लाग या ख़ुदी को अलग रखकर किसी की हिंसा न करते

हुए यानी किसी को ईज़ा न पहुँचाते हुए और किसी से बैर न रखते हुए करूँगा।

(३) सम्यक वचन (ठीक बात)--यानी झूठ न बोलना, किसी की बुराई न करना, कड़वी बात न कहना और फ़िज़ूल न बोलना।

(४) सम्यक कर्मन्त (ठीक काम) -यानी किसी जानदार को न मारना, बिना दी हुई चीज़ न लेना और बदचलनी न करना।

(५) सम्यक आजीव (ठीक रोज़ी)—यानी रोज़ी कमाने के बेइन्साफ़ी के तरीक़ों को छोड़कर सच्ची और ईमानदारी की कमाई से गुज़ारा करना।

(६) सम्यक व्यायाम (ठीक मेहनत)—यानी बुरे कामों के न करने और अच्छे कामों के करने का फ़ैसला करना, मेहनत करना, अभ्यास (मश्क़) करना और उसके लिये मन को क़ाबू में करना।

(७) सम्यक स्मृति (ठीक याद)—यानी इस बात को ध्यान में रखना कि पाख़ाना, पेशाब, बुढ़ापा और मौत शरीर के धर्म हैं, इसलिये मोह और घबराहट को छोड़कर, लेकिन हमेशा मेहनत करते हुये दुनिया में रहना।

और (८) सम्यक समाधि—यानी ध्यान करना और चित्त या मन को एकाग्र और यकसू करना जिसमें पहले वितर्क (ग़ौर), विचार (ख़याल), प्रीति (प्रेम), सुख और एकाग्रता (यकसू होना),

ये पांचों बातें रहती हैं। धीरे धीरे वितर्क और विचार गुम हो जाता है। फिर प्रीति भी गुम हो जाती है, आख़ीर में सुख भी जाता रहता है और सिर्फ़ उपेक्षा (बेताल्लुक़ी) और एकाग्रता रह जाती है।

यह अष्टांगिक मार्ग ही महात्मा बुद्ध के उपदेशों का निचोड़ है।

इस तरह के सवालों का जवाब देने से बुद्ध आम तौर पर इनकार करते थे, जैसे—(१) दुनिया का कोई शुरू था या नहीं और इसका कोई अन्त होगा या नहीं ? (२) दुनिया का कोई ओर छोर है या नहीं ? (३) जीव (रूह) और शरीर एक हैं या दो ? और (४) 'तथागत' यानी निजात पाए हुए जीव का मौत के बाद अलग वजूद बना रहता है या नहीं ?

सबके साथ अहिंसा (ग़ैर ईज़ा रसानी), अपने दुशमनों तक को माफ़ करना और सब की तरफ़ मित्र भाव रखना, सब का भला चाहना बौद्ध धर्म के ख़ास उसूल हैं। भलाई बुराई के इन उसूलों का किसी तरह के धार्मिक कर्म काण्ड या रीति रिवाज से कोई लेना देना नहीं है। काम करने में आदमी की नीयत ही धर्म अधर्म की कसौटी है। नीयत ही के मुताबिक़ सब को अपने अपने काम का नतीजा भोगना होगा। योग यानी सलूक के रास्ते में बुद्ध भगवान को यक़ीन था। बुद्ध के हुकुम मामूली गृहस्थों के लिये कुछ आसान थे और दूसरों को धर्म का उपदेश देने वाले त्यागी 'भिक्खुओं'

और 'भिक्खुनियों' के लिये ज्यादह कड़े थे। औरत और मर्द दोनों को वह मुक्ति का हक़दार मानते थे और दोनों ही को घर बार से अलग रहकर बिना शादी किये दूसरों को धर्म का उपदेश देने का भी हक़दार मानते थे। वेदों या किसी भी किताब को वह ईश्वर की बनाई और हमेशा के लिये प्रमाण (सनद) न मानते थे। मूर्ति पूजा, देवी देवताओं की पूजा, जात पाँत, छुआ छूत और ऊँच नीच के वह बिल्कुल ख़िलाफ़ थे। वह सब आदमियों की बराबरी में यक़ीन रखते थे। उनका कहना था कि आदमी अपने जीवन के बारे में कम से कम इतनी बात समझ ले कि इस दुनिया की ज़िन्दगी और उसके सुखों का बहुत ज्यादह मूल्य न करे और इस तरह से ज़िन्दगी बसर करे कि जिसमें बहुत से बहुत आदमियों को ज्यादह से ज्यादह सुख और कम से कम दुख मिले।* वह कहते थे कि हर तरह की दुई, दुनिया के सुखों की ख़्वाहिश और अहंकार इन तीनों से पूरी तरह ऊपर उठकर ही सच्ची शान्ति और असूली ज्ञान हासिल हो सकता है। बुद्ध इसी को निर्वाण कहते थे। बुद्ध के उपदेशों का निचोड़ उनकी यही गाथा है—

सब्ब पापस्स अकरनम्
कुसलस्स उपसम्पदा
सचित्त परियोदपनम्
एतम् बुद्धानुसासनम्

---

* Alcott's Catachism, p. 30.

यानी कोई पाप न करना, सब की भलाई करना और अपने दिल को साफ़ रखना यही बुद्धों की आज्ञा है। सब बौद्ध गृहस्थों को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, सदाचार और मादक द्रव्यों का उपयोग न करना, यानी किसी को तकलीफ़ न देना, सच बोलना, चोरी न करना, बदचलनी न करना और नशे की कोई चीज़ काम में न लाना इन पाँच बातों की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। भिक्खुओं और भिक्खुनियों को यानी उन मर्दों और औरतों को जो दूसरों को धर्म का उपदेश देना चाहते थे इन बातों के अलावा शादी न करने और ज़्यादह कड़ी ज़िन्दगी गुज़ारने का भी वादा करना पड़ता था। धम्मपद में लिखा है—

"अगर कोई आदमी नासमझी से मेरी बुराई करे तो मैं बदले में अपने बेरोक प्रेम से उसका बचाव ही करूँगा। जितना जितना ही वह मेरी ज़्यादह बुराई करेगा उतना ही मैं उसकी ज़्यादह भलाई करूंगा।"

चीन से यूनान तक एक सी धार्मिक लहरें

हिन्दुस्तान, चीन और ईरान के ये सब और इसी तरह के दूसरे ख़याल उस वक़्त पूरब से पच्छिम तक तमाम सभ्य दुनिया में फैलते जा रहे थे।

"सबब चाहे कुछ भी रहा हो आठवीं सदी ई० पू० और उसके बाद की सदियों में चीन से लेकर यूनान तक एक सी ऊँची से ऊँची धार्मिक लहरें उठ रही थीं और ठीक उसी तरह एक साथ उभरती

थीं और एक साथ दबती थीं जिस तरह ज़मीन की सतह के नीचे बार बार एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक वे ज़बरदस्त लहरें उठतीं और दबती रहती हैं जो ज़मीन के अन्दर की चीज़ों को बनाती और बदलती रहती हैं* ।"

इस मेल जोल की एक बड़ी सुन्दर मिसाल पुराने यूनान का 'औरफ़ी' मत है। यह मत ईसा से ५०० वर्ष पहले यूनान में मौजूद था और कहा जाता है मिस्र से यूनान आया था। औरफ़ियस नाम का एक फ़र्ज़ी आदमी, जिसका तारीख़ में पता नहीं चलता, इस मत का चलाने वाला माना जाता है। यूनानियों का कहना है कि औरफ़ियस एक बहुत बड़ा बहादुर योद्धा था। इसके साथ ही साथ वह इतना अच्छा गवइया भी था कि जानवर, दरख़्त और नदियां तक उसका गाना सुनकर मस्त हो जाते थे। वह हकीम, फ़िलासफ़र और योगी भी था। ज्ञान की खोज में उसने बहुत से देशों की यात्रा की। इस धरती पर तहज़ीब या सभ्यता का वह एक बहुत बड़ा फैलाने वाला था। पेशे से वह गड़रिया था और भेड़ें चराया करता था। कहा जाता है उसने बहुत सी किताबें लिखीं। औरफ़ियस के बारे में बहुत सी फ़र्ज़ी कहानियां और गीत दो हज़ार साल से ऊपर तक यूरोप के सब देशों और सब ज़बानों में कहे और गाए जाते रहे, और बहुत से आज तक सुनने में आते हैं।

'औरफ़ी' मत का उसूल है कि हर आदमी के अन्दर स्वार्थ

* Encyclopedia Brittanica Vol. XI, p. 371.

और परमार्थ, ख़ुदी और ख़ुदा, नेकी और बदी दोनों पहलू मौजूद हैं। आदमी का फ़र्ज़ बदी के पहलू को दबाना और नेकी को बढ़ाना है। इसके लिये उसे एक दूसरे के बाद बहुत से जन्म लेने पड़ते हैं। इन जन्मों के बाद धीरे धीरे जब जीव पूरी तरह पाक साफ़ हो जाता है तब इस पैदा होने और मरने यानी आवागमन के चक्कर से छूट जाता है। इस सफ़ाई के लिये कुछ उसूलों पर अमल करना ज़रूरी है जिनमें एक ख़ास यह है कि किसी तरह का भी मांस न खाया जाय। इस मत के मानने वाले सफ़ेद कपड़े पहनते थे और पाकीज़गी और आत्मसंयम (नफ़्सकुशी) पर ज़ोर देते थे। इनके बहुत से गुरु या पीर होते थे जो अपने चेलों को कई तरह की योग की तालीम देते थे। कहते हैं पिथागोर, अफ़लातून, सुक़रात जैसों के ख़यालों और उसूलों पर औरफ़ी मत का बहुत असर पड़ा।

औरफ़ी मत के उसूलों और उनकी किताबों पर ज़रथुस्त्री धर्म, बौद्ध धर्म वेदान्त और भगवद् गीता इन सब की गहरी छाप नज़र आती है। ख़ुद औरफ़ियस की फ़र्ज़ी ज़िन्दगी कृष्ण जी के चरित्र की यूनानी या मिस्री नक़ल दिखाई देती है।

इसी तरह के और भी बहुत से मज़हबी, फ़लसफ़ियाना और तरह तरह के ख़याल उन दिनों चीन और हिन्दुस्तान से बराबर यूनान और मिस्र तक पहुँच रहे थे। बौद्ध धर्म के सब से बड़े प्रचारक सम्राट अशोक के शिला लेखों (कुतबों) से पता चलता है कि कम से कम पांच यूनानी बादशाहों के साथ अशोक की

दोस्ती थी और पाटलीपुत्र (पटना) और यूनान के दरबारों में चिट्ठी पत्री, विद्वानों, पंडितों, और धर्म के उपदेशकों का आना जाना बराबर जारी था। उन पांच बादशाहों के नाम ये थे—शाम यानी फ़िलिस्तीन का यूनानी बादशाह अन्तिश्रोकस (Antiochus of Syria), मिस्र का बादशाह टालेमी (Ptolemy), मैसिडोन का बादशाह अन्तिगोनस (Antigonus), साइरीन का बादशाह मारगस (Morgos of Cyrane) और एपिरो का बादशाह सिकन्दर (Alexander of Epiros)। अशोक के भेजे हुए बौद्ध धर्म प्रचारक उन दिनों पच्छिमी एशिया को पार कर मिस्र से कम से कम एक हज़ार मील आगे उत्तर अफ़रीका के साइरीज़ नगर तक फैले हुए थे।

हज़रत ईसा के जन्म से पहले सैकड़ों बौद्ध भिक्खु अपने ऊँचे चलन से उन लोगों के दिलों और दिमाग़ों पर भी असर डालते हुए, जो उनकी बोली तक न समझते थे, सारे इराक़, शाम और फ़िलिस्तीन में फैले हुए थे। इराक़ में उन दिनों बौद्ध मज़हब का बहुत बड़ा ज़ोर था। 'साबी' मज़हब क़ायम करने वाला चैल्डिया का मशहूर सन्त बौदास्प बोधिसत्त्व ही का अवतार माना जाता था। साबी शब्द के माइने पानी में डुबकी लगाना है, क्यों कि दीक्षा से यानी उस मज़हब में दाख़िल होने से पहले नहाना ज़रूरी था। शाम का सारा इलाक़ा उन दिनों बौद्ध मठों से भरा हुआ था। कई नए नए मज़हब उन तमाम देशों में इस तरह के क़ायम हो रहे थे जो बौद्ध उसूलों में रंग

हुए थे। इस तरह के कई मत इराक़ में भी मौजूद थे।

उस ज़माने की तारीख़ से पता चलता है कि पच्छिमी एशिया, यूनान, मिस्र और इथियोपिया के पहाड़ों और जंगलों में उन दिनों हज़ारों जैन, बौद्ध और दूसरे सन्त महात्मा हिन्दुस्तान से जा जाकर जगह जगह बसे हुए थे। ये लोग वहां बिलकुल साधुओं की तरह रहते थे और अपने त्याग और अपनी विद्या के लिए मशहूर थे।

इन त्यागी महात्माओं की छोटी छोटी बस्तियां बौद्ध धर्म के भी प्रचार से पहले तमाम पच्छिमी दुनिया में फैली हुई थीं। ख़ासकर मिस्र उन दिनों पच्छिमी दुनिया का सब से बड़ा मानसिक और सांस्कृतिक, दिमाग़ी और कल्चरल संगम बना हुआ था।

यहूदियों पर असर

फ़िलिस्तीन का इलाक़ा इस बड़े इलाक़े का सिर्फ़ एक बीच का छोटा सा हिस्सा था।

"फ़िलिस्तीन में जब जब कोई दिमाग़ी इनक़लाब या कोई ज़बरदस्त मज़हबी सुधार हुआ तब तब वह इनक़लाब या सुधार उस ज़्यादह बड़े इनक़लाब का एक हिस्सा था जिसके दायरे में फ़िलिस्तीन भी शामिल था। आठवीं सदी ईसा पूर्व और उसके बाद की सदियों में दक्खिन-पच्छिमी एशिया के अन्दर जो ज़बरदस्त तब्दीलियाँ हुईं उनके साथ साथ फ़िलिस्तीन में एक नए ढंग के मज़हबी ख़यालों ने घर किया, जिससे अपने अपने गिरोहों के अलग अलग मज़हबों और जड़-प्रकृति यानी क़ुदरती ताक़तों की पूजा के रिवाज टूटने लगे।"*

दुनियाँ उन दिनों तेज़ी के साथ बदल रही थी। पुराने साम्राज्य उलट रहे थे, क़ौमें, एक के बाद एक, मिट रही थीं और नई नई सल्तनतें बन रही थीं। समझदार यहूदियों के दिलों पर भी इस सब का गहरा असर पड़ा। एक वाहिद अल्लाह, एक

---

*History of Religion by G. F. Moore, Vol. I, pp. VI-IX.

परमेश्वर का जितना अच्छा, जितना सुन्दर, जितना ऊँचा, जितना व्यापक या आलमगीर और सब को पसन्द आने वाला बयान उन दिनों की एक यहूदी किताब इसायाह नबी की किताब* में मिलता है इतना और किसी यहूदी किताब में नहीं मिलता। दुनिया के भले के लिये अनन्त कष्ट सहने वाले एक भक्त, यानी 'याहवे' (ख़ुदा) के एक सच्चे 'सेवक' का भी एक बड़ा सुन्दर बयान इस किताब में मौजूद है।

बुद्ध और महावीर, लाओत्ज़े और कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े के ख़याल छन छन कर फ़िलिस्तीन तक पहुँच रहे थे। एक नई तरह का साहित्य (अदब) यहूदियों में तय्यार हुआ जिसे इबरानी ज़बान में "हुकमह" [Hokmah—Wisdom] यानी हिकमत या ज्ञान कहा जाता है। इसमें बताया गया कि सारी दुनिया एक ईश्वरीय नियम (क़ानूने इलाही) के मुताबिक़ चलती है। इसमें जड़ और चेतन, (माद्दा और रूह) दोनों शामिल हैं। कर्म काण्ड आदि रस्मरिवाजों से सदाचार यानी नेक काम बेहतर हैं। ज़ुल्म से धन कमाकर अमीर बनने की निस्बत ग़रीब रहना अच्छा है। जो आदमी ग़रीबों पर दया करता है ईश्वर उसका भला करता है। आदमी की असली दौलत 'याहवे' (ईश्वर) का आशीर्वाद है। हर आदमी जैसा करता है वैसा ही भरता है। किसी को दूसरे के बुरे कामों की सज़ा भोगनी नहीं पड़ती। आदमी को इन्साफ़ और समझ के साथ दूसरों की तरफ़ अपने

* Is. XL Seq.

फ़र्ज़ को समझना और उसे पूरा करना चाहिये। दुनिया से अलग रह कर अपनी आत्मा को शुद्ध करने की कोशिश करना उस वक़्त तक फ़िज़ूल है जब तक आदमी दूसरों की तरफ़ सच्चाई, इन्साफ़ और ईमानदारी के साथ अपने फ़र्ज़ को पूरा न करे।

ये सब ख़याल उस ज़माने के चीनी और हिन्दुस्तानी ख़यालों से मिलते हुए थे। हमारे कर्मयोग के उसूल पर भी इनमें काफ़ी ज़ोर था।

दूसरे यहूदी विद्वानों का कहना था कि आख़ीर में आदमी आदमी और क़ौम क़ौम के बीच ज़रूर इन्साफ़ होगा। ईश्वर के इन्साफ़ करने के ढङ्ग अनोखे लेकिन पक्के हैं। आदमियों को वह अपने काम के लिये उसी तरह ज़रिया या बहाना बना लेता है जिस तरह यहूदियों के भले के लिये उसने ईरान के सम्राट कुरु को बना लिया था।* आत्मा या रूह इस जन्म के पहले से मौजूद थी। वह ईश्वर से निकली है और आख़ीर में लौटकर उसी में लीन हो जायगी।

फ़िलिस्तीन के अन्दर और आस पास मिस्र तक में उन दिनों त्यागी यहूदियों की एक ख़ास जमात थी जो 'एस्सिनी' (Essenes) कहलाती थी। इस सुन्दर और अजीब जमात और उसके मठों और ख़ानक़ाहों का ज़्यादह हाल लेखक की एक दूसरी किताब में दिया गया है। ये लोग यहूदी धर्म के

* Is. XLIV, 24.

सब छोटे छोटे रीति रिवाजों से ऊपर उठ चुके थे। इनकी तादाद कई हज़ार थी। ये आबादी से दूर जंगलों या पहाड़ों में कुटी बनाकर रहते थे। बौद्ध साधुओं की तरह अहिंसा को अपना खास धर्म मानते थे। गोश्त खाने से परहेज़ करते थे। बड़ी सख़्त और संयमी यानी नफ़्सकुशी की ज़िन्दगी बसर करते थे। पैसे या धन को छूने तक से इनकार करते थे। आस पास के रोगियों और कमज़ोरों की सेवा को अपनी रोज़मर्रा की साधना का ज़रूरी हिस्सा समझते थे। पुनर्जन्म (तनासुख़) और कर्मों के फल में यक़ीन रखते थे। प्रेम और सेवा को पूजा पाठ से बढ़कर मानते थे। लकीर की फ़क़ीरी और खास कर जानवरों की बलि को मना करते थे। अपनी बस्ती के गुज़ारे के लिये अपने हाथ पैर की मेहनत से खाने और पहनने का सामान पैदा करते थे। जो कुछ सामान होता था सब बस्ती की मिल्कीयत मानी जाती थी, और इस सब से बचा हुआ वक़्त रोज़ ध्यान और योगाभ्यास (सलूक) में खर्च करते थे। मिस्र में ये ही तपस्वी 'थेरापूते' [Thera peutae] कहलाते थे। थेरापूते यूनानी शब्द है जिसके माइने वही हैं जो ऐस्सिनी के हैं यानी "मौनी" या "वानप्रस्थ"।

हज़रत ईसा से पहले सुधार की कोशिशें

ऐस्सिनी ख़ुद एक नेक और ऊँची ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश करते थे, लेकिन वे आम लोगों में प्रचार के लिये न जाते

थे। दूसरी तरफ़ इसी चारों तरफ़ फैली हुई दिमाग़ी और रूहानी रोशनी में आम यहूदी जनता के बिगड़े हुए आचार विचार और रीति रिवाजों को सुधारने की भी कोशिशें जगह जगह शुरू हो गई थीं। हज़रत ईसा से पहले की सदियों में और ठीक जिस सदी में वे पैदा हुए उसमें फ़िलिस्तीन और मिस्र में दोनों जगह जहाँ जहाँ यहूदियों की आबादी थी, बहुत से नेक दिल रिफारमर इस तरह के पैदा हुए जिन्होंने घूम घूम कर नए ख़यालों का प्रचार किया।

इन यहूदी रिफ़ारमरों में सब से पहला नाम हज़रत ईसा से दो या ढाई सौ साल पहले महात्मा ईसा ही के हमनाम सिरा या सिराक़ के बेटे ईसू [Jesus son of Sirach] का मिलता है। सिरा के बेटे ईसू ने अपने ज़माने के बहुत से ग़लत मज़हबी रिवाजों और मानताओं पर खुले हमले किये। 'याहवे यानी ईश्वर को उसने बजाय यहूदियों के ख़ास और अलग ईश्वर के "एक, अकेला, सब के घट घट में रमा हुआ, जिसका न कोई शुरू न आख़ीर और सब जानदारों पर दया करने वाला" बताया, सदाचार यानी नेक कामों पर ज़ोर दिया; "सब का भला चाहना और सब का भला करना" ही असली धर्म बताया; आदमी को "काम करने में आज़ाद" क़रार दिया, यहूदी मन्दिरों के पुरोहितों और पुजारियों की हालत को देखते हुए उसने कहा कि "ईश्वर ने किसी आदमी को पाप करने की इजाज़त नहीं दे रखी है।"

उसके उपदेशों के कुछ नमूने ये हैं—

"जो आदमी दूसरे आदमी पर ग़ुस्सा करता है वह ईश्वर से कैसे उम्मीद कर सकता है कि ईश्वर उसे चंगा कर देगा।"

"वक्त निकल जाने से पहले दूसरों की तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करो और ईश्वर अपने वक्त पर तुम्हें उसका नतीजा देगा।"

"मज़दूर के लिये अपना काम ठीक ठीक करना ही ईश्वर की पूजा करना है।"

"ख़रीदने और बेचने के बीच में पाप घुस जाता है।"

"दूसरों के साथ न्याय करना और सदाचार यानी नेकी की ज़िन्दगी बसर करना यही सच्चा धर्म है।"

"दूसरों के साथ नेकी करना ही ईश्वर की पूजा करना है।"

ईसाई धर्म के क़ायम करने वाले हज़रत ईसा के उपदेश सिरा के बेटे ईसू के उपदेशों से इतने मिलते हुए हैं कि कोई कोई विद्वान इस ईसू को हज़रत ईसा का "सच्चा पूर्वज यानी मूरिस"* कहते हैं।

ईसू के बाद शायद उससे भी बढ़कर दूसरा नाम हज़रत ईसा के ठीक पहले एक और यहूदी महात्मा हिल्लेल [Hillel] (७० ई० पू० से १० ई० तक) का आता है। हिल्लेल इराक़ का रहने वाला था। वह पहला यहूदी था जिसने चीनी महात्मा कुङ्ग-फू-त्ज़े के इस क़ीमती उपदेश "जो बात तुम अपने साथ

* A true ancestor of Jesus"—Life of Jesus by Renan.

किया जाना पसन्द नहीं करते, वह कभी किसी दूसरे के साथ न करो," को थोड़ा बढ़ाकर उपदेश दिया—"जो बात अगर तुम्हारे साथ की जावे तो तुम्हें अच्छी न लगे वह तुम भी अपने पड़ौसी के साथ कभी न करो। यही पूरा धर्म है और जो कुछ भी है सब इसी का बखान और फैलाव है।" हिल्लेल अकसर अपने उपदेशों में ऊपर के ही इन शब्दों को दोहराया करता था। हिल्लेल के कुछ और ज़्यादा मशहूर वचन ये हैं—

"मेरी दीनता यानी (इनकसार) में ही मेरा बड़प्पन है"।*

"अगर मैं ख़ुद अपना धर्म पूरा न करूंगा तो मेरा धर्म दूसरा कौन पूरा करेगा?"

"मेरा काम अगर सिर्फ़ अपनी ही फ़िक्र करना है तो मैं किस काम का हूँ?"

"अब नहीं तो कब?"

"अपने को औरों (संघ) से अलग मत करो।"

"अपने पड़ौसी पर उस वक्त तक राय क़ायम मत करो जब तक कि तुम ख़ुद उसकी सी हालत में न हो।"

"जो अपने लिये नाम करना चाहता है वह अपना नाम खो देता है, जो अपने ज्ञान को बढ़ाता नहीं वह उसे घटाता है, जो नई बात सीखने से इन्कार करता है वह मरने के क़ाबिल है, जो अपने लिए नतीजा या इनाम हासिल करने के लिये काम करता है वह नष्ट हो

* My abasement is my exaltation.

चुका, जिसे इस सच्चे धर्म का उपदेश मिल गया उसे परलोक (दूसरी दुनिया) की ज़िन्दगी मिल गयी।"

हिल्लेल पुरोहितों के और उन सब लोगों के ख़िलाफ़ था जो यहूदी धर्म के पुराने रीति रिवाजों पर ज़ोर देते थे और उन्हें क़ायम रखना चाहते थे। वह बड़े दिल का और आज़ाद ख़याल था। उसका दिल सब आदमियों के लिये प्रेम से भरा हुआ था। वह बहुत दीन, अपने को सब से छोटा समझने वाला, धीर, नरम स्वभाव और नेक चलन था। उसकी मौत के सैकड़ों वर्ष बाद तक लोग बड़ी भक्ति के साथ उसे बड़ा महात्मा, सच्चे धर्म का उपदेशक और दया, धीरज और दीनता यानी इनकसार का अवतार मानते रहे।

हिल्लेल ज़िन्दगी भर बड़ा ग़रीब रहा, और इस ग़रीबी को अपने लिए बड़े फ़ख़्र यानी गर्व की चीज़ समझता रहा। हिल्लेल और हज़रत ईसा दोनों की ज़िन्दगी काफ़ी मिलती जुलती थी। हज़रत ईसा के उपदेशों में हिल्लेल के बहुत से फ़िक़रे और वचन ज्यों के त्यों मिलते हैं। इसी लिए बहुत से इतिहास लिखने वाले हिल्लेल को हज़रत ईसा का "सच्चा गुरू" मानते हैं।

"अपनी ग़रीबी के सबब और उस दीनता के सबब जिस दीनता के साथ उसने उस ग़रीबी को अपनाया, अपने प्रेमी और मीठे स्वभाव के सबब, और पुरोहितों और पाखंडियों के ख़िलाफ़

प्रचार करने के सबब हिल्लेल को हज़रत ईसा का सच्चा गुरू कहा जा सकता है।"*

मिस्र में भी हज़रत ईसा के क़रीब दो सौ साल पहले से बहुत से विद्वान यहूदी चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और यूनान के ऊँचे से ऊँचे ख़यालों को मथकर उनकी मदद से पुराने यहूदी धर्म को सुधारने की कोशिशों में लगे हुए थे। इनमें सब से बड़ा नाम सिकन्दरिया के उस यहूदी सन्त-फ़िलासफ़र फ़ाइलो (Philo) का है, जो हज़रत ईसा के ज़माने में मौजूद था। सिकन्दरिया का शहर कई सदी पहले से हिन्दुस्तानी और यूनानी ख़यालों का एक ख़ास संगम रह चुका था। फ़ाइलो ख़ुद हिन्दुस्तानी दर्शन शास्त्र और यूनानी फ़लसफ़े दोनों का पूरा पंडित था। उसने बहुत सी किताबें लिखीं। उसके ख़याल बहुत गहरे और ऊँचे थे। उसका दिल बड़ा था। फ़ाइलो की बहुत सी किताबें ख़ासकर एक किताब जिसका नाम "सोच विचार या ध्यान की ज़िन्दगी" [Of the Contemplative Life] है। सदाचार (इख़लाक़) के ऊँचे और व्यापक (आलमगीर) उसूलों और गहरे अध्यात्म या रूहानियत के

---

*"By his poverty so meekly endured, by the sweetness of his character, by his opposition to priests and hypocrites Hillel was the true master of Jesus"—Pirke Aboth, Ch. I, II, Talmud etc., Renan—Life of Jesus, p. 56.

लिये शौक़ और इज्ज़त से पढ़ी जाती है। हज़रत ईसा को सूली दिये जाने के वक्त फ़ाइलो ६२ वर्ष का था और इसके कम से कम दस साल बाद तक ज़िन्दा रहा। फ़ाइलो के ख़याल हज़रत ईसा के उपदेशों से इतने मिलते हैं कि उसे "ईसा का यक़ीनी बड़ा भाई"* कहा जाता है।

ईश्वर के बारे में फ़ाइलो का ख़याल अपने ज़माने के आम यहूदी ख़याल से बहुत ऊँचा था। वह कहता था कि—

"ईश्वर यहूदी क़ौम या किसी दूसरी क़ौम का ख़ास ईश्वर नहीं है, वह सब का एक बराबर ईश्वर है। कोई क़ौम उसे ख़ासतौर पर दूसरी क़ौमों से ज़्यादह प्यारी नहीं है। वह सब का बाप है। सब उसके बच्चे हैं। वह हर वक्त हमारे साथ है। वह हर एक के दिल के अन्दर मौजूद है। हमें उस पर पूरा भरोसा रखना चाहिये। उससे प्रेम करना चाहिये। सब आदमी भाई भाई हैं, इसलिये सब को एक दूसरे के साथ प्रेम और दया का व्यवहार करना चाहिये।"

इन सब चीज़ों पर हज़रत ईसा ने बाद में जो ख़याल ज़ाहिर किये और जिन शब्दों में किये वह जगह जगह फ़ाइलो के ख़यालों और शब्दों की साफ़ साफ़ गूँज मालूम होते हैं। हज़रत ईसा ईश्वर को आम तौर पर 'अब्बा' यानी बाप कहकर पुकारा करते थे। फ़ाइलो भी ईश्वर को 'अब्बा' कहता था। 'अब्बा' इबरानी ज़बान का शब्द है। फ़ाइलो सब पुरानी

*Philo is truely the elder brother of Jesus—Renan's Life of Jesus.

यहूदी रूढ़ियों, यज्ञों, जानवरों की कुरबानियों और दूसरे रीति रिवाजों को ग़लत बताता था और सिर्फ़ पाक ज़िन्दगी बसर करने और दूसरों के साथ नेकी पर ज़ोर देता था। फ़ाइलो का ज़्यादह हाल और उसके विचार यहूदी धर्म के सिलसिले में एक दूसरी किताब में दिये जा चुके हैं।

इसी तरह के और कई छोटे बड़े यहूदी सुधारक ईसवी सम्वत् के शुरू में या उसके आस पास अपने धर्म के सुधार की कोशिशों में लगे हुए थे। इनमें शेमाइया और अबतालियन दोनों उपदेश दे चुके थे कि धर्म अधर्म की कसौटी पुरानी किताबें नहीं हैं, बल्कि आदमी की अपनी समझ और उसकी अन्तरात्मा या ज़मीर है। रब्बी योहानन (Johanan) का उपदेश था कि धार्मिक किताबों को पढ़ने की निस्बत दूसरों पर दया करने में ज़्यादह फ़ायदा है। इसी तरह और भी थे। थोड़े बहुत भक्त या क़द्र करने वाले भी इनमें से हर एक के आस पास जमा हो जाते थे। यरुसलम का शहर और उसके आस पास का इलाक़ा पुरानी कट्टरता का गढ़ था। लेकिन समरिया, गैलिली जैसे उत्तरी इलाक़ों के लोग कुछ ज़्यादह आज़ाद और दिल वाले थे। ख़ास कर गैलिली का इलाक़ा यूनानी संस्कृति, यूनानी कलचर, के उन दस मशहूर शहरों से मिला हुआ था जो "दस पुरियों" (Decapolis) के नाम से मशहूर थे। इसी लिए यह इलाक़ा क़ौमों की गैलिली' (Galilee of the nations) कहलाता था। कट्टर यहूदी इलाक़े वाले गैलिली वालों को धर्म भ्रष्ट और अपने

मुक़ाबले में नीच मानते थे। हज़रत ईसा के जन्म से पहले गैलिली में और और ज़्यादह उत्तर में दमश्क नगर में कई छोटी मोटी तहरीकें यहूदी धर्म को सुधारने की चल चुकी थीं।

पर इनमें से किसी सुधारक या किसी तहरीक को भी जनता में ज़्यादह कामयाबी न मिल सकी। कट्टर पुरोहितों के हाथों में ताक़त थी। सुधारकों की आवाज़ बीच में ही बन्द कर दी जाती थी। वह न दूर तक पहुँच पाती थी और न देर तक सुनाई दे सकती थी। हिल्लेल के ज़माने के एक विद्वान पुरोहित शम्माइ (Shammai) ने हिल्लेल की बातों को काटा। शम्माइ ने प्रचार किया कि तमाम पुराने रीति रिवाज और कर्म काण्ड ही यहूदी धर्म का सब से ज़रूरी हिस्सा हैं। हिल्लेल की आवाज़ शम्माइ की आवाज़ के सामने दब गई। शम्माइ का ही उन दिनों फ़िलिस्तीन में बोल बाला था। तालमुद में लिखा है कि सिरा के बेटे ईसू जैसे महात्माओं की किताबों का मन्दिरों या सिनेगॉग में पढ़ा जाना जुर्म क़रार दे दिया गया। इस जुर्म की सज़ा थी यहूदी क़ौम से जाति बाहर कर दिया जाना और मुजरिम की तमाम जायदाद का ज़ब्त कर लिया जाना। इसी तरह का सलूक दूसरे रिफ़ारमरों की किताबों और उनके उपदेशों के साथ किया गया।

रोम के खि़लाफ बग़ावतें

फ़िलिस्तीन पर रोम वालों की हुकूमत थी। एक तरफ़ फ़िलिस्तीन वाले अपने सुधारकों के साथ यह सलूक कर रहे थे और दूसरी तरफ़ रोम वालों के ज़ुल्मों के खि़लाफ़ बग़ावतों की आग देश में बराबर सुलग रही थी और कभी कभी भड़कती रहती थी। एक अजीब बात यह थी कि इन पोलिटिकल बग़ावतों का मज़हबी कट्टरता के साथ एक अजीब मेल पैदा हो गया था। जितना जितना यहूदियों पर विदेशी रोम वालों के ज़ुल्म बढ़ते थे उतना उतना ही विदेशी चीज़ों और विदेशी ख़यालों से नफ़रत लोगों में बढ़ती जाती थी, चाहे वे ख़याल रोम से आए हों, चाहे यूनान से, चाहे चीन से और चाहे हिन्दुस्तान से। और ज़्यादहतर कट्टर ख़यालों के लोग ही धर्म युद्ध या एक तरह का जेहाद मान कर विदेशी हुकूमत के खि़लाफ़ बग़ावतें करते थे। बहुत से बाग़ी लीडर ईमानदारी के साथ पुराने ख़याल के थे। यह भी मुमकिन है कि उनमें से कुछ लोगों में इस कट्टरता को भड़का कर उससे अपने पोलिटिकल आन्दोलन को मज़बूत करना चाहते हों। दूसरी क़ौम वालों से नफ़रत और

हिंसा यानी मार काट को वे अपने लिये फ़ायदे की चीज़ें समझते थे।

बहुत से जोशीले यहूदी रोमी झण्डे को गिरा देना या फाड़ डालना या रोमी देवताओं की उन मूर्तियों या रोमी धर्म की उन अलामतों को तोड़ डालना जो रोमियों ने यहूदियों की मरज़ी के ख़िलाफ़ ज़बरदस्ती जगह जगह पब्लिक जगहों में गाड़ रखे थे, अपना मज़हबी फ़र्ज़ समझते थे। राज की तरफ़ से इस तरह के जुर्मों की सज़ा मौत थी और सैकड़ों यहूदी इन छोटी छोटी बातों के लिये धर्म के नाम पर हंसते हंसते मौत का सामना करते थे।

यहूदा में सारीफ़िया (Sariphea) का बेटा यूदा (Judas) और मारगालौथ (Margaloth) का बेटा मत्थिया (Motthias) दो विद्वान यहूदी धर्म गुरु थे, जिन्होंने विधर्मियों को देश से निकालने के लिये एक बहुत बड़ा दल खड़ा किया। यूदा और मत्थिया दोनों को सूली पर चढ़ा दिया गया। इस पर भी बरसों बाद तक उनका दल अपना काम करता रहा। इसी तरह की तहरीकें समरिया इलाक़े में भी जारी थीं। ईसवी सम्वत् के शुरू में ये तहरीकें पूरे ज़ोर पर थीं। जोशीले लोगों का एक दल का दल देश भर में पैदा हो गया था जो स्वदेशी या विदेशी, रोमी या यहूदी हर ऐसे आदमी को मार डालना अपना धर्म समझता था जो उनकी राय में पुराने यहूदी धर्म के रिवाजों को न मानता हो। ये लोग 'केनाईम'

(Kenaim) और 'सिक़ारी' (Sicarii) कहलाते थे। केनाईम का मतलब 'मज़हबी जोश वाले' और सिक़ारी के माइने 'मज़हब के लिये हत्या करने वाले' हैं।

गैलिली इलाक़े में एक नई तहरीक चली। यहूदी प्रजा के ऊपर टैक्सों का बोझ बहुत बढ़ गया था। ये टैक्स मर्दुम शुमारी के हिसाब से लगाए जाते थे। सन् ६ ईसवी में रोमी गवरनर क्विरिनस (Quirinus) ने नई मर्दुम शुमारी का हुक्म दिया। उत्तर के प्रान्तों में बग़ावत खड़ी हो गयी।

टाइबीरिआ (Tiberias) झील के पूरब के किनारे पर गमाला (Gamala) नगर के रहने वाले एक आदमी यूदा (Judas the Ganlomita) और उसके साथी सादुक़ (Sadoc) ने मिलकर ऐलान किया कि सिवाय एक 'याहवे' (ईश्वर) के किसी दूसरे को अपना 'मालिक' या राजा मानना पाप है, रोम वालों के लगाये सब टैक्स धर्म के ख़िलाफ़ हैं, उनका देना पाप है, और आज़ादी ज़िन्दगी से ज़्यादा क़ीमती है। यह यूदा अपने ज़माने का मशहूर विद्वान था। उसका बड़ा असर था। एक बहुत बड़ा दल उसके साथ खड़ा होगया। लोगों को उम्मीद और जोश दिलाने के लिये उसने यह भी प्रचार किया कि यहूदी किताबों में लिखा है कि बहुत जल्दी एक बहुत बड़ा आदमी, एक 'मसीहा' फ़िलिस्तीन में पैदा होगा जो विधर्मी ज़ालिमों का नाश करके यहूदियों को आज़ाद करेगा और सारी दुनिया में फिर से धर्म राज क़ायम करेगा। यूदा को सूली दे

दी गई, लेकिन उसकी चलाई हुई जमात क़ायम रही। उसके ख़याल फैलते और अपना काम करते रहे। गैलिली इलाक़े की हालत उस वक्त एक धधकती हुई भट्टी की सी थी जिसमें चारों तरफ़ बदअमनी फैल रही थी और लोगों के दिलों में बड़ी बड़ी उम्मीदें बंध रही थीं।

मसीहा की पेशीनगोइयाँ

एक ख़ास तरह के महापुरुषों, ईश्वर के भेजे हुए दूतों या अवतारों के ज़रिये इस दुनिया में अन्याय के नाश और न्याय के फिर से क़ायम होने की उम्मीद बहुत पुराने ज़माने से चली आती है। हिन्दुस्तान में धर्म की ग्लानि यानी गिरावट और अधर्म के अभ्युत्थान यानी बढ़ने के वक़्त साधुओं की मदद, दुष्टों के विनाश और धर्म के फिर से क़ायम करने के लिये जब तब ईश्वर के अवतार लेने का ख़याल भगवद् गीता से हज़ारों साल पहले से मौजूद था। यही यक़ीन और यही ख़याल तरह तरह की शक्लों में उस ज़माने की तमाम दुनिया में फैला हुआ था।

ईरान की मज़हबी किताबों में लिखा था कि* हर हज़ार साल के बाद एक बड़ा महापुरुष पैदा होता है जो अपने ज़माने में अधर्म का नाश कर धर्म को फिर से क़ायम करता है और

* Zend Avasta I, 2nd part, p. 46; Jamesp Naruah quoted in Avasta by Spiegal i, p. 34; yacna XII, 24, Minokhired i, 263—see also Vendidad XIX, 8, 19.

हज़ार साल तक उसका दौर क़ायम रहता है। इसी तरह के बहुत से दौरों के बाद आख़ीर में अहुरमज़्द (ईश्वर) का राज या राम राज ज़मीन पर क़ायम होगा, उस वक़्त सारी ज़मीन फ़िरदौस (स्वर्ग) हो जायगी। फ़िरदौस शब्द ईरानी पिरदौस का अरबी रूप है। पिरदौस (संस्कृत-प्रदेश्य) शहर के बाहर के हिस्से को कहते थे। उससे ईरान में बादशाहों के बाग़ों को 'पिर दौस' कहने लगे, क्यों कि वे शहर से बाहर होते थे। होते होते पिरदौस, फ़िरदौस या अंगरेज़ी पैरेडाइज़, स्वर्ग यानी बहिश्त का नाम पड़ गया। अहुरमज़्द के राज में सारी ज़मीन एक सर सब्ज़ मैदान की तरह होगी। एक राज, एक बोली, एक क़ानून होगा और सब सुखी होंगे। लेकिन उस सुनहरे ज़माने के आने से ठीक पहले दुनिया के ऊपर एक बार बड़ी बड़ी आफ़तें आवेंगी, दहक यानी शैतान (संस्कृत-दहक) जो इस वक़्त आसमान में ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ है अपनी ज़ंजीरों को तोड़कर दुनिया के ऊपर आ टूटेगा और तरह तरह की मुसीबतें पैदा करेगा। उन मुसीबतों के वक़्त दो पैग़म्बर पैदा होंगे जो सारी इन्सानी क़ौम को तसल्ली देंगे और आने वाले सतयुग या सुनहरे ज़माने के लिये सब को तय्यार करेंगे।

इस तरह के ख़याल हिन्दुस्तान और ईरान से होते हुए उन दिनों सारी पच्छिमी दुनिया में फैल रहे थे। रोम में इन्हीं के सहारे बहुत से बड़े बड़े काव्य (नज़में) रचे गए, जिनमें दुनिया के इतिहास को अलग अलग युगों या टुकड़ों में बाँटा गया, हर

युग का एक अलग देवता माना गया, और आखीर में दुनिया का नए सिरे से इंतज़ाम किये जाने और नए सुनहरे ज़माने के आने की तरह तरह से ख़बर दी गई।*

यहूदी धर्म की किताबों में † इसी ख़बर की यहूदी शकल दिखाई देती है। सदियों से यहूदी इस तरह के स्वप्न देख रहे थे। उनके बहुत से 'नबी' अपनी क़ौम की आए दिन की मुसीबतों और ज़िल्लतों में बार बार इस तरह की पेशीनगोइयाँ करते रहते थे। ईसवी सम्वत् के शुरू के दिनों में ये उम्मीदें इतने ज़ोरों पर थीं कि लोग सुबह शाम उनके पूरा होने का इंतज़ार कर रहे थे।

जस तरह की पेशीनगोइयाँ जिन शब्दों में ईरानी किताबों में पहले से मौजूद थीं ठीक उसी तरह की उन्हीं शब्दों में यहूदी नबियों होशिया (Hosea) और इसाइयाह (Isaiah) के लेखों में मिलती हैं। ईरान से ही यह ख़याल फ़िलिस्तीन तक पहुँचा। लेकिन 'मसीहा' शब्द इबरानी है। इसका मतलब है 'जिस पर तेल मला गया हो।' पुराने मिस्र के मन्दिरों में रोज़ पुरोहित लोग मूर्ति को नमस्कार करके, स्नान कराकर, रंगीन कपड़े पहनाकर उस पर तेल लगाते थे। यही रिवाज इराक़ में भी

* Virg., Ecl. 1V; Servius, at V. 4 of this Eclogue ; V. 10.

† The Book of Daniel & the Book of Enoch etc

था। दोनों जगह इस तेल की मालिश की ख़ास महिमा थी। मिस्र इराक़ और शाम तीनों में बड़ा पुरोहित हर नए बादशाह के राज तिलक के वक्त उसके सर पर तेल लगाता था। इन सब देशों में बादशाह को भी देवता का ख़ास पुरोहित या पुजारी समझा जाता था। यहूदी अपने ख़ास ख़ास बादशाहों को यहां तक कि ईरानी सम्राट कुरु (Cyrus) को जिसने यहूदियों के साथ बड़े प्रेम का व्यवहार किया "याह्वे (ईश्वर) का मसीहा" कहकर पुकारते थे।* 'माशीआह' या मसीहा का यह ख़याल नए विचारों के साथ बड़ी अच्छी तरह मिल गया। उस ज़माने की तमाम यहूदी धर्म की किताबों में यह ख़याल फैला हुआ था और हज़रत ईसा के जन्म से पहले नए माशीआह के आने की उम्मीद हज़ारों की ज़बान पर थी।

यरुसलम शहर के अन्दर यह उम्मीद लोगों को इतनी ज़बरदस्त थी कि हज़रत ईसा के बचपन के दिनों में बहुत से धर्मात्मा लोग रात दिन मन्दिर में रहकर व्रत और पूजा पाठ में अपना वक्त ख़र्च करते थे और प्रार्थना करते रहते थे कि हमारी मौत यहूदी क़ौम के मसीहा के पैदा होने के बाद एक बार उसके दर्शन कर लेने पर हो। इंजील में इस तरह के एक बूढ़े साधु सीमियन और एक बूढ़ी औरत अन्ना के नाम भी आते हैं।

दमश्क़ नगर में सुधारकों का एक गिरोह था जो बहुत से

* Isaiah, chapters 44 and 45.

पुराने रीति रिवाजों को ग़लत मानता था। नेकी यानी सदाचार पर ज़ोर देता था और यह प्रचार करता था कि जल्दी ही पहले एक नया धर्म गुरु पैदा होगा जो यहूदियों को सच्चे धर्म का उपदेश देगा और उसके बाद एक मसीहा पैदा होगा जो दाऊद की नसल से न होगा पर यहूदियों को आज़ाद करेगा। इस दूसरी पेशीनगोई का सबब शायद यह था कि यहूदा इलाक़े के कट्टर लोगों में नसल का ग़रूर भरा हुआ था और दूसरे प्रान्तों के समझदार लोग उस ग़रूर को थोथा समझते थे और उसे तोड़ना चाहते थे। दमश्क का यह गिरोह सचमुच दूसरे आज़ादी चाहने वाले यहूदियों से ज्यादह समझदार था।

महात्मा यहूना

इसी हवा में ईसा से ठीक पहले यहूदा प्रान्त के अन्दर यरुसलम से दक्खिन के पहाड़ी इलाक़े में एक महात्मा यहूना (John the Baptist) का जन्म हुआ। यहूना शुरू से ईश्वर भक्त और खोजी थे। अपने देश वालों के दुखों का असली सबब वह जानना चाहते थे। इस सच्चाई की खोज में वह बहुत दिनों इधर उधर घूमते रहे। उनके जन्म की जगह अरब के लम्बे चौड़े रेगिस्तान से सिर्फ़ चन्द घण्टे की दूरी पर थी, इसीलिए उन्हें रेगिस्तान से बड़ा प्रेम था।

यहूना को यहूदियों के तमाम पुराने नबियों में से एक इलियास (Elias) ख़ास तौर पर अच्छे या प्यारे मालूम हुए थे। इलियास सुनसान पहाड़ों की कन्दराओं में जंगली जानवरों के साथ रहा करते थे और सख़्त तपस्या की ज़िन्दगी बसर करते थे। अपने उपदेशों से यहूदी क़ौम को सचाई के रास्ते पर लाने की उन्होंने पूरी कोशिश की। बहुत से यहूदी इलियास को अमर समझते थे। कुछ का ख़याल था कि इलियास मर चुके लेकिन फिर जल्दी ही यहूदी क़ौम के छुटकारे और भले के लिये जन्म लेने वाले हैं।

यहूना को भी जंगल में अकेले रहने, सोचने विचारने और मनन करने, सख़्त ज़िन्दगी बसर करने और योग करने का शौक़ था। उनके जन्म स्थान के पास मुरदा सागर (डेडसी) के पूरब के किनारे पर ऐस्सिनी जमात के कई मठ थे। बहुत दिनों तक यहूना ऐस्सिनी साधुओं के साथ रहे और उनसे तालीम लेते रहे। उसके बाद उन्होंने बिलकुल अकेले रहना शुरू कर दिया।

"उनके चारों तरफ़ जंगल था। जंगल से उन्हें प्रेम था। वहाँ रहकर वह एक हिन्दुस्तानी योगी की तरह ज़िन्दगी बिताते थे। मृगछाला या ऊँट के बालों का कम्बल ओढ़कर रहते थे। बहुत पहले से उन्होंने मांस, शराब और और सब नशे की चीज़ों को छोड़ रखा था। उनका खाना सिर्फ़ जंगली दरख़्तों की फलियां और थोड़ा सा शहद था।

"होते होते कुछ चेले उनके आस पास रहने लगे। वे सब उन्हीं की तरह रहते थे और बहुत सख़्त ज़िन्दगी बिताते थे। बैरागी यहूना में अगर थोड़ी सी ख़ास बातें ऐसी दिखाई न देतीं, जिनसे ज़ाहिर होता था कि वह अपने से पहले के यहूदी नबियों जैसे ही एक नबी हैं, तो उन्हें देख कर हमें बिलकुल ऐसा मालूम होता कि हम हिन्दुस्तान में गङ्गा के किनारे खड़े हैं।"*

इसमें शक नहीं कि एस्सीनियों, यहूना और उस ज़माने के और बहुत से यहूदी गुरुओं के रहन सहन और आचार

*Life of Jesus by Renan, pp. 93-94.

विचार पर हिन्दुस्तान का काफ़ी असर था।*

थोड़े दिनों बाद यहूना ने उस जंगल से निकलकर और घूम घूमकर आम जनता को धर्म का उपदेश देना शुरू किया। अब तक उनके चेले सिर्फ़ त्यागी (तारिकुद्दुनिया) होते थे, जिन्हें वह आत्म संयम यानी नफ़्सकुशी और योग (सलूक) सिखाते थे। अब उन्होंने मामूली गृहस्थों को भी उन्हीं की ज़रूरतों के मुताबिक़ उपदेश देना और समझाना शुरू कर दिया।

सन् २८ ईसवी के क़रीब यहूना का नाम सारे फ़िलिस्तीन में फैल गया। यहूदा प्रान्त की कट्टर हवा में लोगों को उनके आज़ाद ख़याल ज़्यादह पसन्द न आ सके। वह यहूदा छोड़ कर उत्तर की तरफ़ समरिया प्रान्त में जार्डन नदी के किनारे जंगल में एक जगह जाकर रहने लगे। कभी कभी आस पास के इलाक़े में वह आते जाते भी थे। जो लोग उनकी बात मान लेते उन्हें वह पहले जार्डन नदी में नहलाते और फिर क़ायदे से दीक्षा यानी उपदेश देते थे। इस तरह के उपदेश से पहले नहाने का रिवाज भी इराक़ और शाम दोनों में हिन्दुस्तान ही के असर से हाल में ज़ोर पकड़ चुका था। ऐस्सिनी लोग भी नहाने पर बहुत ज़ोर देते थे। इसीलिये यहूना की दीक्षा 'यहूना के बपतिस्मे' के नाम से मशहूर है। 'बपतिस्मा' शब्द के माइने हैं 'पानी में डुबकी देना'। इसी से महात्मा यहूना का नाम 'बपतिस्मा देने वाला यहूना, (John the Baptist) पड़ गया।

---

*Ibid p, 99.

आम जनता के लिये महात्मा यहूना के उपदेशों का निचोड़ यह था—

"अपने अब तक के बुरे कामों को काटने और आगे को बुराई से बचने के लिये सच्चे दिल से पछतावा करना ज़रूरी है, और अब ऐसे ऐसे काम करो जिनसे मालूम हो कि तुम्हारा पछताना सच्चा है। इस बात का घमण्ड करना छोड़ दो कि हम हज़रत इबराहीम की औलाद हैं। जिस पेड़ पर अच्छे फल नहीं लगते वह चाहे कितना भी पुराना क्यों न हो काट डाला जाता है और आग जलाने के काम आता है।" लोगों ने पूछा हमारा धर्म क्या है? यहूना ने जवाब दिया—"जिसके पास दो कुरते हों वह अपना एक कुरता उसे दे दे जिसके पास एक भी नहीं है। जिसके पास रोटी है वह भी ऐसा ही करे।" रोम की तरफ़ से टैक्स जमा करने वाले सरकारी नौकरों को उन्होंने उपदेश दिया—"इन्साफ़ से जितना ठीक है उससे एक पैसा ज़्यादह किसी से मत लो। यही तुम्हारा धर्म है।" सिपाहियों को उन्होंने उपदेश दिया "किसी पर किसी तरह का ज़ुल्म न करो, किसी पर कोई झूठा इल्ज़ाम न लगाओ और अपनी तनख़्वाह में ही गुज़ारा करो, यही तुम्हारा धर्म है।"*

यहूदी किताबों में जो जगह जगह इस बात की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) आती थी कि एक न एक दिन सब अन्यायों और अन्याय करने वालों का ख़ात्मा होगा और सारी धरती

* Luke 1 & II.

पर फिर से ईश्वरीय राज (अल्लाह की हुकूमत) [Kingdom of God] क़ायम होगा, इस पेशीनगोई के बारे में महात्मा यहूना ने कहा कि—

"जिस 'ईश्वरीय राज' का यहूदी किताबों में वादा किया गया है वह तुम्हारे अन्दर है, बाहर नहीं। अपने अन्दर के पापों, जैसे ऊँच नीच और छूआ छूत के फ़रक़ों को छोड़ो। अपनी ज़िन्दगी और अपने दिलों को उसी तरह पाक करो जिस तरह इस नदी का पानी तुम्हारे बदन को पाक साफ़ करता है। सब के साथ प्रेम और न्याय से बरतो—इस बात को दिल में बैठालो। यही 'ईश्वरीय राज्य' क़ायम करना है। जब तक तुम इस तरह अपने अन्दर ईश्वरीय राज्य क़ायम न करोगे तब तक तुम्हें दुख भोगना ही पड़ेगा।"

यहूना के उपदेशों में पुरानी यहूदी किताबों के ऊँचे से ऊँचे ख़यालों के अलावा बुद्ध, लाओत्ज़े और कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े के विचारों की काफ़ी झलक दिखाई देती थी। यहूदी मन्दिरों के कर्म काण्ड और पूजा पाठ को वह निकम्मा और पुरोहितों को फ़िज़ूल बताते थे। इन्साफ़, नेकी या सदाचार और दिल की सफ़ाई को ही असली धर्म कहते थे, नेकी को मज़हबी रस्म रिवाजों की जगह देते थे और अपने अपने अलग अलग मजहबों के ही ठीक होने के घमण्ड को झूठा कहते थे। दिल की सफ़ाई के लिये वह उपवास यानी रोज़े रखने और ईश्वर प्रार्थना (दुआ) करने का उपदेश देते थे। वह इन्द्रिय संयम यानी नफ़्सकुशी पर ज़ोर देते थे। यहूना को ग़रीबों से बहुत ज्यादह प्रेम था। अपने अमीर चेलों

को वह उपदेश देते थे कि अपनी सारी दौलत ग़रीबों में बांट दो।

यहूना का नाम चारों तरफ़ फैलने लगा। उनका असर बढ़ने लगा। यहूदी, ग़ैर यहूदी, अमीर और ग़रीब, आम प्रजा और सरकारी नौकर, धर्मात्मा और पापी सब को वह एक सी प्रेम की निगाह से देखते थे, सब को अपने सुधार और तरक़्क़ी का रास्ता बताते थे और सब को एक बराबर मुक्ति (निजात) का यक़ीन दिलाते थे। सब तरह के लोग उनके पास आ आकर जमा होने लगे और नए धर्म की तालीम लेने लगे। बहुत से लोग उन्हें 'नबी' समझने लगे। बहुत से कहते थे कि 'इलियास' ने ही यहूना के रूप में फिर से जन्म लिया है। लेकिन कट्टर ख़याल के यहूदी पुरोहितों और फ़िलिस्तीन के कुछ सरकारी लोगों को यहूना का बढ़ता हुआ असर पसन्द न आ सका।

हज़रत ईसा का जन्म

इसी ज़माने में गैलिली प्रान्त के एक छोटे से पहाड़ी क़स्बे नाज़रथ में एक बहुत ग़रीब घर के अन्दर हज़रत ईसा का जन्म हुआ। ईसा का जन्म सन् १ ईसवी से तीन चार साल पहले का माना जाता है। आजकल का ईसवी सन् छठवीं सदी ईसवी में डायोनीसियस नाम के एक ईसाई महन्त ने शुरू किया था। आठवीं सदी ईसवी से यूरोप में उसका प्रचार शुरू हुआ। बाद में मालूम हुआ कि ग़लती से सन् १ ईसवी ईसा के जन्म से कम से कम तीन चार साल बाद रख लिया गया। आठवीं सदी ईसवी तक रोम का जूलियन सन् और कई एशियाई सन् यूरोप में चलते थे।

नाज़रथ की आबादी तीन चार हज़ार थी। छोटे छोटे पत्थर के घर, घरों के आगे पीछे अंगूर की टट्टियाँ और इञ्जीर के दरख़्त, सुन्दर आब हवा, चारों तरफ़ सब्ज़ी, उत्तर में सफ़ेद पहाड़ नाम का ऊँचा पहाड़। यरुसलम की कट्टर सनातनी हवा से काफ़ी दूर।

उन दिनों फ़िलिस्तान में आम तौर पर लड़कों का नाम ईसू होता था। यही इस बालक का नाम था। उनका पिता यूसुफ़ बढ़ई का काम करता था। अपने बाल बच्चों को पालने के लिये यूसुफ़ को सुबह से लेकर शाम तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।

माँ मरियम (मेरी) घर का सारा काम करती थी। दोनों वक्त रोटी पकाती, घर की सफ़ाई करती, गाँव के कुएं से पानी भर कर लाती, बच्चों की देख रेख करती और जो वक्त इन सब बातों से बचता उसमें सब घर वालों के कपड़ों के लिये बैठकर सूत कातती।

फ़िलिस्तीन का रहन सहन एशिया के दूसरों देशों के रहन सहन से मिलता हुआ था। दूसरे और ग़रीब कारीगरों के घरों की तरह यूसुफ़ का सारा घर एक कोठरी थी जिसमें सिर्फ़ सामने के दरवाज़े से रोशनी आ सकती थी। वही उसकी दूकान थी, वही काम करने की जगह और वही रसोई। उसी में वह और उसके बाल बच्चे रहते थे। उसी में सब खाते थे, उसी में पढ़ते और उसी में सोते थे। घर में न कोई मेज़ थी न कुरसी। दूसरे ग़रीब फ़िलिस्तीन वालों की तरह ये लोग खड़ाऊं या चप्पल पहनते, या नंगे पैर रहते थे। चप्पलें घर के बाहर उतार दी जाती थीं। घर के अन्दर फ़र्श पर बैठने के लिये चटाई के कुछ टुकड़े पड़े रहते थे, जिन पर लोग उसी तरह पालथी मारकर बैठते थे जैसे हिन्दुस्तान में। दीवाल में एक टांड़ होता था जिस पर पकाने और खाने के मिट्टी के बर्तन रहते थे। बिछौने रात को बिछा लिये जाते थे और दिन में लपेटकर उसी टांड़ पर रख दिये जाते थे। एक कोने में लकड़ी के एक रंगीन सन्दूक़ के अन्दर किताबें और ख़ास ख़ास चीज़ें रखी रहती थीं। खाने के लिये एक छोटी सी रंगीन लकड़ी की चौकी थी जिस पर खाना रखा जाता था। खाने में आम तौर पर चावल मांस और

तरकारियाँ होती थीं। दिया रखने की दीवट छत के बीच से लटकी रहती थी। यह दीवट ही कमरे की सब से सुन्दर चीज़ होती थी। दरवाज़े के पास पानी के लिये मिट्टी के बड़े बड़े लाल लाल घड़े रखे रहते थे। अमीरों के घर इससे कहीं बड़े और शानदार होते थे।

बालक ईसा का पहनावा था—नीचे एक छोटी सी धोती या तहबन्द, ऊपर सामने से खुला हुआ एक लम्बा लाल रंग का चोग़ा, जिसके दोनों पल्लों को एक दूसरे से मिलाए रखने के लिये एक कमरपट्टा बंधा रहता था।

पहले उसे मा बाप ने लिखना पढ़ना सिखाया और देश का जैसा रिवाज था यहूदी धर्म की किताबों से बहुत सी कहानियाँ सुनाईं। कुछ बड़ा हुआ तो गांव की यहूदी धर्मशाला (सिनेगॉग) की पाठशाला में भेजा गया। इन पाठशालाओं में ख़ास तालीम मज़हबी किताबों ही की दी जाती थी जिनके बहुत से हिस्से बच्चों को ज़बानी याद करा दिये जाते थे। ईसा अपनी माँ का जेठा बेटा था। पाठशाला से आने के बाद, जब माँ घर का काम करती तो ईसा अपने छोटे भाई बहनों को रखता और घर के कामों में माँ का हाथ बँटाता। बालक ईसा पहले ही से नरम दिल का और दयावान था। दूसरों की मदद करने के लिये वह सदा उतावला रहता। शुरू से ही उसे सोचने समझने की भी आदत थी। यहूदियों में जैसा रिवाज चला आता था ईसा का बचपन में ही ख़तना करा दिया गया था।

यरुसलम में पहली बार

यहूदी धर्म का सब से बड़ा मन्दिर यरुसलम में था। यरुसलम का शहर ईसा के गांव के क़रीब पचास मील दक्खिन में था। ईसा के बाप हर साल बसन्त के मौक़े पर और गांव वालों के साथ साथ यरुसलम की यात्रा को जाया करते थे। बालक ईसा के दिल में भी अपने मज़हब के उस पुराने और सब से बड़े तीर्थ स्थान को देखने की चाह बढ़ती गई। जब वह बारह वर्ष का हुआ उसके माँ बाप उसे अपने साथ यरुसलम ले गए। अरब की तरह फ़िलिस्तीन में भी गधे की सवारी का आम रिवाज था। वहां के गधे मज़बूत और सुन्दर होते हैं। लोग दूर दूर से ज़्यादहतर पैदल यरुसलम आते थे। लेकिन हर गिरोह के साथ कुछ गधे होते थे। जिन पर औरतें, बच्चे और कमज़ोर बारी बारी बैठ लेते थे।

कई दिन चलकर ये लोग यरुसलम पहुँचे। बालक ईसा ने जो कुछ वहां देखा उसका उस पर गहरा असर पड़ा। उसने कुछ अच्छी अच्छी चीजें भी देखीं। पर दूसरी तरफ़ बलि चढ़ाए जाने के लिये बिकते हुए हज़ारों जानवरों, चढ़ावे के लिये सिक्के और खेरजा. बेचने वालों और जानवरों की बड़ी बड़ी

क़ुरबानियां (यज्ञों) और हर तरह के पूजा पाठ को देखा। उसके छोटे से दिल में तरह तरह के शक पैदा होने लगे।

यरुसलम के मन्दिर में मज़हबी किताबों की तालीम का एक बहुत बड़ा मदरसा था, जो अपने ज़माने की एक युनिवर्सिटी कहला सकता था। बड़े बड़े आलिम पण्डित वहाँ दूर दूर से आने वाले यहूदी विद्यार्थियों को तालीम देते थे। ईसा के दिल में धर्म को जानने की लगन थी, उसका ध्यान इन पढ़ाने वालों की तरफ़ गया। उसके ग़रीब माँ बाप उसे यरुसलम में रखकर तालीम न दे सकते थे। लेकिन अब जब कभी उसके माँ बाप पूजा पाठ में लगे होते थे ईसा एक गुरू जी के सामने बैठकर उपदेश सुनता रहता था। कई दिन गुज़र गए। एक दिन उसके साथी अपने गांव वापस जाने के लिये तय्यार हो गए। वे सब चल भी दिये। ईसा उसी मदरसे में रुक गया और उपदेश सुनता रहा। कुछ दूर निकल जाने के बाद उसके माँ बाप ने देखा कि ईसा साथ में नहीं है। उन्होंने यरुसलस लौटकर बेटे को शहर में ढूँढ़ना शुरू किया। तीन दिन की तलाश के बाद उन्हें ईसा किसी मदरसे में एक गुरू जी के सामने ज़मीन पर बैठा हुआ दिखाई दिया। वह वहां उपदेश सुन रहा था और अपनी शंकाएं, अपने शक गुरू जी के सामने पेश कर रहा था। शुरू से ही बालक ईसा के दिल में सच्चाई को और धर्म को जानने की जो लगन थी उसका इससे ख़ासा पता चलता है। ईसा माँ बाप के साथ अपने गांव लौट आया।

सचाई की खोज

इसके बाद तीस वर्ष की उमर तक हज़रत ईसा की ज़िन्दगी का बहुत कम हाल मिलता है। इतना पता चलता है कि उन दिनों वह कई बार यरुसलम भी गए। इसी बीच उनके बाप मर गए। बड़ी मेहनत के साथ उसी गांव में रहकर और शायद कुछ दिनों के लिये अपनी ननिहाल के पास एक दूसरे गांव 'काना' में रह-कर बढ़ई का काम करके वह अपनी बूढ़ी माँ और अपने छोटे भाई बहनों सब का गुज़ारा चलाते रहे। जो वक़्त बचता उसे वह आस पास के कमज़ोरों, बूढ़ों और बीमारों की सेवा में खर्च करते। बच्चों से उन्हें ख़ास प्रेम था। गांव के बच्चे उनसे ख़ूब हिले हुए थे। अपने आस पास के लोगों की बातों, उनके दुखों और उनकी हालत को वह ध्यान से देखते सुनते रहे। यरुसलम के अन्दर इन चीज़ों को देखने और समझने का उन्हें और भी अच्छा मौक़ा मिला। उन्होंने देखा कि उनके देश वाले एक तरफ़ तो रोमी हाकिमों के ज़ुल्मों से पिस रहे थे और दूसरी तरफ़ पुरोहितों के जाल, तरह तरह के पाखण्डों, झूठे मज़हबी ख़यालों, सड़े गले रीति रिवाजों, जानवरों की क़ुरबानियों, और छुआछूत

के जंजाल में फंसे हुए थे। नौजवान ईसा बहुत बार सोच विचार में डूबा हुआ दिखाई देता। लोगों के दुःखों को दूर करने के लिये बेचैनी उसके दिल में उतनी ही ज़ोर की थी जितनी सच्चाई को जानने की लगन। ईसा ने ब्याह करने से इनकार कर दिया।

उस छोटी उमर में ही हज़रत ईसा ने अपने आस पास के लोगों के ख़यालों की गहरी छान बीन शुरू कर दी। फ़िलिस्तीन की हवा में लोगों के ख़यालों को बदलने और सच्चे मज़हब को क़ायम करने के लिये काफ़ी मैदान तय्यार हो चुका था। सिरा के बेटे ईसू और हिल्लेल जैसे सुधार करने वालों की बताई हुई बातों को ईसा ने लोगों से बहुत ध्यान देकर सुना और उन पर ग़ौर किया। इन बातों या उपदेशों का ज़िक्र आगे आ चुका है। यहूदी धर्म की पुरानी किताबों में भी जहां सैकड़ों अनहोनी बातें और हज़ारों बरस के पुराने ग़लत ख़याल भरे हुए हैं वहां बीच बीच में पुराने नबियों और महात्माओं के मुँह से निकली हुई बहुत सी क़ीमती और सुन्दर सच्चाइयाँ भी मौजूद थीं। फ़िलिस्तीन की उन दिनों की बोली 'अरामी' (Aramean) कहलाती थी। 'अराम' सुरिया या शाम का एक पुराना नाम है। अरामी में और पुरानी मज़-हबी किताबों की ज़बान इबरी या इबरानी (Hebrew) में क़रीब क़रीब वैसा ही फ़रक़ था जैसा हिन्दी और संस्कृत में। ईसा इबरानी न जानते थे। लेकिन इबरानी किताबों के कुछ अरामी

तरजुमे (Targums-अनुवाद) और 'मिद्राशिम' (Midrashim) शरह या टीकाएं उन्होंने नाज़रथ की धर्मशाला (Synagogue) के स्कूल में पढ़ीं थीं। इस सब पुराने ढेर में से उन्होंने अब बड़ी मेहनत के साथ सचाई के दाने बीनने शुरू किये।

यहूदी धर्म की किताबों में ईसा को दाऊद के भजन सब से ज्यादह पसन्द आए। दूसरी चीज़ों के पढ़ने का भी उन्हें शौक़ था। इनमें जगह जगह उन्हें वे सचाइयाँ मिलीं जिनका उनके बाद के जीवन पर ख़ासा गहरा असर पड़ा। 'तौरेत' (इबरानी शब्द 'थोरा' या 'धर्म') में जब कि एक तरफ़ यह लिखा था कि 'याहवे' की पूजा छोड़कर दूसरे की पूजा करने वाले को मार डालना जायज़ है और मज़हबी रीति रिवाजों के मामले में छोटे मोटे क़सूरों की सज़ा भी मौत बताई गई थी, वहां दूसरी तरफ मूसा की वे मशहूर दस आज्ञाएं भी मौजूद थीं जिनमें सब आदमियों को बराबर बताया गया है, और नेकी यानी सदाचार के मोटे मोटे उसूलों को ही असली धर्म बताया गया है।

बाइबिल में जहाँ, जगह जगह धर्म के नाम पर जानवरों की बलि दिये जाने का ज़िक्र था, वहां इस तरह के उपदेश भी मौजूद थे—

"मैं दया चाहता था, क़ुरबानी (बलि) नहीं चाहता था। यज्ञ में आहुतियों* की निस्बत मैं ईश्वर का ध्यान करना ज़्यादा पसन्द करता

---

* हवन की आग में जो चीज़ें डाली जाती हैं उन्हें आहुतियां कहते है।

था पर लोगों ने आदम की तरह ईश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा। उन्होंने मेरे साथ दग़ा की।"*

नबी इसाया की किताब में लिखा था—

"ईश्वर कहता है तुम मेरे नाम पर जो धड़ाधड़ जानवरों की कुरबानियाँ करते हो इनसे क्या फ़ायदा? हवन की आग में जो तुम भेड़ों को काट काटकर डालते हो और जानवरों को खिला खिलाकर मोटा करके उनकी चरबी की आहुतियाँ देते हो, इस सब से मैं उकता गया हूं। सांडों, मेंमनों या बकरों की हत्या से मुझे ख़ुशी नहीं होती... जब तुम मेरे सामने आते हो तो मेरे मन्दिर के अन्दर तुमसे यह सब करने को किसने कहा? ये फ़िज़ूल के चढ़ावे लाना बन्द करो। तुम्हारे हवन की गन्ध से मुझे नफ़रत है। तुम्हारे अमावस के त्योहार, तुम्हारे सब्बथ, (सनीचर) तुम्हारी धर्म सभाएं मैं नहीं सह सकता। यह सब पाप है।.........मेरी आत्मा तुम्हारी अमावसों और तुम्हारे आजकल के त्योहारों से नफ़रत करती है। मुझे उन्हें देखकर दुख होता है।......जब तुम अपने हाथ फैलाओगे मैं अपनी आंखें बन्द कर लूंगा। जब तुम लम्बी लम्बी प्रार्थनाएं करोगे, मैं नहीं सुनूंगा, क्यों कि तुम्हारे हाथ ख़ून से सने हुए हैं। अपने हाथों को धोओ। अपने बदन को पाक करो। अपने बुरे कामों को मेरी आंखों से दूर रखो। बुराई करना बन्द करो। भलाई करना सीखो। समझ और तमीज़ से काम लो। दुखियों का दुख दूर करो। यतीमों, अनाथों को पालो। बेवाओं को सहारा दो। फिर आओ और मुझसे बात करो........

---

* Hosea 6, 6-7.

यरुसलम का शहर जो एक सती औरत की तरह पाक था अब बाज़ारू औरत की तरह हो गया है। जहां समझ राज करती थी, जहां धर्म निवास करता था वहां अब हत्यारे भरे हुए हैं।*

"देखो व्रत यानी रोज़े के दिन भी तुम ख़ुद तो सुख भोगते हो और दूसरों को तकलीफ़ देते हो। तुम झगड़े और तक़रार के लिये व्रत करते हो। तुम सब तरह की बुराई करते रहते हो।......क्या मैंने ऐसे ही व्रत का हुक्म दिया था......क्या तुम इसे व्रत कहोगे? क्या यह ईश्वर को मंज़ूर हो सकता है? जिस व्रत का मैंने हुक्म दिया है वह यह है—जिन बुराइयों ने तुम्हें बांध रखा है उनके बन्धन तोड़ डालो, दूसरों के ऊपर जो तुमने बोझ लाद रखे हैं उन्हें हलका कर दो, दुखियों को आज़ाद करो और दूसरों के कन्धों से जुए हटा लो। जिस व्रत या रोज़े की मैंने आज्ञा दी है वह यह है कि भूखों को अपनी रोटी में से रोटी दो। जो ग़रीब हैं और बेघरबार के हैं उन्हें अपने घर में जगह दो। जो नंगे हैं उन्हें कपड़े पहनाओ, और दुखी लोगों से अपने को न छिपाओ। तब तुम्हारे अन्दर की रोशनी सुबह के सूरज की तरह चमक उठेगी। जब तुम सब्बथ (सनीचर) के पाक दिन बजाय अपनी मनमानी करने के इस तरह मेरी ख़ुशी की बातें करोगे तब तुम्हें अपने ईश्वर से सच्चा सुख हासिल होगा।" †

तौरेत में जहाँ दाँत के बदले दाँत और आँख के बदले आँख लेने की इजाज़त थी वहाँ इस तरह की बातें भी थीं—

---

* Isaiah I, 11-21

† Isaiah, ch. 58.

"किसी से बदला न लो......अपने पड़ौसी से वैसा ही प्रेम करो जैसा ख़ुद अपने से करते हो। तुम सब का एक ईश्वर अल्लाह है।"*

"उसे (सच्चे ईश्वर भक्त को) अगर कोई मारता है तो वह अपना गाल उसके सामने कर देता है।" †

"जिन्होंने मुझे मारा उनके सामने मैंने अपनी पीठ कर दी, और जिन्होंने मेरे बाल उखाड़े उनके सामने मैंने अपने गाल कर दिये।" ×

तौरेत में आता है—

"तुम लोग इसी तरह पाक और साफ़ बनो जिस तरह पाक और साफ़ ईश्वर है।" +

इसी तरह मिस्र के यहूदी फाइलो ने एक ऐसे पाक धर्म की तरफ़ लोगों का ध्यान दिलाया था, जिसमें न पुरोहितों की ज़रूरत थी और न बाहर के कर्मकाण्ड यानी रीति रिवाजों की, जिसका काम सिर्फ़ दिल की सफ़ाई से था, जिसमें सब के पैदा करने वाले एक ईश्वर के साथ अपनी आत्मा का नाता जोड़कर सिर्फ़ उस जैसे बनने की कोशिश करना ही आदमी का असली फ़र्ज़ और धर्म था।

---

* Leviticus 19,18.

† Ibid 3, 30.

× Isaiah 50,6.

\+ Leviticus 19,2.

पुरानी किताबों में यहूदी और ग़ैर यहूदी के फ़रक़ और यहूदी होने के घमण्ड को झूठा बताते हुए कई जगह ग़ैर यहूदियों को धर्मात्मा और यहूदियों को धर्म से गिरा हुआ कहा गया है।*

यह ख़याल कि ईश्वर ग़रीबों और कमज़ोरों की तरफ़ से अमीरों और ताक़तवरों से बदला लेगा यहूदी बाइबिल (तौरेत) में शुरू से आख़ीर तक भरा हुआ है। अमीरों और मालदारों की जगह जगह बहुत बुराई की गई है, और ग़रीबों की उतने ही ज़ोरों के साथ तरफ़दारी की गई है।

"अफ़सोस है तुम लोगों पर जो अपने पुरखों की असली दौलत यानी ग़रीबों की झोपड़ियों को नफ़रत की निगाह से देखते हो। अफ़सोस है तुम पर जो दूसरों के पसीने से अपने लिये महल खड़े करवाते हो। इनका एक एक पत्थर और इनकी एक एक ईंट पाप है।" †

पुराना रिवाज चला आता था कि हर सिनेगॉग में सात दिन में एक बार ग़रीबों की मदद के लिये चन्दा जमा किया जाता था, और कोई कोई धर्मात्मा यहूदी इस तरह के दान में बड़ी बड़ी रक़में भी दे देते थे।

हर नए रिफ़ारमर के लिए सच्चे रास्ते को खोज निकालने का काफ़ी सामान चारों तरफ़ मौजूद था। आदमी की ज़िन्दगी की बुनियादी सचाई शुरू ज़माने से सब जगह उसके दिल

---

* Malachi i, 11-12.

† Enoch XCIX, 13-14.

में पैदा होती और खिलती रही है। हज़ारों वर्ष का तजरुबा आदमी को यह भी बता चुका है कि इन अटल बुनियादी सच्चाइयों पर चलना ही आदमी की तरक़्क़ी और उसके भले का रास्ता है। जब जब आदमी ने इन सच्चाइयों पर चलने की कोशिश की है उसके पैर सब के सुख और सब की बढ़ौती की तरफ़ बढ़े हैं और जब जब आदमी उनसे भटका है ठोकरें खाता रहा है। इसी लिये हज़ारों वर्षों से दुनिया के अवतारों, पैग़म्बरों, तीर्थंकरों, महात्माओं और ऋषियों का काम किसी नई सचाई का पता लगाना नहीं रहा है, बल्कि उसी पुरानी सचाई के ऊपर से अपने ज़माने के ढक्कनों और गर्द ग़ुबार को हटाकर उसका नए सिरे से ऐलान करना, प्रचार करना और तसदीक़ करना रहा है। इसके लिये दो ख़ास बातों की ज़रूरत होती है। एक सच को झूठ से अलग कर सकने की ताक़त और दूसरे अपने ऊपर क़ाबू हासिल करके उस सच को अपने अन्दर क़ायम या साक्षात कर लेने की क़ाबलीयत। ठीक यही काम उस वक्त हज़रत ईसा के सामने था।

गुरू की तलाश

हज़रत ईसा को एक ज़िन्दा गुरु की भी ज़रूरत महसूस हुई। उन्होंने सुना कि यहूना नाम का एक महात्मा जार्डन नदी के किनारे सच्चे खोजियों को धर्म का उपदेश देता है। ज्यों ही उनके दूसरे भाई मेहनत करने और माँ और छोटे भाई बहनों के लिए कमाई करने के क़ाबिल होगए, एक दिन हज़रत ईसा अपनी बूढ़ी माता, भाई बहनों और गांव वालों को नमस्कार करके जार्डन नदी के किनारे जंगल में महात्मा यहूना से उपदेश लेने के लिये चल दिये।

हज़रत ईसा ने यहूना के उपदेशों को सुना। उन्हें कुछ शान्ति मिली। उन्होंने यहूना को अपना गुरु बनाने की इच्छा की। यहूना ने अपने क़ायदे के मुताबिक़ ईसा का हाथ पकड़कर पहले नदी में ग़ोता लगवाया और फिर दीक्षा दी यानी चेला बना लिया। यहूना की इस दीक्षा के बाद कहते हैं हज़रत ईसा को यह आकाशवाणी (आसमानी आवाज़) सुनाई दी—"आज से तू मेरा प्यारा बेटा और मैं तेरा बाप हुआ।"❀ हज़रत ईसा की

❀ Luke 3-23.

उमर इस समय क़रीब तीस वर्ष की थी।

इसके बाद वह एक ऐसे सुनसान जंगल में चले गए 'जहां पेड़ों और जानवरों के सिवा कोई साथी न था।' यह वही जंगल था जिसमें रहकर यहूना ने उपदेश देना शुरू करने से पहले तपस्या की थी। इस जंगल में ऐस्सिनी जमात के साधुओं की एक पुरानी और मशहूर बस्ती थी। यहूना और ईसा दोनों ने इन महात्माओं से बहुत कुछ सीखा। यहां से यरुसलम को जाते हुए रास्ते में वह "जैतूनों का पहाड़" आता था जिस पर बाद में हज़रत ईसा ने कई बार उपदेश दिया। कुछ दिनों यहां रहकर हज़रत ईसा ध्यान, सोच विचार और ईश्वर प्रार्थना करते रहे। उन दिनों एक बार उन्होंने चालीस दिन का लम्बा रोज़ा भी रखा।

हज़रत ईसा के इस लम्बे उपवास के बारे में इंजील में बहुत सी बातें लिखी हैं। लिखा है कि इन चालीस दिन के अन्दर शैतान ने उन्हें तरह तरह से बहकाने की कोशिश की और कई तरह के लोभ दिये और फ़रिश्तों ने आकर उन्हें खाना पहुँचाया और तसल्ली दी। ये क़िस्से ज़रथुस्त्री (पारसी) और बौद्ध किताबों के इसी तरह के क़िस्सों से बिलकुल मिलते हैं और मुमकिन है इन्हीं से लिये गए हों। अगर इनका कोई मतलब समझ में आ सकता है तो वह अलंकार यानी क़िस्से के रूप में एक उसूल समझाना हो सकता है।

कहते हैं इस उपवास से महात्मा ईसा को बहुत बड़ी शान्ति

मिली। उनकी भीतर की (ज्ञान की) आँख खुल गई। उन्हें अब महसूस होने लगा कि अपने दुखी और ग़रीब देश वालों में सच्चे धर्म का प्रचार करना ही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है और यही मुझे ईश्वर का हुकुम है। इसके बाद भी कभी कभी किसी पहाड़ पर या बयावान जंगल में जाकर हज़रत ईसा बराबर कई कई दिन तक सोच विचार और ध्यान में रहा करते थे।

यहूना का क़त्ल

इतने में एक और बात हुई जिससे हज़रत ईसा की रही सही झिझक भी जाती रही। रोमन हाकिमों के ज़ुल्म बढ़ रहे थे। गैलिली प्रान्त की हुकूमत ज़ालिम हैरॉड के बेटे हैरॉड अन्तिपास (Herod Antipos) के हाथों में थी। हैरॉड की बहुत सी बुराइयों में से एक यह थी कि अपने भाई फ़िलिप की बीवी के साथ उसका बेजा सम्बन्ध था। हैरॉड का विवाह एक अरब सरदार हरीस की लड़की के साथ हो चुका था। हैरॉड ने उसे छोड़कर फ़िलिप की बीवी के साथ विवाह करना चाहा। यहूना ने हैरॉड से कहला भेजा कि ऐसा करना पाप है और तुम्हें इससे बचना चाहिये। इस तरह का सम्बन्ध यहूदी धर्म के भी ख़िलाफ़ था। नाराज़ होकर हैरॉड ने यहूना को पकड़वाकर क़ैद कर दिया।

हज़रत ईसा अब चुप न बैठ सके। वह बाहर निकले। यह बात शायद सन् २९ ईसवी की गरमियों की है। इस बार अपने जन्म स्थान नाज़रथ जाने के बजाय वह और उत्तर में केपरनाम पहुंचे और वहाँ के ग़रीब किसानों और मछुओं को

सच्चे धर्म का उपदेश देने लगे।

हज़रत ईसा यहूना को अपना गुरू मानते थे। उन्हीं के कहने पर चलने की कोशिश करते थे। यहाँ तक कि जब हज़रत ईसा ने उपदेश देना शुरू किया तो सब से पहले शब्द जो उनके मुँह से निकले वह वही थे जो यहूना अकसर कहा करते थे—"अपनी बुराइयों के लिए पछताओ, ईश्वर का राज नज़दीक है।"* ऐसे ही हज़रत ईसा के उपदेशों में और भी बहुत से फ़िक़रे ज्यों के त्यों यहूना के आते हैं।

हज़रत ईसा ने इस मौक़े पर उपदेश दिया कि—

सब आदमी भाई भाई हैं, ईश्वर सब पर दया करने वाला, सब का बाप है। वह सबसे प्रेम करता है। ईश्वर की सच्ची पूजा जानवरों की बलि चढ़ाना या लम्बी लम्बी रटी हुई प्रार्थनाएँ, दुआएँ करना नहीं है, बल्कि अपने आपे को भूलकर (ख़ुदी को मिटाकर) सब तरह के पापों से बचते हुए† बिना फ़रक़ किये सब की प्रेम के साथ सेवा करना है।"

यहूना को जेल में ही अपने चेले के कामों का पता लग गया। यहूना बहुत ख़ुश हुए। अपने मानने वालों को उन्होंने अब हज़रत ईसा के पास भेजना शुरू कर दिया। हज़रत ईसा यहूना को कितना मानते थे यह इंजील के नीचे लिखे शब्दों से ज़ाहिर है। कुछ लोग जो जंगल में यहूना के उपदेश सुन चुके

*Math iii, 2, iv-17

† बौद्ध गाथा—"सब्ब पापस्स अकरनम् कुसलस्स उपसम्पदा"

थे हज़रत ईसा के पास पहुँचे। हज़रत ईसा ने उनसे कहा—

"आप लोग जंगल में किसकी खोज में गए थे ? क्या किसी नबी की ? बेशक मैं आपसे कहता हूं वह नबी से बढ़कर है। मैं आपसे कहता हूँ कि जितने लोग भी आज तक किसी औरत के पेट से पैदा हुए हैं उनमें बपतिस्मा देने वाले यहूना से ज़्यादह बड़ा आज तक कोई पैदा नहीं हुआ।"*

जेल में हैरॉड ने यहूना से कई बार अपने बारे में सवाल किये। यहूना ने बार बार वही जवाब दिया। इस पर हैरॉड ने महात्मा यहूना का सर कटवाकर एक ताश में रखकर अपने भाई फ़िलिप की बीवी के पास उसे ख़ुश करने के लिये भेज दिया। यहूना के कुछ चेले यह ख़बर लेकर हज़रत ईसा के पास पहुँचे।

हज़रत ईसा ने ख़बर सुनते ही यहूना के बारे में कहा—"वह एक जलता हुआ रोशन चिराग़ था।"† ख़बर सुनकर वह थोड़ी देर के लिये एक सुनसान जंगल में चले गये। उसके बाद घूम घूमकर रास्तों पर, खेतों में, नदियों के किनारे और बाज़ारों में लोगों को उपदेश देना शुरू किया। बाद में भी जब जब मौक़ा मिल सका हज़रत ईसा ने यहूना, उनके उपदेश और उनकी दीक्षा का बड़ी इज़्ज़त के साथ ज़िक्र किया है।

उस ज़माने के लोग यहूना को 'नबी' कहते थे। बहुत से

*Math., ch II, 9-II.

† John, V. 35.

ईसाई यहूना को सबसे पहला ईसाई शहीद मानते हैं। यहूना की जमात कुछ दिनों तक अलग चलती रही। बाद में यहूना के मानने वाले हज़रत ईसा के मानने वालों में मिलकर एक हो गये। यही यहूना का मरते वक़्त का हुकुम था।

यहूना की सादा और तपस्वी ज़िन्दगी का तरीक़ा बहुत दिनों तक फ़िलिस्तीन में चलता रहा। सन् ५० ईसवी के क़रीब बानू (Banou) नामक एक मशहूर सन्त उसी तरह जंगल में रहता था, सिर्फ़ पत्तों से अपने बदन को ढकता था, जंगली पत्ते और फल फूल खाकर रहता था और रात दिन में कई बार ठण्डे पानी में नहाता था। हज़रत ईसा की मौसी का लड़का जेम्स भी इसी तरह का तपस्वी साधु था।

हज़रत ईसा का स्वभाव और रहन सहन

हज़रत ईसा के स्वभाव में सब से बड़ी बात यह थी कि उनका दिल प्रेम और दया से इतना भरा हुआ था कि उसमें किसी दूसरी चीज़ के लिये जगह ही न थी। इस एक बात में हज़रत ईसा दुनिया के और सब महापुरुषों से अलग चमकते हुए दिखाई देते हैं। उन्हें कमज़ोरों, ग़रीबों और दुखियों के साथ प्रेम था। गिरे हुए, बदचलन और बुरे लोगों के साथ भी उन्हें वैसा ही गहरा प्रेम था। बुराई से नफ़रत करते हुए भी बुरे आदमी से प्रेम करना, इस ऊँचे उसूल की वह ज़िन्दा मूर्ति थे। दीनता और इनक़सार उनमें कूट कूट कर भरे थे। ये ही बातें उनके वचनों में और उनके चेहरे पर चमकती रहती थीं। किसी को ज़रा सा भी नुक़सान पहुँचाना या जानबूझ कर किसी का दिल दुखाना उनके लिये नामुमकिन था। इसीलिए वह अक-सर बेवाओं, ग़रीबों यहां तक कि गिरी हुई समझी जाने वाली बाज़ारी औरतों के यहां भी ठहरते थे। यहूदी उन दिनों रोमी सरकार के अफ़सरों और ख़ास कर टैक्स जमा करने वालों को बड़ी नफ़रत की निगाह से देखते थे और उनके साथ किसी

तरह का मेल जोल न रखते थे। हज़रत ईसा इन लोगों के यहां भी उसी तरह ठहरते थे, उनके साथ खाते पीते, उनसे प्रेम करते और उन्हें उपदेश देते जिस तरह दूसरों के यहाँ। उनका दिल इस बारे में इतना नरम हो गया था कि शराब और गोश्त दोनों से परहेज़ करने वाले सन्त यहूना के चेले और ख़ुद अहिंसा के उपदेशक होते हुए भी जब कभी कोई उन्हें प्रेम के साथ गोश्त या शराब देता तो वह उससे भी इनकार न करते। वह गिरे हुओं के साथ अपने को एक कर लेना चाहते थे। अपने को उनसे किसी तरह बड़ा ऊँचा या ज्यादह पाक पवित्र दिखाना उन्हें प्रेम के ख़िलाफ़ मालूम होता था।

शायद इसी तरह के ख़याल से अहिंसा के सब से बड़े हामी और प्रचारक महात्मा बुद्ध ने अपने भिक्खुओं (उपदेशक साधुओं) तक को इस बात की इजाज़त दी थी कि अगर कोई मामूली आदमी प्रेम के साथ भोले स्वभाव से तुम्हें भिक्षा में मांस दे दे तो तुम उसे भी लेकर प्रेम से खा लेना। लिखा है कि ख़ुद महात्मा बुद्ध की मौत अस्सी वर्ष की उमर में एक लम्बे उपवास के बाद किसी ग़रीब चाण्डाल के यहां से भिक्षा में सुअर का माँस खाकर हुई थी।

हज़रत ईसा की ज़िन्दगी की तारीखों का कुछ ठीक पता नहीं चलता। पर ज्यादहतर विद्वानों की राय है कि उनका फ़िलिस्तीन में उपदेश देने का सारा ज़माना यहूना की गिरिफ़्तारी से लेकर हज़रत ईसा के सूली पर चढ़ाए जाने तक अट्ठारह

महीने से ऊपर न था।*

उनका उपदेश देने का तरीक़ा वही था जो उस ज़माने के दूसरे मशहूर यहूदी महापुरुषों और सुधारकों, जैसे शेमाइया, अब्तालियन, हिलेल, शम्माइ, यूदा और गमालिएल का तरीक़ा था। ये लोग आम तौर पर किताबें नहीं लिखते थे। जगह जगह थोड़े से लोगों को इकट्ठा करके छोटे छोटे फ़िक़रों या कहावतों में उपदेश देते थे, जिससे उनके उपदेश एक से दूसरे को पहुँचकर लोगों को ज़बानी याद रह सकें। थोड़े बहुत चेले या मानने वाले इनमें से हर एक के आस पास जमा हो जाते थे। लोग इन्हें 'रब्बी' (मेरे स्वामी या मेरे मौला !) कहकर पुकारते थे। बाद में हरेक के कुछ चेले इनके उपदेशों को जमा करके लिख डालते थे। यही ढंग हज़रत ईसा का था। इनमें से कोई कोई एक जगह जमकर एक गिरोह या सतसंग अपने आस पास खड़ा कर लेते थे और कोई कोई हज़रत ईसा की तरह एक बेघरबार के बटोही की तरह घूम घूम कर ही प्रचार करते रहते थे।

फ़िलिस्तीन में इस तरह के बड़े बड़े महात्मा अकसर उपदेश देने के साथ साथ अपने गुज़ारे के लिये कोई छोटी मोटी दस्तकारी भी करते रहते थे जो आम तौर पर उनका ख़ानदानी धन्धा होती थी। मशहूर रब्बी युहानन हमेशा मोची का काम करते रहे। रब्बी इसाक़ लोहार थे और बराबर उन्होंने अपना

*Encyclopedia Brittanica, 14th edition.

काम जारी रक्खा। वैसे ही जैसे हिन्दुस्तान में कबीर बराबर जुलाहे का काम करते रहे और रैदास चमार का। इस तरह के काम छोटे या बेइज्ज़ती के न समझे जाते थे। कुछ दिनों बाद ईसाई महात्मा सेण्ट पाल, बहुत बड़े विद्वान होते हुए भी अपने गुज़ारे के लिये तम्बू, खेमे सीने का काम करते रहे। हज़रत ईसा यहूना के चेले बनने से पहले बढ़ई का काम किया करते थे। लेकिन इसके बाद उन्होंने अपने गुज़ारे के लिये कभी कोई काम नहीं किया। उनकी ज़िन्दगी बिलकुल एक सच्चे हिन्दू साधु या बौद्ध भिक्खु की सी ज़िन्दगी थी।

कभी कभी ज़रा दूर के शहरों या ग़ैर यहूदी आबादियों में भी हज़रत ईसा के जाने का ज़िक्र आता है, लेकिन उनके काम का ख़ास मैदान इस सारे अरसे में केपरनाम का क़स्बा और टाइबीरियास झील के किनारे किनारे या उसके आस पास के चार पांच गांव ही थे। यह वही जगह थी जहाँ कुछ साल पहले, जब कि ईसा अभी बालक थे, यूदा की बाग़ी जमात काम कर चुकी थी और जहां यूदा ने लोगों को उपदेश दिया था कि रोमी हाकिमों को टैक्स न दो और तुम्हें आज़ाद कराने के लिए एक मसीहा जल्दी ही आने वाला है।

दो बार हज़रत ईसा ने अपने जन्म स्थान नाज़रथ जाकर उपदेश देने की कोशिश की। पर उनके नातेदारों और नाज़रथ के उन लोगों को जो उन्हें बचपन से जानते थे उनकी बातों पर यक़ीन न आया, लोगों ने उनकी हंसी उड़ाई और उन्हें निराश

होकर केपरनाम लौट आना पड़ा।

केपरनाम अनपढ़ मछली पकड़ने वालों का गांव था। इनमें कोई कोई खास ख़ुशहाल भी थे। हज़रत ईसा अब इस गांव को अपना गांव कहने लगे। मछली पकड़ने वालों ही के दो घराने इस गांव में ऐसे थे जो हजरत ईसा के बड़े भक्त होगए। वे उनसे बड़ा प्रेम करते थे और अकसर उनके यहाँ ही ठहरते थे। इनमें से एक घर में दो सगे भाई साइमन और एण्ड्रू रहते थे।

साइमन बाद में पीटर के नाम से मशहूर हुआ और एण्ड्रू हज़रत ईसा के गुरू यहूना से उपदेश ले चुका था। ये दोनों भाई आख़ीर तक अपना पुराना पेशा करते रहे। हज़रत ईसा कभी कभी प्रेम के साथ उनसे कहा करते थे—

"मैं तुम्हें मछलियां पकड़ने की जगह आदमी पकड़ने वाला बना दूँगा।" हज़रत ईसा को ज़िन्दगी भर इन दोनों से ज्यादह वफ़ादार चेले नहीं मिले।

दूसरे घर में ऐसे ही और मछली पकड़ने वाले ज़ेबेदी और उसके बेटे जेम्स और यहूना रहते थे। ये दोनों भाई भी ईसाई धर्म के शुरू के दिनों में बहुत मशहूर हुए हैं। जेम्स और यहूना की माँ सालोम और उनके आस पास की कई और औरतें हज़रत ईसा की बड़ी भक्त थीं। ये अकसर हज़रत ईसा के साथ रहतीं और उनकी सेवा करना अपना बड़ा भाग्य समझतीं।

हज़रत ईसा के चेलों में शायद सब से ज्यादह पढ़ा लिखा

मैथ्यू था जो पहले किसी टैक्स के दफ़्तर में मुन्शी था और 'क़लम' चलाना जानता था। मैथ्यू ही ने सब से पहले हज़रत ईसा के कुछ उपदेशों को जमा किया। ये उपदेश मैथ्यू के मरने के शायद सौ वर्ष बाद बढ़ा घटा कर 'मैथ्यू की इञ्जील' के नाम से दुनिया के सामने आए। बाक़ी क़रीब क़रीब सब चेले अनपढ़, ग़रीब और ज्यादातर मछुए थे। कुछ इने गिने अमीर और बड़े लोगों पर भी बाद में हज़रत ईसा का असर पड़ा।

हज़रत ईसा बहुत करके खुले मैदानों में या खेतों में या पहाड़ों पर या बाज़ारों में उपदेश दिया करते थे। कभी कभी वह नाव में बैठकर किनारे के लोगों को उपदेश देते थे और कभी कभी उन यहूदी धर्मशालाओं में खड़े होकर भी उपदेश देते थे जो सिनेगाग कहलाती थीं, जो वहां के हर बड़े क़स्बे में मौजूद थीं और जहां हर सनीचर को लोग जमा होकर पुरानी मज़हबी किताबों की कथाएं सुना करते थे। ऐसे मौक़ों पर जैसा रिवाज था, हज़रत ईसा अकसर पुरानी किताबों के किसी एक अच्छे से फ़िक़रे को लेकर उसी पर उपदेश देने लगते थे। कभी कभी लोग उनसे सवाल भी करते थे और शास्त्रार्थ या बहस भी होने लगती थी।

कहते हैं कि साइमन (पीटर) को और जेबेदी के दोनों लड़कों जेम्स और यहूना को हज़रत ईसा ने कुछ योग (सलूक) या रूहानी अभ्यास (मश्क़) करने का भी उपदेश दिया था।*

*'Life of Jesus', by Renan, p. 129.

हज़रत ईसा के सब चेले एक दूसरे को 'भाई' कहकर पुकारते थे। साइमन बारजोना को हज़रत ईसा सब से ज़्यादह चाहते थे, अकसर उसकी किश्ती में बैठकर उपदेश देते थे, उसे अपने मज़हब का 'केफा' (पत्थर) यानी बुनियादी पत्थर कहा करते थे, इसी से बाद में उसका यूनानी नाम "पीतर" (पीटर) (संस्कृत-प्रस्तर; हिन्दुस्तानी-पत्थर) मशहूर हुआ। पीटर ईसा को 'मसीहा' मानता था। ईसा और उनके बाक़ी ग़रीब साथियों का सरकारी टैक्स पीटर ही दिया करता था।

हज़रत ईसा का रहन सहन बहुत ही सादा, सख़्त और संयमी था। उन्हें अपने ऊपर ग़ज़ब का क़ाबू था। वह ज़्यादह-तर एक छोटी सी धोती या लंगोटी लगाकर रहते थे। पैदल सफ़र करते थे। रास्ते में खुले आसमान के नीचे नंगी ज़मीन पर बिना तकिया लगाए सो जाते थे। जहां रहते ढूंढ़ ढूंढ़कर रोगियों यहां तक कि कोढ़ियों की सेवा करने और बच्चों से प्यार करने का उन्हें ख़ास शौक़ था। महलों और दरबारों की शान और उनके अन्दर के भोग विलास, ऐश आराम से उन्हें नफ़रत थी। गांव वालों से और गांव की सादा ज़िन्दगी से उन्हें प्रेम था। बीच बीच में कभी कभी वह बड़े उदास दिखाई देने लगते थे। ऐसे मौक़ों पर आम तौर पर वह कुछ देर के लिये और कभी कभी कई दिन के लिये किसी सुनसान जंगल में या अकेले पहाड़ी पर चले जाते थे। इस बार-बार के अकेले रहने का उनके दिल पर गहरा असर पड़ता था। दूसरों के साथ रहते

हुए भी वह कभी कभी रात रात भर अपने ईश्वर अल्लाह से दुआ मांगते और रोते रहते थे। उनका दिल शीशे की तरह साफ़ था। उनके शब्द सब के साथ बराबर प्रेम में सने होते थे और उनके दिल की गहरी से गहरी गहराई से निकलते थे। इसी लिये ख़ासकर आम लोगों के दिलों में उनके उपदेश जमकर घर कर लेते थे।

ग़रीबी को वे उसी तरह ऊँची और इज्ज़त की चीज़ मानते थे जिस तरह ऐस्सिनी। मुमकिन है उन्होंने यह बात ऐस्सिनियों से ही सीखी हो। लोभ करने या सामान जमा करने को वे सब से बड़ा पाप समझते थे। अपरिग्रह को यानी किसी चीज़ को अपना न समझने को वह सब से बड़ा गुण मानते थे। इसी लिए बहुत दिनों तक शुरू के ईसाइयों में यह बराबर रिवाज रहा कि हर एक की चीज़ सारी जमात की चीज़ समझी जाती थी।

हज़रत ईसा के डेढ़ हज़ार साल बाद भी बहुत से ईसाई फ़िरक़ों में ग़रीबी गौरव यानी फ़ख्र की चीज़ समझी जाती थी, अपरिग्रह ईसाई धर्म का सब से ऊँचा उसूल माना जाता था और भीख मांगकर रहना एक इज्ज़त की ज़िन्दगी गिनी जाती थी। कई फ़िरक़ों में जो कुछ माल असबाब होता था वह सब की मिली हुई मिलकीयत समझा जाता था।

उपदेशों का .खुलासा

हजरत ईसा के उपदेशों का सब से अच्छा .खुलासा उनके मशहूर "पहाड़ी पर के उपदेश" (Sermon on the Mount) में मौजूद है। दुनिया के धार्मिक उपदेशों में यह 'उपदेश' बड़े ही ऊँचे दरजे का है। उसके कुछ टुकड़े ये हैं—

मुबारिक हैं वे जो ग़रीब हैं, स्वर्ग (बहिश्त) का राज उन्हीं के लिये है।

मुबारिक हैं वे जो ग़म में डूबे हैं, उनकी ज़रूर तसल्ली की जावेगी।

मुबारिक हैं वे जो दीनता बरतते हैं, यह धरती उन्हीं को विरसे में मिलेगी।

मुबारिक हैं वे जो दूसरों की भलाई करने के लिये भूख प्यास सहते हैं, उन्हें ज़रूर भरपेट खाने को मिलेगा।

मुबारिक हैं वे जो दयावान हैं, उनके साथ भी दया की जावेगी।

मुबारिक हैं वे जिनका दिल साफ़ है, उन्हें परमात्मा के दर्शन मिलेंगे।

मुबारिक हैं वे जो लोगों में सुलह कराते हैं, वे परमात्मा के ख़ास बच्चे गिने जावेंगे।

मुबारिक हैं वे जिन्हें नेकी करने के क़सूर में तकलीफ़ें दी जाती हैं, स्वर्ग का राज उन्हीं का है।

मत समझो कि मैं पहले के धर्म को या पहले नबियों के हुकुमों को रद्द करने के लिये आया हूं। रद्द करने के लिये नहीं, बल्कि मैं उनकी कमी पूरा करने के लिये आया हूँ।

× × ×

तुमने सुना है पुराने धर्म की आज्ञा है 'किसी की जान न लो, और जो किसी की जान लेगा उसे ईश्वर सज़ा देंगे।'

लेकिन मैं तुम से कहता हूँ जो कोई भी अपने किसी भाई पर .गुस्सा करता है उसे ईश्वर की तरफ़ से सज़ा भोगनी होगी, और जो कोई अपने किसी भाई को कोई हलके से हलका बुरा शब्द भी कहेगा उसे 'जहन्न' (नरक) में पड़ना होगा।

इसलिये अगर तुम पूजा का सामान लेकर मन्दिर में पूजा को जा रहे हो और तुम्हें याद आ जावे कि तुम्हारे किसी भाई को तुमसे कुछ भी दुख पहुँचा है तो उस सामान को वहीं छोड़कर लौट जाओ, पहले जाकर अपने भाई से सुलह करो और फिर आकर ईश्वर की पूजा करो।

× × ×

तुमने सुना है पहले के धर्म की आज्ञा है 'बदचलनी न करो।'

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई किसी औरत की तरफ़ बुरी निगाह से देखता है वह अपने दिल में बदचलनी के पाप का दोषी हो चुका।

अगर तुम्हारी दाहिनी आँख पाप कर बैठे तो उसे निकाल कर फेंक दो क्योंकि तुम्हारे लिये ज़्यादा अच्छा है कि तुम्हारा एक अंग नष्ट हो जाय बजाय इसके कि तुम्हारा सारा शरीर नरक में झोंका जावे।

और अगर तुम्हारा दाहिना हाथ पाप कर बैठे तो उसे काट कर फेंक दो क्योंकि ज़्यादा अच्छा है कि तुम्हारा एक अंग नष्ट हो जाय बजाय इसके कि तुम्हारा सारा शरीर नरक में फेंका जावे।

तुमने सुना है पुरानी किताबों में कहा गया है कि 'कभी झूठी क़सम न खाना और ईश्वर को गवाह ठहराकर जो वादा करो उसे पूरा करना।'

पर मैं तुमसे कहता हूँ कभी किसी तरह की भी क़सम न खाओ। न आसमान की क़सम खाओ और न ज़मीन की, क्योंकि आसमान ईश्वर का तख़्त है और ज़मीन उसके पैरों की चौकी है।

न यरुसलम की क़सम खाओ, क्योंकि वह सब बादशाहों के बादशाह ईश्वर अल्लाह का शहर है।

न कभी अपने सर की क़सम खाओ क्योंकि तुम एक भी बाल काला या सफ़ेद नहीं बना सकते।

पर जो कुछ कहो बस 'हां' या 'नहीं', इससे ज़्यादा शब्द जो भी दूसरों को भरोसा दिलाने के लिये तुम्हारे मुँह से निकलेंगे वे अन्दर के किसी पाप की वजह से ही निकलेंगे।

तुमने सुना है पुरानी आज्ञा है कि 'जो तुम्हारी आँख निकाल ले उसके बदले में तुम उसकी आँख निकाल लो और दाँत के बदले में

दाँत' (यानी जितनी बुराई उसने तुम्हारी की है उससे ज़्यादा बदला न लो)।

पर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम दूसरे की बुराई का मुक़ाबला ही न करो (Resist not evil) । बल्कि जो कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तुम दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो ।

और अगर कोई तुम्हारा कुरता छीनना चाहे तो तुम अपना कोट भी उसे उतार कर दे दो ।

और जो कोई एक मील तुम्हें ज़बरदस्ती ले जाना चाहे, तुम दो मील उसके साथ चले जाओ ।

जो तुमसे मांगे उसे दो और जो तुमसे उधार लेना चाहे उससे मुंह मत फेरो, और न दी हुई चीज़ वापिस मांगो और न इसकी उम्मीद करो ।

पुरानी किताबों में कहा गया है 'अपने पड़ोसी के साथ प्रेम करो और अपने दुशमन से नफ़रत करो ।'

पर मैं तुमसे कहता हूं अपने दुशमनों के साथ प्रेम करो, जो तुम्हें कोसें तुम उन्हें दुआ दो, जो तुमसे नफ़रत करें तुम उनके साथ नेकी करो, और जो तुमसे दुशमनी करें और तुम्हें तकलीफ़ें पहुंचाएं, तुम उनकी भलाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना करो ।*

ताकि तुम अपने उस बाप ईश्वर के बच्चे कहला सको जो आसमान पर है, क्यों कि वह अपने सूरज की रोशनी भले और बुरे दोनों

* Compare Talmud of Babylon, Shabbath 88b, Joana 23 a.

तरह के लोगों पर एक सी भेजता है, और न्याय करने वाले और अन्याय करने वाले दोनों के लिये एक सा पानी बरसाता है। तुम उसी तरह भरपूर या कामिल (Perfect) बनो जिस तरह तुम्हारा आसमानी बाप (परमेश्वर) भरपूर है।

तुम जो कुछ ख़ैरात (दान) करो वह लोगों के सामने उन्हें दिखाने के लिए न करो।

जब कभी ख़ैरात करो तो तुम्हारा दाहिना हाथ जो कुछ दे उसका तुम्हारे बाँए हाथ को भी पता न होने पावे।

जो कुछ ख़ैरात करो छिपाकर करो और तुम्हारा बाप जो छिपी चीज़ों को देखता है खुले तुम्हें उसका फल देगा।

तुम जब ईश्वर से कुछ प्रार्थना करो तो मन्दिरों में या चौरस्तों पर खड़े होकर न करो बल्कि अपने घर के अन्दर जाकर दरवाज़ा बन्द करके उस सब के बाप से प्रार्थना करो जो दिलों के अन्दर के अन्दर में मौजूद है।

जब प्रार्थना करो तो रटे हुए फ़िक़रे (मन्त्र या आयत) मत दोहराओ। मत समझो कि तुम जितना ज़्यादह बोलोगे उतना ही ईश्वर ज़्यादह सुनेगा।

ऐसा मत करो। तुम्हारे कहने से भी पहले तुम्हारा वह बाप जानता है कि तुम्हें किन चीज़ों की ज़रूरत है।

आम तौर पर इस तरह के शब्दों में प्रार्थना करो—

ऐ हमारे आसमानी बाप, तेरा नाम महान हो !

तेरा राज क़ायम हो, जिस तरह आसमान या स्वर्ग में उसी तरह ज़मीन पर तेरी इच्छा पूरी हो।

आज की हमारी रोज़ी हमें दो।

हमारे क़ुसूरों को माफ़ कर हमने अपने साथ क़ुसूर करने वालों को माफ़ कर दिया है।

हमें लोभ लालच में मत डाल, हमें बुराई से बचा। असली राज हमेशा के लिए तेरा ही है। तेरा ही बल है, तेरी ही शान है। आमीन (शान्ति)!

अगर तुम लोगों के क़ुसूर माफ़ कर दोगे तो तुम्हारा स्वर्ग का बाप भी तुम्हारे क़ुसूर माफ़ कर देगा। पर जो तुम लोगों को माफ़ न करोगे तो तुम्हारा बाप तुम्हें भी माफ़ न करेगा।

जब तुम उपवास (रोज़ा) रखो तो लोगों को दिखाने के लिए सोग का सा चेहरा न बना लो, बल्कि सर पर तेल लगाओ और मुँह धोओ। जिससे लोगों को यह पता न चले कि तुमने उपवास रखा है, बल्कि तुम्हारे उस बाप को मालूम हो जो दिलों के अन्दर मौजूद है। और तुम्हारा बाप जो सब छिपी चीज़ों को देखता है तुम्हें खुले उसका फल देगा।

अपने लिये इस धरती पर ख़ज़ाने जमा न करो जहाँ कीड़े और ज़ंग उसे खा जाते हैं और जहाँ चोर घुस कर चुरा ले जाते हैं।

बल्कि अपने लिए स्वर्ग में ख़ज़ाने जमा करो जहाँ न कीड़े या ज़ंग उसे खा सकते हैं और न चोर घुसकर चुरा सकते हैं।

क्यों कि जहाँ कहीं तुम्हारा ख़ज़ाना होगा वहीं तुम्हारा दिल भी रहेगा।

आदमी की आंख उसके बदन का दिया यानी चिराग़ है इसलिये अगर तुम्हारी आंख रोशन होगी तो तुम्हारा सारा बदन चमक उठेगा।

पर जो तुम्हारी आंख ख़राब (जिसमें खुदी हो) होगी तो तुम्हारे सारे बदन में अँधेरा होगा। इसलिए अगर तुम्हारा चिराग़ ही अंधा (मलिन) हो गया तो वह अँधेरा कैसा डरावना होगा।

कोई आदमी एक साथ दो मालिकों की नौकरी नहीं कर सकता। या तो एक से नफ़रत करेगा और दूसरे से प्रेम और या एक की सेवा करेगा और दूसरे से बेपरवाही। तुम परमात्मा और 'मैमन' (यानी धन के देवता कुबेर) दोनों की सेवा एक साथ नहीं कर सकते।

इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम इस बात की बिलकुल चिन्ता न करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पिओगे और न इस बात की कि तुम क्या पहनोगे। खाना पीना जीवन नहीं है और न कपड़े बदन हैं।

आसमान की चिड़ियों को देखो, न वे बोती हैं और न काटती हैं, और न खलियानों में नाज जमा करती हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्ग का बाप उन्हें खाना देता है। क्या तुम्हारा मोल उन चिड़ियों से ज़्यादा नहीं है?

तुम कपड़ों की फ़िक्र क्यों करते हो? जङ्गल के फूलों को देखो वे कैसे उगते हैं, वे न मेहनत करते हैं और न कातते हैं।

और इस पर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान जैसे बादशाह के कपड़े भी उसकी तमाम शान और शौकत के होते हुए इनमें से एक फूल जितने ख़ूबसूरत न थे।

अगर परमात्मा जङ्गल की उस घास को, जो आज उगती है और कल जब सूख जाती है तो भट्टी में डाल दी जाती है, इस तरह के कपड़े पहनाता है तो क्या वह तुम्हें इससे बढ़कर कपड़े न पहनाएगा ? पर तुम में भरोसे की कमी है !

इसलिये इस बात की बिलकुल फ़िक्र न करो कि हम क्या खाएंगे, क्या पिएंगे या क्या पहनेंगे ?

तुम्हारे आसमानी बाप को मालूम है कि तुम्हें किन किन चीज़ों की ज़रूरत है।

तुम सब से पहले अपने अन्दर ईश्वर का राज क़ायम करने और ईश्वर का धर्म, उसकी नेकी खोजने की चिन्ता करो और ये सब चीज़ें अपने आप तुम्हारे पास आ जावेंगी।

तुम कल की बिलकुल चिन्ता न करो। कल अपनी बातों की आप चिन्ता कर लेगा। हर दिन के लिये उसी एक दिन की बुराई बस है।

तुम हर घड़ी कमर कसे, दिया जलाए तय्यार रहो, न जाने इस घर का मालिक किस घड़ी आ पहुँचे।

दूसरों को परखने में मत पड़ो जिससे तुम्हारी भी परख न की जावे। क्योंकि जिस तरह तुम दूसरों को परखोगे ठीक उसी तरह तुम्हारी परख ली जावेगी और जिस माप से तुम दूसरों को भरकर

दोगे उसी से तुम्हें दिया जायगा। और तुम अपने भाई की आँख का तिल क्यों देखते हो और अपनी आँख का लट्ठा क्यों नहीं देखते ?

तुम अपने भाई से यह कैसे कहोगे 'आओ तुम्हारी आँख में से मैं तिल निकाल कर फेंक दूँ', जब कि तुम्हारी अपनी आँख में लट्ठा मौजूद है ? पहले ख़ुद अपनी आँख में से लट्ठा निकाल कर फेंक दो तब तुम्हें साफ़ साफ़ दिखाई देगा कि तुम अपने भाई की आँख से किस तरह तिल निकाल सकते हो।

× × ×

तुम में अगर चाह है तो मांगो और तुम्हें मिलेगा। खोजो और तुम पाओगे। खटखटाओ और तुम्हारे लिये दरवाज़ा खुलेगा।

क्योंकि जो मांगता है उसे मिलता है, उसके लिये दरवाज़ा खुलता है।

तुम में कौन ऐसा है जिससे अगर उसका बेटा रोटी मांगे तो वह उसे रोटी की जगह पत्थर दे दे ? या अगर उसका बेटा मछली मांगे तो वह उसे साँप पकड़ा दे ?

✓ फिर जब तुम अपने अन्दर बुराई रखते हुए भी अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो तो तुम्हारा बाप जो स्वर्ग में है उन्हें जो उससे मांगेंगे उनकी ज़रूरत पुरता आध्यात्मिक यानी रूहानी खाना क्यों न देगा ?

इसीलिये जो जो बातें तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें

वे सब बातें तुम लोगों के साथ करो, यही धर्म है और यही सब नबियों की तालीम का निचोड़ है।*

तुम छोटे और तंग दरवाज़े से अन्दर आओ क्योंकि जो रास्ता बरबादी की तरफ़ ले जाता है वह खूब चौड़ा है और उस पर दरवाज़ा भी बड़ा है। ज़्यादहतर लोग उसी दरवाज़े से जाते हैं।

पर जो रास्ता सच्चे जीवन की तरफ़ ले जाता है वह बहुत तंग है, उसका दरवाज़ा छोटा है, और बहुत कम लोग हैं जो उसे पाते हैं।

उन झूठे नबियों से बचे रहो जो तुम्हारे सामने भेड़ की खाल ओढ़कर आते हैं जब कि उनके अन्दर खौफ़नाक भेड़िया छिपा रहता है।

हर आदमी जो "ईश्वर! ईश्वर!" करता आयगा ईश्वर के राज में न घुस पाएगा, सिर्फ़ वह ही उसमें घुस सकेगा जो उस सब के बाप की इच्छा पर चलेगा।

उस दिन बहुत से लोग यह कहेंगे—

'हे ईश्वर! हे ईश्वर! क्या हमने तेरे नाम पर लोगों को यह नहीं बताया कि आगे क्या होने वाला है? और तेरे नाम पर बहुत सी करामातें (चमत्कार) नहीं दिखलाईं?'

और तब ईश्वर उनसे कहेगा—

'मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था, हट जाओ मेरे पास से क्योंकि तुम बुरे काम करते हो।'

* कुङ्ग-फू-त्ज़े और हिल्लेल के वचन।

जो कोई मेरी इन बातों को ध्यान से सुनकर उन पर चलेगा, वह समझदार आदमी की तरह होगा जिसने ज़मीन को गहरा खोदकर पक्की चट्टान के ऊपर अपने घर की नींव रक्खी और उसके ऊपर घर बनाया।

बारिश होगी, आंधियाँ चलेंगी और उस घर से टकराएंगी पर वह घर न गिरेगा क्योंकि उसकी बुनियाद पक्की चट्टान के ऊपर है।

और कोई मेरी इन बातों को सुनेगा पर उन पर अमल न करेगा वह उस बेसमझ आदमी की तरह होगा जिसने बिना बुनियाद खोदे रेत के ऊपर अपना मकान खड़ा कर लिया।

बारिशें होंगी, बाढ़ें आवेंगी, आंधियाँ चलेंगी और इस मकान से टकरावेंगी और वह भड़भड़ा कर गिर पड़ेगा।*

यह सारा 'उपदेश' असलीयत में एक जगह या एक वक्त दिया हुआ नहीं है। यह हज़रत ईसा के ख़ास ख़ास उपदेशों को मिलाकर बना है। इससे हज़रत ईसा के ऊँचे ख़यालों और उस ज़माने के यहूदी धर्म की हालत पर ख़ासी रोशनी पड़ती है।

* Math., ch V-VII.

दूसरे उपदेश

एक दिन हज़रत ईसा रास्ते पर चले जा रहे थे कि एक आदमी दौड़ता हुआ उनके पास आया और घुटनों के बल बैठ कर कहने लगा—

"मेरे अच्छे मालिक ! मैं क्या करूं जिससे मुझे अमर जीवन यानी हमेशा की ज़िन्दगी हासिल हो सके ?"

ईसा ने जवाब दिया—

"तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो ? सिवाय एक ईश्वर के और कोई अच्छा नहीं है। तुम धर्म की आज्ञाएं जानते हो—बदचलनी न करो, हिंसा न करो (किसी को दुख न दो), चोरी न करो, झूठी गवाही मत दो, धोखा न दो, अपने मां बाप की इज़्ज़त करो।"

उसने फिर कहा—

"ऐ मालिक ! इन सब बातों को तो मैं अपने लड़कपन से कर रहा हूँ।"

हज़रत ईसा ने उसे प्यार किया और कहा—

"अब तुम में एक बात की कमी है। जाओ, जो कुछ माल तुम्हारे पास है सब बेचकर ग़रीबों में बांट दो और फिर लौटकर

सलीब (क्रॉस यानी दूसरे के लिए मुसीबतें उठाने का निशान) हाथ में लेकर मेरे साथ साथ चलो। तुम्हें स्वर्ग का ख़ज़ाना मिलेगा।"

यह सुनते ही वह सुस्त होगया और वहां से उठकर चल दिया। उसके दिल को दुख हुआ क्यों कि वह बड़ा मालदार था।

हज़रत ईसा ने मुड़कर अपने साथियों से कहा—

"जिन लोगों के पास दौलत है, जिन्हें अपने धन दौलत पर भरोसा है उनके लिये ईश्वर के राज में घुस सकना बहुत मुशकिल है!

"ऊंट के लिये सुई की आंख में से निकल जाना आसान है पर दौलत वाले आदमी के लिये ईश्वर के राज में घुसना कठिन है।"*

एक दिन पुराने खयाल के कुछ लोग एक औरत को हज़रत ईसा के पास लेकर आए और कहने लगे—

"ऐ मालिक! यह औरत बदचलनी करती हुई पकड़ी गई है। मूसा ने अपने धर्म शास्त्र में हुकुम दिया है कि इस तरह के आदमी को पत्थर मार मार कर मार डालना चाहिये; आप क्या कहते हैं?"

हज़रत ईसा गरदन झुकाकर नाखून से ज़मीन खोदने लगे। उन लोगों ने फिर पूछा। हज़रत ईसा ने गरदन उठाकर कहा—

"आप लोगों में से जिसने कभी पाप न किया हो वह इस पर सब से पहला पत्थर फेंके!"

यह कहकर हज़रत ईसा ने फिर गरदन झुका ली और फिर उंगली से लकीरें खींचनी शुरू कर दीं।

---

* Mark, ch. 10. compare Talmud and also Quran 7. 40.

जिन लोगों ने हज़रत ईसा की बात सुनी वे अपने अपने पापों को याद करके एक एक कर चुपके से वहां से उठकर चल दिये।

हज़रत ईसा ने फिर गरदन उठाई तो देखा कि सिवाय उस औरत के वहाँ और कोई न रह गया था। हज़रत ईसा ने उससे कहा—

"बहन! (हज़रत ईसा सब औरतों को इसी नाम से पुकारते थे) तुझ पर इलज़ाम लगाने वाले कहां गए? क्या किसी ने तुझे सज़ा नहीं दी?"

उसने जवाब दिया—

"मालिक! किसी ने नहीं।"

ईसा ने कहा—

"मैं भी तुझे सज़ा नहीं दे सकता, जा फिर कभी पाप न करना।"

तलाक़ का रिवाज यहूदी मज़हब में जायज़ समझा जाता था। एक बार कुछ लोगों ने इस रिवाज के बारे में हज़रत ईसा की राय पूछी। उन्होंने जवाब दिया—

✓ "दुनिया के शुरू से ही ईश्वर ने औरत और मर्द को बनाया है। ईश्वर ने हुकुम दिया है कि आदमी बड़ा होकर अपने माँ बाप से अलग हो सकता है पर पति और पत्नी यानी ख़ाविन्द और बीवी हमेशा एक शरीर एक जिस्म बनकर रहेंगे। इसलिये वे दो नहीं रहते बल्कि दोनों मिलकर एक बदन हो जाते हैं।* जिन्हें ईश्वर ने

---

* अर्धाङ्गिनी का हिन्दू ख़याल।

मिलाया है उन्हें कोई आदमी एक दूसरे से अलग न करे। जो कोई अपनी बीवी को तलाक़ देकर दूसरी औरत के साथ ब्याह करता है वह बदचलनी करता है, जो कोई किसी तलाक़ दी हुई औरत के साथ ब्याह करता है वह बदचनी करता है, और जो अपने ख़ाविन्द को तलाक़ देकर दूसरे से ब्याह करती है वह बदचलनी करती है।"*

एक बार किसी ने आकर पूछा—

"धर्म की आज्ञाओं में सब से बढ़कर कौनसी है ?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"सब से बढ़कर आज्ञा यह है—'ऐ इसराईल ! सुनो, हमारा सब का ईश्वर एक ही है, और तुम्हें चाहिये कि अपने पूरे दिल से, अपनी पूरी आत्मा से, अपनी पूरी समझ से और अपनी पूरी ताक़त से अपने उस ईश्वर से प्रेम करो।'† उतनी ही बड़ी धर्म की दूसरी आज्ञा यह है—'अपने पड़ौसी के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने साथ करते हो।× इन दोनों से बढ़कर और कोई आज्ञा नहीं है। ये दो आज्ञाएं ही तमाम धर्म शास्त्र और तमाम नबियों के उपदेशों का निचोड़ और उनकी बुनियाद हैं।"

उस आदमी ने कहा—

"ऐ मालिक ! आपने सच कहा है। ईश्वर एक है। उसके

---

* Compare Talmud of. Babylon, San hedrim 22 a.

† Dent 6. 4.

× Lev. 19. 18.

सिवा दूसरा कोई ईश्वर नहीं है; और पूरे दिल से, पूरी समझ से, पूरी आत्मा से और पूरी ताक़त से उस ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ौसी को अपनी ही तरह समझकर उससे वैसा ही प्रेम करना—य दोनों बातें आग में जानवरों की बलि चढ़ाने और तमाम यज्ञ और क़ुरबानियां करने से कहीं बढ़कर हैं।"

ख़ुश होकर हज़रत ईसा ने कहा—

"तुम ईश्वर के राज से बहुत दूर नहीं हो।

"जब अपने अपने कामों के फल भोगने का वक़्त आयगा तब दुनिया का चलाने वाला मालिक कुछ लोगों से कहेगा—

'आओ, तुम बड़े भाग्य वाले हो। दुनिया के शुरू से यह राज तुम्हारे ही लिये बदा है। क्यों कि जब मैं भूखा था तुमने मुझे खाना दिया था, जब मैं प्यासा था तुमने मुझे पानी पिलाया था, जब मैं बे घर का था तुमने मुझे रहने की जगह दी थी, जब मैं नंगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया था, मैं बीमार था और तुमने मेरी सेवा की थी, मैं जब जेलख़ाने में क़ैद था तुम मुझसे मिलने आए थे।'

"वे लोग हैरान होकर पूछेंगे—'हे ईश्वर! हमने कब आपको भूखा देखकर खाना दिया था? कब आप प्यासे थे और हमने आपको पानी पिलाया था? कब हमने आपको बेघर का पाकर जगह दी थी और कब आपको नंगा देखकर कपड़ा पहनाया था? कब हमने आप को बीमार देखा और कब हम आपसे जेल में मिलने गए?

"ईश्वर उनसे कहेगा—'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अगर तुमने अपने किसी एक छोटे से छोटे भाई के साथ भी इनमें से कोई सलूक

किया तो मेरे साथ किया ।'

"फ़िर ईश्वर दूसरी तरह के आदमियों से कहेगा—'ऐ बदक़िस्मत लोगो हटो ! तुम्हें अपने किये की सज़ा भोगनी होगी ! क्यों कि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाना नहीं दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया, मैं परदेशी था पर तुमने मुझे जगह नहीं दी, मैं नंगा था, तुमने कभी मुझे कपड़ा न दिया, मैं बीमार था और जेल में था पर तुमने कभी मेरी ख़बर न ली ।'

"वे लोग पूछेंगे—'ऐ ईश्वर ! ऐसा कब हुआ कि हमने आपको भूखा, प्यासा, नंगा, बेघर का बीमार या जेल में देखा हो और आपकी सेवा न की हो ?'

"ईश्वर कहेगा—'मैं तुमसे सच कहता हूँ, अगर तुमने किसी एक आदमी के साथ भी, किसी छोटे से छोटे आदमी के साथ भी इस तरह की बेपरवाही की तो वह मेरे साथ की ।'

"इसके बाद दोनो अपने अपने किये का फल पावेंगे ।'' *

एक बार उन्होंने लोगों से कहा—

"जो कोई मेरे पीछे चलना चाहे वह पहले अपने आप को मिटा दे, अपना क्रॉस (मौत की निशानी) अपने हाथ में ले ले और फिर मेरे पीछे पीछे चले, क्यों कि जो कोई अपना जीवन बचाने की कोशिश करेगा वह जीवन खो बैठेगा । और जो कोई मेरे या मेरे धर्म के लिये अपना जीवन क़ुरबान कर देगा वह जीवन हासिल करेगा । अगर आदमी अपनी आत्मा को खो बैठे और सारी दुनिया उसे मिल जावे

---

* Math. 25.

तो उसे क्या फ़ायदा? आत्मा के मोल की दूसरी चीज़ उसे क्या मिल सकती है?"*

"तुममें से जो कोई बड़ा बनना चाहे उसके लिये ज़रूरी है कि वह तुम्हारा सेवक बने। और तुममें से जो कोई अव्वल होना चाहे, ज़रूरी है कि वह सब से आख़ीर और सब का दास बने। क्योंकि आदमी का बेटा, [हज़रत ईसा अपने को बहुत करके 'आदमी का बेटा' (son of man) ही कहा करते थे] सेवा कराने के लिये नहीं आया, सेवा करने के लिये आया है।"

एक बार खाना तय्यार होने पर हज़रत ईसा ने अपना कपड़ा उतारकर, एक तौलिया कमर से बांधकर और एक बरतन में पानी लेकर अपने साथियों और चेलों के पैर धोने और तौलिये से पोछने शुरू कर दिये।

चेलों ने घबराकर पैर खींच लिये। हज़रत ईसा ने ज़िद की और कहा--

"आप लोग मुझे 'रब्बी' (मालिक या स्वामी) कहकर पुकारते हैं। ठीक है। अगर मैं, जिसे आप अपना 'रब्बी' कहते हैं आपके पैर धोऊंगा तो आप भी एक दूसरे के पैर धोएंगे। जैसा मैं आपके साथ करता हूँ वैसा आप सब के साथ करें। अगर आप सचमुच ही ऐसा करेंगे तो आप बड़े ख़ुशक़िस्मत होंगे।"

यहूदी हमेशा नहाकर खाना खाया करते थे और खाने से ठीक पहले उनमें हाथ पैर धोना ज़रूरी था।

---

* Mark 8.

हज़रत ईसा अपने चेलों से कहा करते थे—

"जो कोई अपनी सब धन दौलत नहीं छोड़ देगा वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"❀ "जो कुछ तुम्हारे पास है सब बेच डालो और बेचने से जो धन मिले उसे ग़रीबों और ज़रूरत वालों में बांट दो।"† "जब तक गेहूँ का दाना अपने आप को बनाए रखने की सोचता रहता है वह एक दाना ही रहता है, पर जब वह अपने को मिट्टी में मिला कर मिटा देता है तो उससे सैकड़ों नए गेहूं पैदा हो जाते हैं।"×

सारी उमर बिना ब्याहे रहना वह हर एक के लिये मुमकिन न समझते थे, पर उन लोगों को जो "अपने अन्दर और बाहर ईश्वर का राज क़ायम करने के लिये अकेले रहना चाहें और जिनमें बिना ब्याहे रहने की ताक़त हो इसका हक़दार समझते थे।'+ आदमी के लिए ऊँची से ऊँची ज़िन्दगी या स्वर्ग की ज़िन्दगी में हज़रत ईसा को ब्याह के लिए कोई गुंजाइश दिखाई नहीं देती थी।

वह ख़ुद बिना ब्याहे रहे, न उन्होंने अपने पास कभी कोई पैसा या कोई चीज़ अपनी बनाकर रखी, और न कोई अपना घर बनाया। उनकी ज़िन्दगी बिल्कुल एक सन्यासी की ज़िन्दगी थी।

❀ Luke XIV.

† Ibid XII.

× John XII.

+ Math. XIX,12.

ब्रह्मचर्य पर ईसा बहुत ज़्यादह ज़ोर देते थे। शुरू के दिनों में यह नियम था कि जो आदमी उनका चेला बनता था, वह फिर ब्याह न करता था। जो लोग पहले से ब्याह कर चुके थे उनसे भी यह उम्मीद की जाती थी कि वे ईसाई होने के बाद से पूरे ब्रह्मचर्य से रहें। पूरे ब्रह्मचर्य ही को असल उसूल माना जाता था। यही रिवाज शुरू के बौद्धों में था। सौ साल से ज़्यादह के बाद ईसाईयों ने अपने इस नियम को ढीला किया।

एक जगह मालूम होता है हज़रत ईसा ने यहां तक इजाज़त दी है कि सच्चा धार्मिक जीवन बिताने के लिये आदमी, ज़रूरत पड़े तो अपने को खस्सी बनाले।*

मरने के बाद की ज़िन्दगी को भी हज़रत ईसा पूरी तरह मानते थे।

लोगों की सेवा करने और सच्चे धर्म को फैलाने के लिये घर बार छोड़ देना वह सब के लिये ठीक और सराहने की चीज़ समझते थे। एक जगह उन्होंने कहा है।

"मैं तुमसे सच कहता हूँ जो कोई मेरे लिये और धर्म के लिये अपना घर, भाई, बहन, माँ, बाप, बच्चे या ज़मीन छोड़ कर आता है, उसे इसी दुनिया में सैकड़ों घर, सैकड़ों भाई, सैकड़ों बहनें, सैकड़ों माएँ, सैकड़ों बच्चे और सैकड़ों ज़मीनें मिल जाती हैं, इनके साथ साथ इसे तकलीफ़ें उठाने को मिलती हैं, और परलोक यानी दूसरी दुनिया में अमर जीवन मिलता है।"

---

* Math. XIX, 12.

बच्चों से उन्हें ख़ास प्रेम था ही। एक बार कुछ बच्चे उनके पास आने लगे। लोगों ने रोकना चाहा हज़रत ईसा ने कहा—

"बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत। ईश्वर का राज इन्हीं के लिये है। मैं तुमसे सच कहता हूं जो कोई बच्चों की तरह अपने ऊपर ईश्वर के राज को न अपना लेगा वह कभी ईश्वर के राज में न घुस सकेगा।"*

लोगों ने पूछा ईश्वर का राज कब और कैसे क़ायम होगा? जवाब दिया—

"ईश्वर का राज इस तरह क़ायम नहीं होगा कि तुम या कोई उसे देखकर कह सके,—'यह ईश्वर का राज है, या 'वह ईश्वर का राज है' ईश्वर का राज हर वक़्त तुम्हारे अन्दर मौजूद है। इस वक़्त भी है।"

'ईश्वर का राज' यहूदियों का एक पुराना ख़याल था जिसके कभी न कभी ज़मीन पर क़ायम होने की यहूदी किताबों में बार बार पेशीनगोई की गई थी। हज़रत ईसा ने इस ख़याल को बिलकुल दूसरा ही रूप दे दिया। 'ईश्वर का राज' ('स्वर्ग का राज्य, राम राज्य, या अल्लाह की हकूमत) उनका ख़ास फ़िक़रा है। इसके बारे में उनके कई जगह के उपदेश बड़े मारके के और ऊँचे हैं। उनका "ईश्वर का राज" कोई आदमी से बाहर की चीज़ नहीं थी। वह आत्मा या रूह के अन्दर की चीज़ है, आत्मा ही की एक हालत है।

---

* "फिर से एक छोटा बालक बनकर अपने ऊपर आप हकूमत करनी चाहिये" — लाओत्ज़े।

हज़रत ईसा का 'ईश्वर का राज' क्या चीज़ है यह लगभग उन्हीं के शब्दों में इस तरह बयान किया जा सकता है—

सब से पहले आदमी को यह जान लेना चाहिये कि आदमी और ईश्वर असल में एक हैं। आदमी और दूसरे सब जानदार भी एक हैं। अपने और दूसरों के बीच या अपने और ईश्वर के बीच जो दुई या अलहदगी दिखाई दे रही है उसकी वजह यह है कि दुनिया और दुनिया की मुहब्बत ने आदमी की समझ पर परदा डाल रखा है। दुनिया चार दिन की है और झूठ या धोखा है। ईश्वर हमेशा को है और सच यानी हक़ है। इस परदे को हटाने के लिये दुनिया से बेपरवाह होकर 'नई ज़िन्दगी' की तरफ़ जाना चाहिये। जिसकी ज़िन्दगी में कोई उसूल नहीं, कोई मक़सद या लक्ष्य नहीं, और ख़ुदी भरी है उसकी ज़िन्दगी ही मौत है। अपने अब तक के पापों के लिये दिल से पछताना और फिर इस "पछतावे की सच्चाई से मेल खाने वाले" नेक कामों में यानी बिना अपने पराए का फ़रक़ किये सबकी भलाई के कामों में लग जाना और इस तरह अपने दिल को धीरे धीरे साफ़ करना "नई ज़िन्दगी" या "दूसरी ज़िन्दगी" में दाखिल होना है। इसके लिये घरबार छोड़ना ज़रूरी नहीं*। दुनिया में रहते हुए दुनिया की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करते हुए, मोह और ख़ुदी को अलग रखकर बेलौस और बेलाग होकर लगातार सब का भला और सब की सेवा करते हुए हार जीत, सुख दुख, मान

* John XVIII, 15 & 16.

अपमान को रूह की तरक़्क़ी के सिर्फ़ साधन या ज़रिये मानते हुए, और यह समझते हुए कि सुख और ऐश आराम की निस्बत दुख और तकलीफ़ें, रूह की सफ़ाई और तरक़्क़ी ज़्यादह मदद देती हैं, "दुनिया" में यानी अपने मन को पूरी तरह क़ाबू में रखते हुए, धीरे धीरे शुद्ध और बुद्ध, पाक, साफ़ और समझदार होकर, अपने अन्दर सत्य और असत्य, हक़ और बातिल को पहचानने वाली समझ 'पैरा क्लीट' (the Holy Spirit) की मदद से ईश्वर के साथ अपनी खोई हुई एकता को फिर से पा लेना और यह पहचान लेना कि "मैं सब में हूँ, सब मुझ में हैं, सब ईश्वर में हैं, ईश्वर सब में है, हम सब और ईश्वर एक हैं," इस तरह करते करते आख़िरकार ईश्वर यानी विश्व की आत्मा में लीन या फ़ना हो जाना ही "ईश्वर के राज" में शामिल होना है। यही आदमी का मक़सद है, यही स्वर्ग है और यही मुक्ति या निजात है।

हज़रत ईसा के कई जगह के उपदेशों का क़रीब क़रीब उन्हीं के शब्दों में यह निचोड़ है। इस तरह हज़रत ईसा का 'ईश्वर के राज' का ख़याल अलग अलग बातों में वेदान्त के, अद्वैत या वहदतुलवजूद, गीता के निष्काम कर्म और स्थित प्रज्ञ और कुछ बातों में बौद्ध धर्म के निर्वाण से मिलता हुआ है।

शुरू में हज़रत ईसा गांव गांव और शहर शहर घूम कर लोगों को उपदेश देते थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने अपने बारह बड़े बड़े चेलों को दो दो करके अलग अलग तरफ़ धर्म फैलाने

के लिये भेजा। चलते वक्त हज़रत ईसा ने उन्हें हिदायत दी—

"सफ़र में एक लकड़ी भी अपने साथ न रखना, न रोटी का टुकड़ा, न झोला और न टेंट में पैसा। न जूता या चप्पल पहन कर चलना और न एक कपड़े से ज़्यादह जो तुम्हारे बदन पर हो और कोई दूसरा कपड़ा अपने पास रखना। अपनी आत्मा को पाक करने के लिये जब ज़रूरत पड़े उपवास या रोज़ा रखना और मुसीबत के वक्त अकेले में ईश्वर से प्रार्थना करना। हर जगह बीमारों और दुखियों की सेवा करना। जिस घर में जाओ पहले वहां के लोगों को 'शलोम लकेम' (Shalom Lakem—ईश्वर आपको शान्ति दे—Peace be on you) कहना। जहां जो भीख में मिले खा लेना। हमेशा ख़याल रखना कि जिस तरह फ़ाख़्ता नाम की चिड़िया से कभी किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँच सकता, इसी तरह तुमसे भी कहीं किसी कोई नुक़सान न पहुंच सके। भेड़ियों के बीच में भी तुम मेमने होकर ही रहना।"

इस पर हज़रत ईसा के सब से बड़े चेले पीटर ने पूछा—"और अगर भेड़िये मेमनों को फाड़ डालें तो क्या?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"मेमना जब एक बार मर गया तो फिर उसे भेड़िये से क्या डर? तुम उन लोगों से मत डरो जो शरीर को मार सकते हैं लेकिन आत्मा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, उस एक ईश्वर ही से डरो जिसकी हुकूमत मरने के बाद भी तुम पर बनी रहती है।........चाहे कौन्सिलों के सामने तुम्हें पेश किया जावे, सिनेगॉगों मे खड़ा करके

तुम्हारे कोड़े लगाए जावें, बादशाहों की कचहरियों के सामने तुम्हें खड़ा किया जावे, इसकी कभी कोई परवाह न करना। जब ज़रूरत होगी तुम्हारी आत्मा तुम्हें आप बता देगी कि किस सवाल का क्या जवाब दो। लोग तुम्हारे शान्ति और प्रेम के सन्देश का मुक़ाबला हिंसा और नफ़रत से करेंगे। हो सकता है अपने दुशमनों के सामने तुम्हें एक शहर से दूसरे शहर और दूसरे से तीसरे धक्के खाने पड़ें, फिर भी आख़ीर तक सब सहते रहना। डरना मत। वह अल्लाह ईश्वर जो छोटी छोटी चिड़ियों के बच्चों के धरती पर आते ही उनका बचाव करने लगता है,...... वह तुम्हारे साथ है। तुम्हें खेंचातानी की दुनिया में भेजा जा रहा है। हो सकता है तुम्हारे प्यारे से प्यारे और सगे से सगे लोग भी तुम्हारे ख़िलाफ़ दुनिया से मिल जावें पर जो सचमुच मेरे पीछे चलना चाहते हैं उन्हें सच्चाई के लिये सब कुछ त्यागने को तय्यार रहना चाहिये। उन्हें अपना कफ़न सर से बांधकर चलना चाहिये।"*

हज़रत ईसा के कुछ चेलों ने एक बार उनसे शिकायत की कि किसी शहर के लोग, जब हम उनके यहां प्रचार के लिये जाते हैं तो, हमारा निरादर और बेइज़्ज़ती करते हैं। उन्होंने हज़रत ईसा से प्रार्थना की कि आप उन्हें बददुआ यानी शाप दीजिये, हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"आदमी का बेटा आदमियों की जानें लेने नहीं आया उन्हें

* "Life of Christ" by Farrar.

बचाने के लिए आया है।"*

हज़रत ईसा के आम लोगों को उपदेश देने के दो तरीक़े थे। एक छोटी छोटी कहावतों या छोटी छोटी बातों में और दूसरे छोटे छोटे क़िस्सों या कहानियों में। इस तरह के बहुत से क़िस्से इञ्जील में मौजूद हैं। महात्मा बुद्ध का ढङ्ग भी यही था। "इस प्यारे तरीक़े की कोई मिसाल या उसका कोई नमूना हज़रत ईसा को यहूदी धर्म की किसी किताब से न मिला था। लेकिन बौद्ध किताबों में ठीक वैसे ही और उसी ढंग के क़िस्से भरे हुए हैं जैसे इञ्जील में।"†

नमूने के तौर पर हज़रत ईसा के तीन क़िस्से हम नीचे देते हैं। ये तीनों एक ही सचाई को समझाने के लिये कहे गए थे।

कुछ लोगों ने हज़रत ईसा से पूछा—

"आप गिरे हुए लोगों और जाति बाहर किये हुए लोगों से इतना मेल जोल क्यों रखते हैं, उनके साथ क्यों खाते पीते हैं?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया—

"किसी आदमी के पास सौ भेड़ हों और उसकी एक भेड़ कहीं भटक जाय तो वह बाक़ी निन्नानवे भेड़ों को छोड़कर उस एक को खोज में निकल पड़ता है और जब वह मिलती है तो प्रेम से उसे अपने कन्धे पर बैठा लेता है और लौट कर ख़ुशी मनाता है कि मेरी

* Luke IX, 52 et seq, Renan ch. XVIII.

† "Life of Jesus", by Renan, p. 136.

खोई हुई भेड़ मुझे मिल गई। ऐसे ही एक भी गिरे हुए या भटके हुए आदमी के पछताने और ठीक रास्ते पर लौट आने पर परमेश्वर के यहाँ जो ख़ुशी मनाई जायगी वह निन्नानवे भले आदमियों के लिये नहीं मनाई जायगी जिन्हें पछताने की ज़रूरत ही नहीं है।"

"ऐसे ही एक औरत के पास दस रुपए थे। उसका एक रुपया खो गया। वह दिया जलाकर सारे घर में उसे ढूँढ़ती फिरी। जब वह मिल गया तो बहुत ख़ुश होकर अपनी सहेलियों से कहने लगी मेरा खोया हुआ रुपया मिल गया।"

"इसी तरह एक आदमी के दो बेटे थे। छोटा बेटा कुछ आवारा था। उसने बाप से कहा मेरे हिस्से की आधी जायदाद मुझे दे दीजिये। बाप ने जायदाद बाँट दी। वह बेटा थोड़े दिनों के अन्दर अपने हिस्से की जायदाद बेचकर रुपया लेकर परदेश निकल गया। वहां उसने खेल तमाशों में सब धन गंवा दिया। फिर पेट भरने के लिये उसे किसी आदमी के यहां सुअर चराने की नौकरी करनी पड़ी। उसे बड़ी तकलीफ़ हुई। उसे जानवरों से भी बुरा खाना मिलता था। आख़ीर में उसे होश आया। उसने सोचा—'मेरे बाप के यहाँ बहुत से मज़दूर हैं जो मुझसे अच्छा खाना खाते हैं, और मैं भूखों मर रहा हूं। मैं अपने बाप के पास जाकर उनसे कहूँगा—पिता जी, मैंने आप का कहना नहीं माना, मैंने पाप किया, मैं आपका बेटा कहलाने के क़ाबिल नहीं हूं। मुझे अपने यहां मज़दूरों में रख लीजिये। वह गया। बाप ने उसे दूर ही से आता देखकर दौड़कर गले लगा लिया। बेटे ने वही बात जो सोची थी अपने बाप से कही। बाप ने तुरत नौकरों

को हुक्म दिया—इसे ले जाओ, नहलाओ, अच्छे अच्छे कपड़े पहनाओ, एक सोने की अंगूठी पहनने को दो। अच्छे अच्छे खाने बनवाओ, लोगों को दावत दो और ख़ुशी मनाओ कि मेरा बेटा मर कर फिर जी गया। मैं अपना खोया हुआ बेटा फिर पा गया। बड़े बेटे को जब इस सब का पता चला वह नाराज़ हुआ। उसने बाप से जाकर कहा—मैंने इतने बरसों तक आपकी सेवा की, आपका एक भी कहना नहीं टाला, पर आपने मेरे लिये कभी इतनी ख़ुशी नहीं मनाई। मेरा भाई अपनी सब धन दौलत खेल तमाशों में लुटाकर आज आया तो आप इतना बड़ा जश्न कर रहे हैं ? बाप ने जवाब दिया—मेरे बेटा ! तुम तो हमेशा मेरे साथ थे ही। जो कुछ मेरा है तुम्हारा है। पर तुम्हारा भाई मरकर जिया है; वह खो गया था और फिर आ गया है। इससे बढ़कर ख़ुशी की और क्या बात हो सकती है ?"

इस तरह के छोटे छोटे चुटकले इंजील में भरे हुए हैं। ये सब क़िस्से आम लोगों की आए दिन की ज़िन्दगी में से लिये गए हैं। जैसे एक राज का क़िस्सा, सौदागर का क़िस्सा, दरज़ी का क़िस्सा, किसान का क़िस्सा, एक ब्याह, दूल्हा और ब्याह की ज्योनार का क़िस्सा, एक अमीर और एक ग़रीब का क़िस्सा, शराबी का क़िस्सा, क़र्ज़दार और साहूकार का क़िस्सा, चोर और चौकीदार का क़िस्सा, एक अन्धा और उसे राह दिखाने वाला या और उसका बच्चा, बच्चों का कुत्तों को रोटी डालना, और इसी तरह के और। यही हज़रत ईसा के उपदेश देने का ख़ास ढङ्ग था।

लोगों ने कई बार उनसे कहा कुछ करामात या मोजज़ा दिखाइये। उन्होंने हमेशा इस तरह की मांगों पर दुखी होकर किसी तरह की भी अलौकिक बात या करामात कर सकने के अपने को नाक़ाबिल बताया।*

इस पर भी इंजील में हज़रत ईसा की करामातों का ज़िक्र जगह जगह उसी तरह मिलता है जिस तरह महात्मा बुद्ध, हज़रत मूसा, हज़रत मुहम्मद और दूसरे पैग़म्बरों, महापुरुषों, सन्तों और वलियों की करामातों का दूसरी किताबों में।

*Mark VIII—12 etc.

लोगों का उनके ख़िलाफ़ हो जाना

फ़िलिस्तीन और ख़ास कर गैलिली की हालत उन दिनों बहुत बिगड़ी हुई थी। मज़हबी और दूसरे समाजी रीत रिवाजों पर से लोगों का यक़ीन हटता जा रहा था। रोम वालों के ज़ुल्म बढ़े हुए थे। किसी भी नेता की आवाज़ पर लोग चलने लगते थे और फिर आए दिन कुचले जाते थे। सरकारी लोगों की हत्याएं चोरी छिप्पे से इधर उधर होती रहती थीं। चारों तरफ़ बदअमनी और अशान्ति थी। दिमाग़ गरम और दिल बेचैन थे। ज़्यादहतर लोग घबराए हुए थे। किसी को ठीक राह न सूझती थी। ऐसी हालत में आम लोगों के ऊपर हज़रत ईसा के शान्ति और प्रेम भरे उपदेशों का बड़ा अच्छा असर पड़ता था। लोगों को सचमुच बाहर के उस ईश्वरी राज के मुक़ाबले में जिसका सपना यहूदी देख रहे थे, अपनी आत्मा के अन्दर एक ऐसा ईश्वरी राज दिखाई देने लगा जो उन्हें सन्तोष देने वाला था और जिस तक उन्हें अपनी पहुँच मालूम होती थी।

साथ ही उनके उपदेशों और उनके रहन सहन में बहुत सी बातें ऐसी थीं जो पुराने कट्टर ख़याल के लोगों और ख़ास कर

यहूदी मन्दिरों के पुजारियों और पुरोहितों को अच्छी न लग सकती थीं। जैसे—

(१) जो लोग गिरे हुए माने जाते थे उनके साथ और जाति बाहर किये हुए लोगों के साथ मेल जोल और खान पान रखना।

(२) बहुत से पुराने रीति रिवाजों, मन्दिरों के पूजा पाठ और जानवरों की बलि को बुरा कहना।

(३) अपने को "ईश्वर का बेटा" कहना और कभी कभी अपने को और ईश्वर को एक बताना।

✓ एक दिन पुराने ख़याल के एक यहूदी ने जो अपने को बड़ा पाक और ऊँचा मानता था हज़रत ईसा को खाने के लिए बुलाया। वह गए। उसी शहर में एक जवान बाज़ारी औरत रहती थी जिसके दिल में हज़रत ईसा के उपदेश घर कर चुके थे। ख़बर सुनकर वह अपनी इत्र की शीशियां लेकर उनके पास आई। उसने वे शीशियाँ हज़रत ईसा के पैरों पर उलट दीं और फिर अपने आंसुओं से उन पैरों को तर कर दिया। इसके बाद उसने अपने बालों से उन पैरों को पोंछना शुरू किया। घर के मालिक को उसका आना बुरा लगा। उसने कहा आपने इस नापाक औरत को अन्दर क्यों आने दिया और अपना बदन क्यों छूने दिया? हज़रत ईसा ने जवाब दिया इसके दिल के प्रेम और पछतावे ने इसके पिछले पापों को धो डाला। फिर प्रेम में भर कर उस औरत से कहा—"बहन, जा तसल्ली रख, तेरी

श्रद्धा ने तुझे बचा लिया, फिर पाप न करना।*

इस औरत का नाम मेरी था, उसकी एक बहिन का नाम मार्था था और भाई का लाज़रस। हज़रत ईसा को इन तीनों से प्रेम था। लाज़रस की बीमारी के दिनों में एक बार कई दिन उनके घर रहकर हज़रत ईसा ने उसकी सेवा की और उसे अच्छा कर दिया। वह उनके साथ खाते पीते थे। यह बात यहूदी रिवाज के इतने ख़िलाफ़ थी और बहुत से यहूदी इससे इतने नाराज़ हो गए कि हज़रत ईसा को कुछ दिनों तक शहर छोड़कर जङ्गल में चला जाना पड़ा।

ठीक इसी तरह का सलूक वह उन अमीर सरकारी अफ़सरों के साथ करते थे जिनसे यहूदी नफ़रत करते थे और जिनसे यहूदियों ने सब तरह का मेल जोल बन्द कर रखा था। हज़रत ईसा को जितना प्रेम ग़रीबों से था उतना ही सरकारी लोगों से। दोनों पर उनका असर पड़ता था। महात्मा यहूना और महात्मा ईसा दोनों का प्रेम सब के साथ एक बराबर था। उसमें भले बुरे का कोई फ़रक़ न था। दोनों ही पर उनका असर भी पड़ता था।

एक बार हज़रत ईसा एक शहर में गए। वहां के सरकारी टैक्स वसूल करने वालों का अफ़सर ज़क्कई बड़ा अमीर था। उसमें हज़रत ईसा के दर्शनों की चाह थी। उसकी इस चाह को देखकर हज़रत ईसा उसी के यहां ठहरे। उसने इस ख़ुशी में

* Luke VII

हज़रत ईसा के उपदेश सुनकर अपनी आधी दौलत फ़ौरन ग़रीबों में बांट दी और बाक़ी आधी इस लिये रख ली कि जिस किसी का धन मैंने ज़ुल्म से लिया हो उसे इस बाक़ी आधे में से मैं चौगुना करके लौटा दूंगा। उसने इसका ऐलान भी कर दिया। हज़रत ईसा ने उसे दुआ दी और मुक्ति यानी निजात का यक़ीन दिलाया।

यहूदियों को इस बात का घमण्ड था कि हम हज़रत इबराहीम की नसल से हैं, इसीलिये हमारे करतूत चाहे कैसे भी हों हम मुक्ति के हक़दार हैं, और कोई हमसे पहले मुक्ति नहीं पा सकता। हज़रत ईसा इस घमण्ड को बुरा और झूठा बताते थे।

एक बार कुछ यहूदी धर्म गुरुओं से उन्होंने कहा—"मैं तुमसे अब कहता हूँ बाज़ारी औरतें और रोम के सरकारी नौकर दोनों तुमसे पहले ईश्वर के राज में पहुंचेंगे। यहूना ने तुमसे नेक बनने का रास्ता बतलाया, तुमने नहीं माना। सरकारी नौकरों और बाज़ारी औरतों ने माना, और तुम अब भी ध्यान नहीं देते*।

"ईश्वर का राज तुमसे छीनकर दूसरी क़ौम को दिया जावेगा, वही उसका फल खावेगी।"

"जिन लोगों को अपने धार्मिक होने और पाक होने का घमण्ड है उनकी निस्बत उन दूसरों की दुआएँ कहीं जल्दी सुनी जावेंगी

* Math XVI

जिन्हें अपने गुनाहों के लिये सच्चा पछतावा है और जो शर्माते हैं।"

यहूदियों में भी यहूदा इलाक़े के रहने वाले अपने ही को असली यहूदी मानते थे। समरिया के रहने वाले समरितन कहलाते थे। दोनों एक ही दादा की औलाद और एक ही मज़हब के मानने वाले थे, फिर भी दोनों दो अलग अलग जातियां बन गईं थीं। यहूदा वाले समरितन लोगों को छोटा और नापाक समझते थे और उनका छुआ पानी न पीते थे। उन्हें यरुसलम के मन्दिर के अन्दर पूजा करने तक की इजाज़त न थी। इसी लिये इन ऊँचे "यहूदियों" के यरुसलम के मन्दिर के मुक़ाबले का समरिया वालों ने अपना एक अलग मन्दिर गिरिज़म पहाड़ पर बनवा लिया था। दोनों अपने अलग अलग मन्दिरों में जाते थे। खानपान और छुआछूत के फ़रक़ यहूदियों में आजकल के हिन्दुओं से किसी तरह कम न थे।

समरिया इलाक़े में एक ख़ास शहर शेकेम (Shechem) था। जो सड़क यरुसलम से गैलिली जाती थी वह शेकेम के पास से जाती थी। सड़क से शेकेम शहर आध घण्टे का रास्ता था। छुआछूत इस हद को पहुँच गई थी कि बहुत से 'यहूदी' यरुसलम से गैलिली जाते हुए एक लम्बे रास्ते से चक्कर खाकर जाते थे पर शेकेम के इतने पास से निकलना ठीक न समझते थे। इन यहूदियों में एक कहावत थी—"समरितनों के हाथ की छुई रोटी और सुअर का गोश्त बराबर हैं।" उनके कुंए से कोई यहूदी पानी न पी सकता था।

हज़रत ईसा के शेकेम में कई भक्त थे। ईसा उस शहर में ठहरते भी थे। लोगों के रोकने पर एक बार उन्होंने कहा—

"फ़र्ज़ करो (एक शहर) की सड़क के ऊपर कोई परदेसी घायल पड़ा हुआ है। एक यहूदी पुरोहित पास से निकला और उसे देखकर भी बिना रुके अपने रास्ते चला गया। इसके बाद कोई दूसरा पुजारी वहां से निकला। वह भी देख कर चल दिया। फिर एक समरितन वहाँ से निकला। उसे परदेसी को देख कर दया आई। उसने रुककर उसके ज़ख्मों की मल्हम पट्टी की। अब, इन तीनों में सच्चा धर्मात्मा कौन है? जिनके दिलों में एक दूसरे के लिये दया है उन सब की बिरादरी एक है। इसका मज़हबी एतक़ाद या मानताओं से कोई वास्ता नहीं।"

एक बार यरुसलम से गैलिली जाते हुए हज़रत ईसा शेकेम के पास वाली सड़क से जा रहे थे। शेकेम के पास पहुंच कर वह एक कुंए के ऊपर ठहर गए। दो पहर का वक्त था। उनके साथी गांव से खाने का सामान लेने के लिये चल दिये। इतने में शेकेम की एक समरितन औरत कुंए से पानी भरने के लिये आई। हज़रत ईसा ने उससे पीने के लिये पानी मांगा। उसने हैरान होकर पूछा—

"क्या आप 'यहूदी' होकर मेरे हाथ का पानी पी लेंगे?" हज़रत ईसा ने उसे समझाया कि यह सब छुआछूत झूठी है। उसने फिर कहा—"यहूदी हमेशा से यरुसलम के मन्दिर में पूजा करते हैं और हम इस सामने वाले गिरिज़म के मन्दिर में।" हज़रत ईसा ने जवाब

दिया—"वह ज़माना आ रहा है जब हम सब अपने बाप ईश्वर की पूजा न यरुसलम में करेंगे और न इस पहाड़ पर। ईश्वर हर जगह है। वही सब की जान है। सबके अन्दर मौजूद है। सच्ची पूजा करने वाले अपनी आत्मा के अन्दर ही आत्मा के रूप में और सच यानी हक़ के रूप में उस परमात्मा की पूजा करेंगे। इसी तरह की पूजा करने वाले उस ख़ुदा को प्यारे होंगे जो सब का बाप है।"

साथियों के गाँव से लौटने पर हज़रत ईसा और उनके साथियों ने बड़े प्रेम के साथ उस औरत के हाथ से पानी पिया।

हज़रत ईसा दूसरों के साथ नेकी करने को जितना ज़रूरी बताते थे, एक ईश्वर को पूजने या कई देवताओं को पूजने, निराकार रूप में पूजने या साकार की पूजा करने या पूजा के किसी ख़ास ढंग को उतना ज़रूरी न बताते थे। कट्टर यहूदी सिवाय एक 'याहवे' के और किसी देवी देवता के पूजने वाले को और सब ग़ैर यहूदियों को अधर्मी मानते थे और मुक्ति का हक़दार न समझते थे। उनका 'शोमा' (कलमा या मूल मंत्र) था—"सुनो! ऐ इसराइल! तुम्हारा ईश्वर एक है।"

इस पर भी हज़रत ईसा नेक काम करने वाले हर आदमी को चाहे वह किसी की भी और किसी भी तरह पूजा करता हो, मुक्ति का हक़दार बताते थे।

कई ग़ैर यहूदी अपने अपने देवताओं को अपने अपने ढंग से पूजते हुए भी हज़रत ईसा के मानने वालों में थे। हज़रत ईसा

इन सब बातों को कम ज़रूरी और दिल की सफ़ाई और दूसरों के साथ नेकी करने को असली चीज़ मानते, और इस तरह के सब लोगों को मुक्ति का यक़ीन दिलाते थे।

थोड़े बहुत लोग कभी कभी दूसरे धर्मों को छोड़कर यहूदी धर्म में आ जाते थे। जन्म के यहूदी उन्हें अपने से नीचा समझते थे और नफ़रत की निगाह से देखते थे। हज़रत ईसा ने इस तरह से लोगों के साथ बराबरी का बरताव करके उन्हें अपने प्रेम में बाँध रखा था। वे यहूदियों से कहा करते थे—

"पूरब और पच्छिम, उत्तर और दक्खिन सब तरफ़ से आकर बहुत से लोग बहिश्त (स्वर्ग) में (यहूदी पैग़म्बरों) इबराहीम, इसाक़ और याक़ूब के बराबर में बैठेंगे, जब कि इन पैग़म्बरों की नसल के बहुत से लोग अंधेरे में ढकेल दिये जावेंगे, जहाँ वे दाँत पीसेंगे और रोवेंगे।*

एक दफ़े लोगों ने हज़रत ईसा से किसी बात पर धर्म की पुरानी किताबों का हवाला (प्रमाण) मांगा। उन्होंने जवाब दिया।

"तुम पुरानी किताबों को ढूंढ़ते हो और समझते हो कि उनके पन्नों में तुम्हें अमर ज़िन्दगी मिल जावेगी, लेकिन मेरी बात नहीं सुनते जिससे तुम्हें सचमुच अमर ज़िन्दगी मिल सकती है।"

हज़रत ईसा किसी भी किताब की निस्बत अपने अन्दर की आवाज़ को ज़्यादह पक्का प्रमाण मानते थे।

---

* Math. VIII.

पुराने ख़याल के यहूदी हर सनीचर को 'सब्बथ' मनाते थे। उनके लिये वह दिन बहुत पाक और काम न करने का दिन था। घर में झाड़ू देना, चूल्हा जलाना, खाना पकाना और कई ऐसे ही काम उस दिन गुनाह समझे जाते थे। अगर दुशमन उस दिन हमला करे तो अपने बचाव के लिए हथियार उठाना भी उस दिन पाप माना जाता था। पर दूसरी तरफ़ यहूदी मन्दिरों के अन्दर आग में आहुति देने के लिये उस दिन और दिनों से दुगने जानवर काटे जाते थे। ख़तना करना उस दिन जायज़ था पर किसी बीमार का इलाज़ करना गुनाह था। इन रिवाजों का ज़्यादह हाल एक दूसरी किताब में दिया जा चुका है। हज़रत ईसा जब उस दिन रोगियों की सेवा करते थे तो कट्टर यहूदी इसे भी बुरा कहते और रोकते थे। हज़रत ईसा इस पुराने रिवाज को तोड़ना चाहते थे।

गैलिली इलाक़े में एक दिन सनीचर को वह अपने कुछ चेलों के साथ नाज के एक खेत से जा रहे थे। कुछ चेलों ने जो भूखे थे कुछ नाज की बालें तोड़कर खालीं। बिना पूछे बालें तोड़ने पर फ़िलिस्तीन में उन दिनों कोई न रोकता था पर उस दिन सनीचर था। सनीचर को फ़सल काटना या उसे पीट कर नाज अलग करना दोनों मना थे, और जो कोई ऐसा करता था उसे पत्थर मार मार कर मार डाला जाता था। हज़रत ईसा के चेलों का बाल तोड़ना फ़सल काटना समझा गया और दाने निकालना नाज को पीटना। लोगों ने एतराज़ किया। हज़रत

ईसा ने जवाब दिया—

"क्या आप लोगों ने नहीं पढ़ा कि हज़रत दाऊद और उनके आदमियों ने भूख की हालत में मन्दिर के अन्दर जाकर चढ़ावे की उन रोटियों को खाया था जिनके खाने का सिवाय मन्दिर के पुजारियों के और किसी को हक़ नहीं होता।...सब्बथ आदमी के भले के लिये बनाया गया है, आदमी सब्बथ के लिये नहीं बनाया गया।...सब्बथ के दिन आप लोग मन्दिर के आग के कुण्ड में जानवरों की आहुति देते हैं, क्या इनसे सब्बथ नापाक नहीं होता?...पुरानी किताबों में ही लिखा है 'ईश्वर जानवरों की बलि और आहुति से ख़ुश नहीं होते। ईश्वर दया करने से ख़ुश होते हैं।'"*

जब कुछ लोगों ने हज़रत ईसा के सनीचर के दिन रोगियों का इलाज करने पर एतराज़ किया तो उन्होंने कहा—

"क्या तुम सनीचर के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर पानी पिलाने के लिये नहीं ले जाते? तो फिर क्या ईश्वर के इन बच्चों (बीमारों) को उस दिन दुख से छुड़ाना गुनाह है? अगर तुम्हारा बैल या गधा सनीचर के दिन कुएं में गिर जावे तो क्या तुम उसे तुरत निकालने की कोशिश नहीं करते?"

एक दूसरे मौक़े पर उन्होंने कहा—

"तुम सनीचर को बच्चों का ख़तना कर लेते हो ताकि मूसा की आज्ञा न टूटे तो फिर अगर मैं सनीचर को किसी का कोई अंग काटने की जगह उसके सारे बदन का अच्छा करने की कोशिश करूँ तो तुम

---

* Mark and Math.

मुझसे नाराज़ क्यों होते हो ? ऊपरी निगाह से देखकर राय न बनाओ। सोचो और इन्साफ़ करो।"

हज़रत ईसा का जनता पर बड़ा असर था। इसलिए उन्हें या उनके किसी चेले को इसके लिये सज़ा नहीं दी जा सकी। पर यहूदी धर्म के ठेकेदारों में उनसे नाराज़ी बढ़ती गई। आगे चलकर हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाने के वक्त जो इलज़ाम उन पर लगाए गए उनमें से एक यह था कि वे सब्बथ के क़ायदों को नहीं मानते।

कट्टर यहूदी खाना खाने से पहले एक ख़ास ढङ्ग से कोहनी तक हाथ और घुटनों तक पैर धोते थे। बरतनों की सफ़ाई में वे ख़ास तरह की बारीकियों से काम लेते थे! बाज़ार की कोई चीज़ वे बिना धोए काम में न लाते थे। ऐसे ही और बहुत से क़ायदे थे। 'तालमुद' के बहुत बड़े बड़े हिस्से में ऐसे ही क़ायदे भरे हुए थे। यहूदी इन्हें 'ताहरोथ' (Tahroth, अरबी-'तहारत') कहते हैं। कई अध्याय सिर्फ़ 'यदाईम' (yadaim) यानी हाथ धोने का तरीक़ों पर हैं। छब्बीस प्रार्थनाएं दी हुई हैं जो इनमें से अलग अलग कामों के साथ अलग अलग पढ़ी जानी चाहियें। हज़रत ईसा और उनके साथी आम तौर पर इन बाहरी बातों को नहीं मानते थे। एक बार हज़रत ईसा ने लोगों के पूछने पर उनसे कहा—

"आप लोग ख़ुदा की आज्ञाओं को तोड़ते हैं और आदमी के चलाए हुए रिवाजों का इतना ख़याल रखते हैं। बरतनों की सफ़ाई

और साग तरकारी धोने में इतनी बारीकी करते हैं, और आदमियों के साथ न्याय करने और ईश्वर से प्रेम करने की परवाह नहीं करते। पहले अपने अन्दर को साफ़ करो, फिर बाहर की सफ़ाई का ख़याल करना।"

इस तरह के सैकड़ों पुराने रीति रिवाज कट्टर यहूदियों की नज़रों में धर्म के ज़रूरी हिस्से थे और हज़रत ईसा की निगाह में सच्ची धार्मिक ज़िन्दगी में रुकावटें! मन्दिर के लम्बे चौड़े पूजा पाठ और जानवरों की बलि को वह हमेशा बुरा कहते थे।

इन सब बातों से बढ़कर पाप पुराने ख्याल के लोगों की नज़रों में हज़रत ईसा का अपने को "ईश्वर का बेटा" कहना और इस तरह की बातें कहना "मैं और मेरा बाप दोनों एक ही हैं", यहूदियों की निगाह में यह नास्तिकता यानी लामज़हबी और गुनाह था। हज़रत ईसा के सारे उपदेशों को पढ़कर उनकी हद दरजे की दीनता, और इनकसारी में किसी तरह का शक नहीं रह जाता। उनका ईश्वर में यक़ीन बहुत पक्का था। उनकी ईश्वर भक्ति भी बहुत गहरी थी। ईश्वर को वह सब का बाप और सब आदमियों को एक दूसरे का भाई मानते थे। अपने ईश्वर के सामने रोकर रात रात भर वह दुआएं करते रहते थे। इंजील में बार बार उन्होंने अपने को "आदमी का बेटा" (the son of man) कहा है, और कुछ इने गिने मौक़ों पर "ईश्वर का बेटा" कहा है, लेकिन इसमें शक नहीं वह हिन्दु-

स्तान के अद्वैत वेदान्त (वहदतुलवदूद) और यूनानी फ़लसफ़े दोनों की जानकारी रखते थे। ये सब खयाल उनके ज़माने से पहले फ़िलिस्तीन में फैल चुके थे। हज़रत ईसा पर इनका काफ़ी असर था। उनका अपने अन्दर का तजरुबा या अनुभव भी उन्हें यही बताता था। हज़रत ईसा के मुँह से अकसर इस तरह की बातें निकलती रहती थीं—

"इस दो दिन के और मिट जाने वाले खाने के लिए कोशिश मत करो बल्कि उस हमेशा रहने वाले खाने की कोशिश करो जिससे तुम्हें हमेशा की ज़िन्दगी या अनन्त जीवन मिले। आदमी के बेटे से तुम्हें वह जीवन मिलेगा, क्योंकि बाप ईश्वर ने उसे सच्चा ठहराया है।"

"जो मेरी बात मानता है और उस पर अमल करता है वह मेरे अन्दर रहता है और मैं उसके अन्दर रहता हूँ।"*

ज़िन्दगी आत्मा यानी रूह से है। जिस्म से कभी नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं वे आत्मा से वास्ता रखती हैं और ज़िन्दगी से।"

"तुम ईश्वर को नहीं जानते। मैं जानता हूँ। क्यों कि मैं उसी के पास से आया हूं। उसने मुझे भेजा है।"

"जो प्यासा हो मेरे पास आवे और पिये। जो मेरी बात मान लेगा उसके अन्दर से ज़िन्दा पानी (अमृत या आबे हयात) के चश्मे बहने लगेंगे।"

---

*"ये भजन्ति तुमाम् भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्"—गीता, अध्याय ९-२९।

"मैं असली और ज़िन्दा रास्ता हूँ।

"मैं दुनिया की रोशनी (ज्योति) हूं। जो मेरे पीछे चलेगा, वह अँधेरे में न रहेगा। वह ज़िन्दगी की रोशनी का आनन्द लेगा।"

"जो तुम मुझे जान लोगे तो मेरे बाप को भी जान लोगे।"

"तुम ख़ुदा का नाम लेते हो पर तुम उसे नहीं जानते। मैं उसे जानता हूँ और उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ। तुम्हारे दादा इबराहीम को मानता हूँ। तुम्हारे दादा इबराहीम मेरा दिन देखना चाहते थे। उन्होंने मेरा दिन देखा और ख़ुश हुए।" लोगों ने पूछा—"आपकी उमर तो पचास साल की भी नहीं है। इबराहीम ने आपको कैसे देखा था?" जवाब दिया—"मैं तुमसे सच कहता हूं इबराहीम के जन्म से भी पहले मैं मौजूद था।"

कहते हैं इस पर लोग पत्थर उठा उठाकर हज़रत ईसा को मारने लगे। तब उन्होंने कहा—

"जिसने मुझे देख लिया उसने मेरे बाप को भी देख लिया।"*

"जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूं मैं नहीं कह रहा हूँ। वही मेरा बाप जो मेरे घट में है यह सब कह रहा है।"†

"मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है।"+

---

*"जिसने अपने को जान लिया उसने अल्लाह को जान लिया।"

—मोहम्मद साहब

†"मैंने तीर नहीं फेंका अल्लाह ने फेंका।"

—मोहम्मद साहब

+ "……सयोगी मयि वर्त्तते"—गीता, अध्याय ६-३१।

"मैं बाप में हूँ और तुम मुझमें हो और मैं तुममें हूँ।*

"मैं अपनी भेड़ों का अच्छा रखवाला हूँ। अच्छा रखवाला अपनी भेड़ों के लिये अपनी जान दे देता है।"

मैं और मेरा बाप दोनों एक हैं।" इस फ़िक़रे पर भी यहूदियों ने उन्हें मारने के लिये पत्थर उठाए। हज़रत ईसा ने पूछा—

"मैंने तुम्हारी बहुत सेवाएं की हैं। तुम किस सेवा के लिये मुझे पत्थर मारते हो?"

उन्होंने जवाब दिया—

"हम किसी सेवा के लिये नहीं बल्कि इस कुफ्र (Blesphemy) के लिये तुम्हें पत्थर मारते हैं कि आदमी होकर तुम अपने को ईश्वर बताते हो। हज़रत ईसा ने उन्हें एक पुरानी किताब दाऊद के भजनों का हवाला देकर बताया जिसमें लिखा है 'तुम सब ईश्वर हो।'† और फिर यही कहा—'बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ,।"

---

* सर्वभूतस्थमात्मानं, सर्वभूतानि चात्मनि—गीता, ६-२९.
यो माम पश्यति सर्वत्र सर्वम च मयि पश्यति—गीता, ६-३०.
युक्तात्मानः सर्व मेवाविशन्ति—उपनिषद।

† Psalm 28.

"They who see but one in all the changing many foldness of this universe, unto them belongs eternal truth, unto none else unto none else"—The Vedas.

लोगों ने फिर उन्हें सताना चाहा। वह जंगल में चले गए।

हज़रत ईसा की दुआओं में भी दूसरे आदमियों की तरफ़ इशारा करते हुए इस तरह के शब्द आते थे—

"ऐ बाप! मैं इनमें लीन (फ़ना) हो जाऊँ और तू मुझमें ताकि सब पूरी तरह एक हो जावें।……दुनिया के बनने के पहले से तू मुझसे प्रेम करता था। ऐ न्याय करने वाले बाप! दुनिया ने तुझे नहीं जाना। मैंने तुझे जाना है। मैंने उनसे कहा है कि तूने मुझे भेजा है। यही मैं उनसे कहूंगा ताकि जो प्रेम तूने मेरे साथ किया है वही प्रेम उनमें भी जागे, और मैं उनमें रहूं।" *

हज़रत ईसा के इस तरह के फ़िक़रे और गीता के अन्दर श्री कृष्ण का उपदेश जगह जगह एक दूसरे की गूंज मालूम होते हैं।

लेकिन पुराने ख़याल के यहूदियों की निगाह में इस तरह की बातें कुफ़्र या नास्तिकता थीं। आत्मा (रूह) और परमात्मा (ख़ुदा) के बारे में उनके ख़याल बिलकुल दूसरे ही ढङ्ग के थे। हज़रत ईसा को सूली दिये जाने के वक़्त उन पर एक बड़ा इलज़ाम यही लगाया गया था कि वह अपने को "ईश्वर का बेटा" कहते हैं। हज़रत ईसा ने सूली पर भी ईश्वर को अपना बाप "अब्बा" कहकर पुकारा।

इस एक बात में हज़रत ईसा की क़ुरबानी (बलिदान) से

* John.

नौ सौ साल बाद मशहूर मुसलिम सूफ़ी हुसैन मनसूर का बलिदान काफी मिलता है।

बहुत से लोग हज़रत ईसा को पागल कहते थे। बहुत से नास्तिक कहते थे। कई बार उन पर पत्थर फेंके गए। कई शहरों से उन्हें धक्के दे दे कर निकाल दिया गया। उन्हें हर तरह की तकलीफ़ें दी गईं। आम लोग अकसर उनके पीछे पीछे फिरते और उनकी तारीफ़ करते थे। लेकिन अपने को उनका पैरो या चेला कहने वालों की तादाद उनके जीवन में कभी मुट्ठी भर से ज़्यादह नहीं हुई। इन मुट्ठी भर हिम्मत वाले लोगों का भी जगह जगह बायकाट किया गया।

कम से कम एक बार इस तरह के बुरे बरताव से उकताकर हज़रत ईसा कुछ दिनों के लिये गैलिली छोड़कर समुद्र के किनारे पर उन शहरों में चले गए जिनमें रोमियों और ग़ैर यहूदियों की बस्तियां थीं। उन लोगों ने बड़े प्रेम से यहूदियों से बढ़कर उनकी आव भगत की और हज़रत ईसा ने उनके ईश्वर को पूजने के ढङ्ग पर हमला किये बिना उन्हें अपनी बुनियादी सच्चाइयों का उपदेश दिया।

यरुसलम जाना

बसन्त के दिन आए। उस मौसम में 'पासोवर' के सालाना त्योहार पर फ़िलिस्तीन भर के तरह तरह के ख़याल के लोग और विद्वान यरुसलम में जमा हुआ करते थे। लाखों की भीड़ होती थी। कई दिन तक शहर में जगह जगह और ख़ास कर मन्दिर के मैदान में मज़हबी मामलों पर बहसें और शास्त्रार्थ होते रहते थे। हज़रत ईसा इस मौक़े को हाथ से खोना न चाहते थे। यहूदियों के सबब से बड़े क़ौमी मन्दिर की इज्ज़त भी एक हद तक उनके दिल में मौजूद थी। यह उस मन्दिर को ईश्वर की सच्ची पूजा का घर बनाना चाहते थे। हज़रत ईसा ने यरुसलम जाने का इरादा किया। यरुसलम जाने से पहले वह एक बार जार्डन नदी के किनारे वहाँ गए जहाँ उनके गुरू यहूना रहा करते थे। वहां कई दिन तक ठहरने से हज़रत ईसा की आत्मा को बड़ी शान्ति मिली। वहां से चलकर वे और उनके साथी यरुसलम पहुँचे।

मन्दिर के धन दौलत, वहां के पाखण्डों, वहां के बेजान रीति रिवाजों, जानवरों की बलियों और पुजारियों के घमण्ड

और उनके बुरे करतूतों, इन सब को देखकर हज़रत ईसा का दिल दुख से भर गया। उन्होंने बेधड़क अपने दिल के अन्दर की बात को लोगों के सामने रखना शुरू किया। यरुसलम के पुजारियों की हालत को देखकर उन्होंने कहा—

"ये लोग मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिये ये तुम्हें जो कहें सो तुम करो लेकिन जो ये करते हैं वह तुम न करो। ये लोग कहते एक बात हैं और करते दूसरी।...ये जो कुछ करते हैं लोगों से पुजने के लिये करते हैं। ये बड़े बड़े गंडे तावीज़ बांधते हैं और चौड़े चौड़े रेशमी झग्गे लटकाते हैं। दावतों में सबसे अच्छी जगह और मन्दिरों में सबसे आगे बैठना पसन्द करते हैं। चाहते हैं कि लोग गली बाज़ारों में इन्हें प्रणाम करें और इनका बड़ा आदर करें।※ ये बेवाओं का माल खा जाते हैं और लम्बी लम्बी बेमतलब पूजाएं करते हैं।"†

फिर पुरोहितों से कहा—

"बड़े दुख की बात है। आपने लोगों के लिये ईश्वर के राज का दरवाज़ा बन्द कर रखा है, न आप उसमें जाते हैं और न दूसरों को, जो उसके अन्दर जाना चाहते हैं, जाने देते हैं।......कौन सी तरकारी खाई जाय और कौन सी न खाई जाय इसकी तो आप छान बीन करते हैं और आदमियों के साथ न्याय, सब जानदारों के ऊपर दया और ईमानदारी की ज़िन्दगी, इन बातों की आप परवाह नहीं करते।......आप ऊँट निगल जाते हैं और भुनगा थूक देते हैं।

※ Math, 23—2-8.

† Mark XII.

बाहर से बरतनों को चमका चमका कर साफ़ करते और दिल के अन्दर काम क्रोध लोभ मोह भरे हैं। आप लोगों की हालत लिपी पुती क़बरों की तरह है, ऊपर से साफ़ और अन्दर हड्डियाँ और सड़न।......"

मन्दिर के अन्दर चढ़ावे के लिए खेजा बेचने वाले सर्राफ़ों की दूकानें और क़ुरबानी के जानवरों की बिक्री को देखकर हज़रत ईसा ने कहा—

"जो घर ईश्वर की पूजा का घर होना चाहिये था, आप लोगों ने उसे डाकुओं का अड्डा बना रखा है।"

हज़रत ईसा कई दिन वहां ठहरे रहे। रोज़ दिन भर मन्दिर में या यरुसलम की गलियों में प्रचार करते और रात को यरु-सलम से कोई चार मील दूर बेथानी (Bethany) गांव में साइमन नाम के एक कोढ़ी के घर में जाकर रहते। उसी घर में उनकी प्यारी चेलियाँ मार्था और मेरी और उनका भाई अल-अज़ीर (Lazarus) रहा करते थे। प्रचार के वक़्त लोग उनसे ख़ूब सवाल करते और वह जवाब देते। यरुसलम के अन्दर लोगों में खलबली मच गई। बहुतों पर बड़ा अच्छा असर पड़ा। मन्दिर ही के कुछ नौकरों और छोटे मोटे पुजा-रियों ने भी अपने दिल के अन्दर उनकी बात की सच्चाई को मान लिया। बहुत से खुले तौर पर उनकी बात मान लेने से इसलिये डरते थे क्यों कि यहूदियों में जो भी पुराने रीति रिवाजों को छोड़ देता था उसे जाति से बाहर कर दिया जाता

था, और जो आदमी जाति बाहर कर दिया जाता था उसकी सारी जायदाद ज़ब्त करली जाती थी। बहुत से और कई तरह के डरों और कमज़ोरियों से रुक गए। जो लोग अपने को हज़रत ईसा के चेले कहते थे वे बहुत थोड़े थे। लेकिन उन आम लोगों पर भी जो चारों तरफ़ से आ आकर जमा हुए थे हज़रत ईसा के उपदेशों का गहरा असर पड़ता था। कुछ लोग उन्हें पहले ही से "मसीहा" कहकर पुकारने लगे थे। "क्राइस्ट" यूनानी बोली का शब्द है जिसका मतलब वही है जो इबरानी ज़बान में "माशी आह" (मसीहा) का है। यरुसलम में हज़रत ईसा के इन उपदेशों से मन्दिर की आमदनी और पुरोहितों के बड़प्पन में धक्का लगा। जो लोग अभी तक उन्हें "नाजरथ के बढ़ई का लड़का" कहकर उनके उपदेशों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे उन्हें अब और देर तक मज़ाक़ से काम चलता दिखाई न दिया।

देश की हुकूमत रोमियों के हाथों में थी। यरुसलम के बड़े बड़े पुजारियों का बल बढ़ा हुआ था। हुकूमत के कुछ छोटे मोटे हक़ भी रोमियों ने इन्हें दे रखे थे और न ये लोग इन हक़ों को काम में लाने में पुराने यहूदी रिवाजों पर ही चलते थे। मन्दिर का सबसे बड़ा पुजारी रोमी गवर्नर के मातहत शहर का मैजिस्ट्रेट था। उसे मौत की सज़ा को छोड़कर और सब सज़ाएं देने का अख़्तियार था। किसी को मौत की सज़ा दिलाने के लिये भी वह रोमी गवर्नर से सिफ़ारिश कर सकता था। एक

तरह से यरुसलम में उन दिनों इन पुराने रिवाजों में फँसे हुए पुरोहितों की ही हुकूमत थी। शुरू में ही हज़रत ईसा के उपदेशों की ख़बर पाकर उन्हों ने अपने ख़ुफ़िया दूत हज़रत ईसा के उपदेशों को सुनने और उनके कामों की ख़बर रखने के लिये गैलिली भेज रखे थे। अब इन लोगों ने देख लिया कि अगर इन उपदेशों को रोका न गया तो मन्दिर का मान और उनकी आमदनी ख़त्म हो जायगी। धर्म में जैसा उन्होंने समझ रखा था, यहूदी "धर्म को ख़राब करने वाले" की सज़ा मौत थी। पुजारियों ने सलाह की कि हज़रत ईसा को पकड़ करके मौत की सज़ा दिलाई जाय। उन्हे दिन में पकड़ा जाता तो डर था कि जनता जोश में आकर बलवा करदे। रात को कुछ देर के लिये हज़रत ईसा पास की एक पहाड़ी पर अकेले ईश्वर से दुआ मांगने जाया करते थे। उनके एक ख़ास चेले को धन देकर उसकी मारफ़त ठीक कर लिया गया कि रात को जब वह उस पहाड़ी पर ईश्वर प्रार्थना करते हों उसी वक्त उन्हें पकड़ लिया जावे।

हज़रत ईसा का पकड़ा जाना

बड़े पुजारी के सिपाही पकड़ने के लिये पहुँचे। हज़रत ईसा पकड़ लिए गए। उनके साथ के एक आदमी ने जिसके पास इत्तफ़ाक़ से एक तलवार थी एक सिपाही पर हमला किया। सिपाही का दाहिना कान कट गया। हज़रत ईसा ने अपने उस आदमी को रोककर कहा—

"अपनी तलवार मियान में रख। जो लोग तलवार खींचेंगे वे सब तलवार ही से मिटेंगे।* मुझे वह प्याला पीने दे जो मेरे पिता परमेश्वर ने मेरे लिये भेजा है।"†

'जो लोग तलवार खींचेंगे वे सब तलवार ही से मिटेंगे'— ये शब्द और इससे मिलते जुलते शब्द हज़रत ईसा के उपदेशों में जगह जगह और बार बार मिलते हैं। महात्मा बुद्ध और अहिंसा के दूसरे पुराने ज़माने के और आज कल के महान पुजारियों के उपदेशों में भी ठीक इसी तरह के शब्द मिलते हैं। अहिंसा के अन्दर ये हज़रत ईसा के अडिग विश्वास, उनके पूरे यक़ीन को ज़ाहिर करते हैं। दूसरा फ़िक़रा साबित करता है कि दुनिया के दूसरे पैग़म्बरों की तरह ईश्वर में, जो कुछ करता है ईश्वर ही करता है और जो कुछ वह करता है हमारी भलाई के लिए ही करता है—इन बातों में भी हज़रत ईसा को पूरा भरोसा था।

---

* Math. 26, 53.

† John 18.

आखरी उपदेश

हज़रत ईसा को पुजारियों के इरादों का पहले से पता लग गया था। पकड़े जाने से पहले उसी रात अपने साथियों को हज़रत ईसा ने जो आख़िरी उपदेश दिया उसके कुछ टुकड़े ये हैं—

"जिस तरह पिता ने मुझसे प्रेम किया, उसी तरह मैंने तुमसे प्रेम किया, तुम हमेशा मेरे इसी प्रेम में रहना। मेरा कहना मानना ही मेरे प्रेम में रहना है, जिस तरह मैंने अपने पिता की आज्ञा मानी और मैं उनके प्रेम में रहा।

"मेरा कहना यह है—तुम एक दूसरे के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा मैं तुम्हारे साथ करता हूँ। आदमी इससे बढ़कर प्रेम नहीं कर सकता कि जिससे प्रेम करे उसके लिये जान दे दे। मेरा बस यही कहना है, एक दूसरे से प्रेम करो।

"दुनिया अगर तुमसे नफ़रत करे तो याद रखना कि तुमसे पहले उसने मुझसे नफ़रत की। अगर तुम दुनिया के होकर रहते तो दुनिया तुमसे प्रेम करती। तुम दुनिया के नहीं हो इसलिए दुनिया तुमसे नफ़रत करती है।

"मैं यह सब इसलिये कह रहा हूँ जिससे तुम्हारा दिल न टूटे। लोग तुम्हारा बायकाट करेंगे। वह वक़्त आ रहा है जब जो कोई तुम्हारी जान लेगा वह समझेगा कि उसने ईश्वर की सेवा की।

"जब किसी औरत के बच्चा होने को होता है वह दरदों से दुखी होती है क्योंकि उसका वक्त आ जाता है। पर जब बच्चा पैदा हो जाता है, वह अपने दुख को भूल जाती है, वह ख़ुश होती है कि दुनिया में उसके ज़रिये एक नया आदमी पैदा हुआ। यही हाल तुम्हारा होगा।

"मैं यह नहीं कहता कि मैं पिता (ईश्वर) से तुम्हारे लिये कोई चीज़ मागूँगा, क्योंकि पिता आप तुमसे प्यार करते हैं।··· मैं अपने पिता के पास से दुनिया में आया था और दुनिया छोड़कर पिता ही के पास लौट जाऊँगा।···

"मैं अकेला नहीं हूं। पिता मेरे साथ हैं। मैं यह सब इसलिये कह रहा हूं ताकि मुझमें तुम्हें शान्ति मिल सके। दुनिया में तो तुम्हें अशान्ति यानी बेचैनी ही मिलेगी। पर हिम्मत न हारना! मैंने दुनिया को जीत लिया है।

"इसी में "आदमी के बेटे का" बड़प्पन है और यही ईश्वर का बड़प्पन है।···मुझे अब तुम्हारे साथ थोड़ी ही देर और रहना है।···मैं फिर तुम्हें एक ही हुकुम देता हूं—एक दूसरे के साथ प्रेम करो। जिस तरह मैं तुमसे प्रेम करता हूँ इस तरह तुम सब एक दूसरे के साथ प्रेम करो। तुम अगर सब से प्रेम करोगे तो इसी से सब तुम्हें पहचान लेंगे कि तुम मेरे कहने पर चलते हो।···

"मैं पिता (ईश्वर) से प्रार्थना करूँगा कि मेरे चले जाने पर वह तुम्हें मेरी जगह एक और ऐसा मददगार दे दे जो हमेशा तुम्हारे साथ रहे। वह मददगार है—'दिल की सच्चाई' (इसी को इञ्जील में

जगह जगह 'दि होली स्पिरिट' या 'दि होली गोस्ट' या 'पवित्र आत्मा' या 'पाक रूह' कहा गया है। दुनिया उसे न देखती है और न पहचानती है। पर तुम उसे जानते हो क्योंकि वही तुम्हारा मददगार और सलाहकार (पैराक्लिट) है। वह हमेशा तुम्हारे साथ रहता है और हमेशा तुम्हारे अन्दर रहेगा।...तब तुम समझोगे कि किस तरह मैं अपने पिता के अन्दर हूं, तुम मेरे अन्दर हो और मैं तुम्हारे अन्दर हूँ।...अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो तो ख़ुशी मनाओ कि मैं पिता के पास जा रहा हूं क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है।......"

अद्वैत (वहदतुल वजूद) में हज़रत ईसा का यक़ीन ऊपर के टुकड़ों से ज़ाहिर है। शायद इस सच्चाई को हर आदमी की रोज़ की अमली ज़िन्दगी में ढालने की सब से बड़ी कोशिश हज़रत ईसा ने ही की।

'मैं अपने पिता के अन्दर हूँ, तुम मेरे अन्दर हो और मैं तुम्हारे अन्दर हूँ'—हज़रत ईसा के ये शब्द उपनिषदों और श्री मद्भगवत गीता के इस तरह के फ़िक़रों की गूँज मालूम होते हैं—

"सच्चा ज्ञान यही है कि आदमी सब प्राणियों को अपने अन्दर, और सब को ईश्वर के अन्दर और सब के अन्दर ईश्वर को देखे (गीता, ४—२५ से ३५)। "जिस आदमी का दिल योग मे लग गया है वह सब प्राणियों के अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब प्राणियों को देखता है......जो सब के अन्दर परमेश्वर को और परमेश्वर के अन्दर सब प्राणियों को देखता है उसका फिर परमेश्वर से नाता नहीं टूटता......जो दुई से ऊपर उठ कर सब प्राणियों के अन्दर परमेश्वर का भजन करता है वह कहीं भी रहे उसका नाता परमेश्वर से जुड़ा हुआ है।" (गीता ६-२९ से ३२)।

सूली

हज़रत ईसा बुध की रात को पकड़े गए उन्हें बाँधकर तुरन्त बड़े पुजारी क़य्याफ़े (caiaphais) के मकान पर पहुँचा दिया गया। क़य्याफ़े के ससुर अन्ना के पूछने पर हज़रत ईसा ने कहा—

"मैंने सब जगह खुले उपदेश दिया है। हमेशा मन्दिरों और चौपालों में प्रचार किया है। इसी यरुसलम के मन्दिर में मैं उपदेश देता रहा हूं। सब यहूदी वहाँ जमा होते थे। मैंने किसी से कोई बात छिपा कर नहीं कही।"*

पुजारियों और उनके आदमियों ने रात को हज़रत ईसा का ख़ूब अपमान किया। उन्हें कोड़ों से पीटा। उनकी आँखों पर पट्टी बांधकर उनके घूसे और थप्पड़ मारे और फिर पूछा—"बताओ हममें से किसने तुम्हें मारा।" उन्हें तरह तरह से सताया। वृहस्पतिवार (जुमेरात) की सुबह उन्हें बड़े पुजारी और उसकी कौन्सिल के सामने लाया गया। उनसे पूछा गया—"क्या तुम ईश्वर के बेटे हो?" उन्होंने जवाब दिया—"सचमुच

* John 18.

मैं ईश्वर का बेटा हूँ और आदमी का बेटा भी हूँ।" बड़े पुजारी ने कहा—"अब और गवाहों की क्या ज़रूरत है ? इसने अपने मुँह से अपना 'कुफ़्र' (blesphemy) मान लिया।" *

इसके बाद वे हज़रत ईसा को रोमी गवर्नर पॉण्टियस पाइलट के दरबार में ले गए। पाइलट से लोगों ने कहा—"हमें पता चला है कि यह आदमी हमारी क़ौम वालों को भड़काता है, लोगों से कहता है सीज़र (रोम के सम्राट) को टैक्स मत दो। अपने को कहता है कि मैं ही तुम्हारा बादशाह और मैं ही तुम्हारा मसीहा हूँ।' पाइलट ने हज़रत ईसा से पूछा—"तो तुम यहूदियों के बादशाह हो ?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"मेरा इस दुनिया के राज्य से कोई वास्ता नहीं। अगर इस दुनिया के राज्य से मेरा वास्ता होता तो मेरे साथी मेरे पकड़े जाने के वक्त लड़ते। नहीं, मेरा राज्य किसी दूसरी जगह है।"

यहूदी पुजारियों ने हज़रत ईसा पर तरह तरह के झूठे इलज़ाम लगाए और गवाह पेश किये। पालइट ने उन सब को सुना। फिर ईसा से सवाल करने के बाद यहूदियों से कहा—"तुम इस आदमी को मेरे पास यह कहकर लाए थे कि यह लोगों में बग़ावत फैलाता है। मैंने तुम्हारे सामने इससे सब बातें पूछीं; और तुम्हारे कहने पर भी मुझे इसका कोई क़ुसूर दिखाई नहीं देता। इसने कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे इसे मार डाला जावे।" पुजारियों ने ज़िद की। पाइलट ने फिर बार

* John 18.

बार पूछा—"इसने क्या क़ुसूर किया है ? कोई बात इसके ख़िलाफ़ साबित नहीं हुई।" यहूदी पुजारियों के ज़िद करने पर उसने कहा—"आप कहें तो मैं इसे बेंत लगाकर छोड़ दूं।" पुजारियों ने जवाब दिया—"यह आदमी अपने को ईश्वर का बेटा कहता है। हमारे धर्म में यह क़ायदा चला आता है कि ऐसे आदमी को मार डालना ज़रूरी है।"

पाइलट ने देखा कि हज़रत ईसा को सज़ा न दी गई तो डर है कि यहूदी बिगड़ जावेंगे। लेकिन वह हज़रत ईसा को बेगुनाह समझता था और उन्हें छोड़ देना चाहता था। उसने इस बार हज़रत ईसा से कहा—"जानते हो कि तुम्हें छोड़ देना या मार डालना मेरे हाथ में है ?" हजरत ईसा ने जवाब दिया—"जब तक ख़ुदा का हुकुम न हो आप कुछ नहीं कर सकते। आपका क़ुसूर तो उतना भी नहीं जितना उस आदमी का है जिसने धोखा देकर मुझे पकड़वाया है।" इस बात पर पाइलट और भी चाहने लगा कि हज़रत ईसा को छोड़ दे। वह जानता था कि इन सब इलज़ामों की जड़ यह है कि हज़रत ईसा के उपदेशों से पुजारियों की आमदनी में बट्टा लगता है, इसीलिए पुजारी इसके दुशमन हैं। यहूदी शहरों में परदे का रिवाज था। पाइलट को बीवी परदे के पीछे से सब देख सुन रही थी। पाइलट पर उसने ज़ोर दिया कि हज़रत ईसा को छोड़ दिया जावे। लेकिन यहूदी पुजारी और शहर के उन बड़े बड़े लोगों ने, जिनकी सदियों की रोज़ी ख़तरे में थी, राजभक्ति की दोहाई देते हुए

कहा—"अगर आप इस आदमी को मौत की सज़ा न देंगे तो देश में बहुत बड़ी बग़ावत फैल जायेगी और इसकी ज़िम्मेवारी आप पर होगी।" उन दिनों की हालत को देखते हुए पाइलट डर गया। एक बेक़ुसूर आदमी को सूली पर चढ़ा देना इतना ख़तरनाक न था जितना रोम के इतने बड़े सूबे के बड़े बड़े लोगों को नाराज़ कर लेना और बग़ावत का डर रहना। पाइलट ने हुकुम दे दिया कि ईसा को सूली पर चढ़ा दिया जावे। उन्हें उसी दिन जल्लादों के हवाले कर दिया गया।

अगले दिन सुबह नौ बजे हज़रत ईसा को, जैसा उन दिनों रिवाज था, पहले कोड़े लगाए गए और फिर शहर के बाहर एक जगह सूली पर लटका दिया गया। सूली के क्रॉस के ऊपर यह लिख दिया गया—"यहूदियों का बादशाह ईसा नसरानी!" नसरानी का मतलब है नाज़रथ का रहने वाला! मतलब यह था कि हज़रत ईसा को राजद्रोह के जुर्म में सज़ा दी गई। यह बात शुक्र यानी जुमे के दिन की और अंगरेज़ी हिसाब से ३ अप्रेल की है।

दिन और तारीख़ का पता यहूदियों के लेखों से चलता है। इन दोनों में सब की एक राय है। लेकिन सन् के बारे में शक है। कोई कोई सन् २६, कोई सन् ३३ और कोई सन् ३६ ईस्वी को सूली का साल बताते हैं। सन् २८ में हज़रत ईसा ने प्रचार करना शुरू किया था और उनकी जिन्दगी को देखते हुए सन् २६ ही सब से ठीक सन मालूम होता है। यही इंजील के

तीन बड़े लेखकों की राय है। सन् ३६ किसी तरह ठीक नहीं जँचता।

उन दिनों जो लोग सूली पर चढ़ाए जाते थे उन्हें एक ख़ास तरह की तेज़ शराब पहले से पिला दी जाती थी ताकि सूली में बहुत तकलीफ़ न हो। हज़रत ईसा ने पीने से इन्कार कर दिया।

रोम के हाकिमों ने फ़िलिस्तीन में बड़े बड़े ज़ुल्म किये थे। पर हज़रत ईसा को सूली पर चढ़ाने की ज़िम्मेवारी रोम के हाकिमों पर नहीं है। इसके लिए उनके अपने देश और अपने धर्म के लोग ही ज़िम्मेवार थे।

अपने पकड़े जाने से कुछ पहले हज़रत ईसा ने यरुसलम के लोगों को निगाह में रखते हुए कहा था—

"ऐ यरुसलम के रहने वालो! तुमने अपने नबियों को क़त्ल किया और जो तुम्हें धर्म का रास्ता दिखाने आए थे उन्हें तुमने पत्थर मारे!"

लोगों ने जब उनसे यरुसलम के मन्दिर की इमारतें देखने को कहा तो उन्होंने जवाब दिया—

"तुम इन्हें क्या देखते हो? इनका एक पत्थर भी दूसरे से मिला हुआ न रह जायगा।"

जिन लोगों ने हज़रत ईसा को सज़ा दिलाने पर ज़िद की वे या तो विदेशी रोमी हाकिमों के ख़ैरख़ाह थे या कम से कम ख़ैरख़्वाही का दम भरते थे और सब पुराने ख़याल के कट्टर

यहूदी थे। हो सकता है कि वे देशभक्त यहूदी जो अपने मुल्क की आज़ादी के लिये रोमियों से लड़ते रहते थे इस मामले में हज़रत ईसा के साथ हमदर्दी कर सकते थे। लेकिन हज़रत ईसा की कुछ बातें ऐसी थीं जिनकी वजह से उन्हें भी उनसे हमदर्दी न हो सकी।

एक बार हज़रत ईसा से पूछा गया—"रोमी सम्राट सीज़र को टैक्स देना चाहिये या नहीं ?" इञ्जील में लिखा है कि उनके दुशमनों ने उन्हें फंसाने के लिये उनसे यह सवाल किया था। जो हो हज़रत ईसा ने सवाल करने वाले से एक सिक्का मांग कर पूछा—"इस पर नाम और तस्वीर किसकी है ?" जवाब मिला—"सीज़र की"। हज़रत ईसा ने कहा—"तो फिर सीज़र की चीज़ सीज़र को दो और ख़ुदा की चीज़ ख़ुदा को।"

आज़ादी की चर्चा होने पर उन्होंने कहा—"जो भी आदमी पाप करता है वह ग़ुलाम है। सचाई ही आज़ादी है।"

हज़रत ईसा ने अपने ज़माने की राज काज की बातों की तरफ़ कभी ज़्यादह ध्यान नहीं दिया......वह उस तरह के देश भक्त न थे जिस तरह के 'मक्काबी' थे और न 'धर्मराज' के नाम पर यहूदी पुजारियों पुरोहितों का राज या एक ख़ास मज़हब वालों का वैसा राज क़ायम करना चाहते थे जैसा यूदा गनलोमिते चाहता था। हज़रत ईसा ने बहादुरी के साथ अपनी क़ौम वालों की तङ्ग नज़री से ऊपर उठकर यह कहा कि ईश्वर सब का बाप है और उसकी नज़र में सब आदमी बराबर

हैं।...उन्होंने ऐलान किया कि सच्चा धर्मराज या ईश्वर का राज हर आदमी के दिल के अन्दर है।...अगर ईसा उस तरह की ख़ुदा की हुकूमत क़ायम करने की जगह रोम के सम्राट के ख़िलाफ़ साज़िशें करने में अपनी ताक़त ख़र्च करते तो दुनिया का इतिहास दूसरी ही तरफ़ को मुड़ता! एक पक्के प्रजातन्त्र वादी यानी पंचायती राज के हामी या जोशीले देशभक्त बनकर वह अपने ज़माने की हालत के ज़बरदस्त बहाव को रोक न सकते। लेकिन यह ऐलान करके कि राज काज एक छोटी चीज़ है उन्होंने दुनिया के ऊपर इस सचाई को खोल दिया कि आदमी का अपना देश ही सब कुछ नहीं होता और आदमी पहले आदमी है और पीछे किसी एक क़ौम का और उसका आदमी होना उसकी इस ख़ास क़ौमीयत तथा राष्ट्रीयता से ज्यादह ऊँची चीज़ है।...कई बातों में ईसा अराजकवादी या अनारकिस्ट थे। किसी राज या किसी हुकूमत का होना ही उनके लिये एक बुराई थी। वह दुनिया से धन और हुकूमत दोनों को मिटा देना चाहते थे, इन चीज़ों को ख़ुद हथियाना नहीं चाहते थे। उन्होंने अपने चेलों से पेशीनगोई की कि तुम्हें तरह तरह से सताया जावेगा, पर कभी एक बार भी हथियार लेकर दुशमन का मुक़ाबला करने का ख़याल उनके मन में या उनकी ज़बान पर नहीं आया। अपने त्याग, अपनी क़ुरबानी और तकलीफ़ों के ज़रिये इस तरह का बन जाना कि कोई हमें जीत ही न सके और अपने दिल को मफ़ाइ से पाशविक यानी हैवानी ताक़त

को जीतना यही असल में हज़रत ईसा की ख़ास चीज़ थी।"*

हज़रत ईसा का सब से प्रेम और अहिंसा का सन्देश उस ज़माने के देश भक्त यहूदियों की समझ में न आता था। कुछ लोगों को यहां तक डर था कि अगर ईसा के चेले बढ़े तो रोम के हाकिमों की ताक़त और मज़बूत हो जावेगी। यहूदी देशभक्तों की हज़रत ईसा की तरफ़ से बेपरवाही और पाइलट की उनसे थोड़ी बहुत हमदर्दी का यही ख़ास सबब था।

सच यह है कि हज़रत ईसा यहूदी क़ौम में पैदा होने पर भी किसी एक क़ौम के न थे, न किसी दूसरे देश के, और न किसी एक ज़माने के। दुनिया के और दूसरे महापुरुषों की तरह वह सारी दुनिया के और सारी मानव जाति, सारी इनसानी क़ौम के थे। आदमियों का अलग अलग टुकड़ियों और क़ौमों में बँटा होना उन्हें ऐसा ही अखरता था जैसा एक कुटुम्ब के लोगों का एक दूसरे से दुश्मनी रखना या एक जिस्म के अलग अलग टुकड़े कर दिया जाना, क़ुदरती तौर पर उस ख़ास ज़माने के देश भक्त यहूदियों को, या किसी भी देश और किसी ज़माने के तंग ख़याल क़ौम परस्तों को हज़रत ईसा के उपदेश अच्छे न लग सकते थे। यही वजह है कि आज तक यूरोप के बड़े बड़े नेता हज़रत ईसा के उसूलों और उपदेशों को अमल करने की चीज़ नहीं मानते। जिस मानव एकता, जिस इन्सानी वहदत को हज़रत ईसा दुनिया में क़ायम करना चाहते थे उससे अभी तक दुनिया कोसों दूर है।

ईंजील

हज़रत ईसा ने कभी कोई चीज़ नहीं लिखी। उनकी ज़िन्दगी और उनके उपदेशों का पता बहुत करके इंजील की पहली चार किताबों या पहले चार अध्यायों से चलता है, जो 'चार गॉस्पलों' के नाम से मशहूर हैं। गॉस्पल शब्द के माइने खुशख़बरी है। ये चारों किताबें जिन लेखकों के नाम से मशहूर हैं वे चारों हज़रत ईसा के समय में मौजूद थे। पर ये किताबें ईसा के सौ सवा सौ साल बाद पहले के कुछ फुटकर लेखों और हिदायतों के सहारे घटा बढ़ाकर लिखी गईं, और उसके बाद भी ईसा की दूसरी सदी के आख़ीर तक इनमें हेर फेर होता रहा। इनमें से हर किताब में ईसा के जन्म से लेकर आख़ीर तक का हाल लिखा है। चारों में बहुत सा हिस्सा हज़रत ईसा के ऐसे ऐसे चमत्कारों या मौजज़ों का है जैसे पानी के घड़ों को छूकर शराब बना देना, सात रोटियों को हाथ लगा कर इतनी कर देना जिसमें पाँच हज़ार आदमी पेट भर खालें और फिर बारह टोकरे बच रहें, जन्म के अंधे की आँखों को थूक या मिट्टी लगाकर उसे समाका कर देना, चार दिन के गड़े

हुए मुर्दे को निकालकर फिर से ज़िंदा कर देना या पानी पर खड़े होकर चलना। ये हज़रत ईसा के 'चमत्कार' बताए जाते हैं। और इंजील ही में यह भी लिखा है कि हज़रत ईसा ने किसी तरह के भी चमत्कार कर सकने से साफ़ इनकार किया था* और इस तरह के चमत्कार दिखाने वालों को बुरा कहा था।† इनमें से बहुत से चमत्कार बीमारों को छूकर या देखकर अच्छा कर देने के हैं। अगर इनमें कोई सचाई है तो हो सकता है हज़रत ईसा के छू देने से या उनकी निगाह से ही बहुत सों को शान्ति मिलती हो, और लोगों की श्रद्धा बहुत से रोगों को भी अच्छा कर देती हो।

इन चार किताबों की इस तरह की बहुत सी बातें दुनिया के दूसरे धर्मों की किताबों और दूसरे महात्माओं की जीवनियों से इतनी मिलती जुलती हैं कि उन्हीं से ली गई मालूम होती हैं। हज़रत ईसा से पहले की और उनके आस पास की सदियों में इस तरह की बहुत सी हिन्दुस्तानी और चीनी कहानियां ख़ास कर श्री कृष्ण और महात्मा बुद्ध के जीवन की इस तरह की कहानियां तरह तरह की शक्लों में, धार्मिक कथाओं, फ़रज़ी लोगों की जीवनियों या नाविलों की शक्लों में, ईरान, इराक़ और पच्छिम एशिया की बहुत सी ज़बानों में लिखी जा रही थीं और ख़ूब फैल रही थीं। इनमें से कुछ किताबें हाल में ईरानी

* Mark VIII, 12 etc.

† Math. VIII, 22-23.

और इबरानी जैसी ज़बानों से जर्मन में और जर्मन से अंगरेज़ी में तरजुमा हुई हैं। ज़ाहिर है इंजील के तय्यार करने वालों को इन कहानियों से बड़ी मदद मिली। इसकी एक मिसाल हज़रत ईसा के जन्म की कहानी है। वह यह है—मरियम की शादी हो चुकी थी। फिर भी बिना पति के ही उन्हें गर्भ रह गया। उनका पति इस शक पर उन्हें तलाक़ देने को तय्यार हो गया। एक फ़रिश्ते ने उसे आकर बताया कि तेरी औरत सच्ची है, उसे गर्भ ईश्वर से है। पति की तसल्ली हो गई। जब बालक पैदा हुआ तो आसमान और ज़मीन दोनों पर कई अनहोनी बातें हुईं। उस देश का रोमी हाकिम हैरॉड बड़ा ज़ालिम था। पूरब से ज्योतिषियों और महात्माओं ने आकर उसे बताया कि इस देश में एक ऐसा बालक पैदा हो गया है जो यहूदियों का मसीहा और बादशाह होगा और जो तुम्हारे राज को ख़त्म करेगा। इस पर हैरॉड ने दो साल के और दो साल से कम के सब बालकों को पकड़ पकड़कर मरवा देना शुरू किया। फ़रिश्ते ने मरियम और उसके पति को आकर ख़बर दी और कहा कि तुम अपने बालक को लेकर मिस्र चले जाओ। वे दोनों चले गए। इस बीच हैरॉड ने लाखों बच्चे मरवा डाले। थोड़े दिनों में हैरॉड भी मर गया। फ़रिश्ते ने फिर मरियम को आकर ख़बर दी कि हैरॉड मर गया अब तुम अपने देश लौट आओ। वे लौटे और इस बार उत्तर की तरफ एक दूसरे इलाक़े में आकर ठहरे। इस कहानी को पढ़कर किसी भी हिन्दुस्तानी को कृष्ण और कंस

का क़िस्सा याद आ जावेगा। कहा जाता है—हनुमान जी और कर्ण भी कुमारियों के ही पेट से पैदा हुए थे। ईश्वर से कुमारियों को गर्भ रह जाने की बात पुराने मिस्रवाले भी मानते थे।* इन क़िस्सों की वजह से ही यूरोप के बहुत से विद्वानों को इस बात का भी शक है कि ईसा नाम का कोई आदमी हुआ भी है या नहीं। लेकिन इस तरह के क़िस्से लगभग हर मज़हब के महापुरुषों के नाम के साथ उनके मरने के बाद जोड़े जाते रहे हैं। यह भी ज़ाहिर है कि इन चारों किताबों के लिखने वालों या तयार करने वालों में से शायद कोई भी अपने ज़माने की राजकाजी दलबन्दी और हठधर्मी से ऊपर नहीं उठ सका। इन किताबों में जहां हज़रत ईसा के ऊँचे से ऊँचे ख़याल इधर उधर मोतियों की तरह बिखरे हुए हैं, वहां बहुत सी बातें ऐसी भी हैं जो इसलिये नहीं लिखी गईं कि महात्मा ईसा ने वैसा किया हो या कहा हो, बल्कि इस लिये कि लिखने वाले का छोटा दिल यह सुनना चाहता था या मानना चाहता था कि जैसा वह लिख रहा है वैसा ही हुआ होगा। कहीं कहीं तो प्रेम और अहिंसा की मूर्ति हज़रत ईसा में नफ़रत और हिंसा तक के भाव दिखा दिये गए हैं। क़ुदरती तौर पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें इन किताबों में मौजूद हैं। कम या ज़्यादा यह बात दुनिया की बहुत सी पुरानी मज़हबी किताबों में पाई जाती है। लेकिन इन सब बातों के होते हुए भी ये चारों किताबें

* Herodotus III, 28 etc.

दुनिया की ऊँची से ऊँची किताबों में से हैं। थोड़े से ध्यान और समझ के साथ देखने पर हज़रत ईसा के कामों और खयालों का इनसे खासा पता चल सकता है। बीच बीच में आदमी के दिल की बड़ी से बड़ी गहराइयों से निकले हुए वह अनमोल जवाहरात मौजूद हैं जिनसे दुनिया की करोड़ों आत्माओं को शान्ति और रोशनी मिली है और जिनकी दमक हज़ारों साल बीत जाने पर भी फीकी नहीं पड़ी और न पड़ सकती है जब तक कि आदमी इस ज़मीन पर अपने असली और आखिरी मक़सद को पूरा न कर ले। इञ्जील कहती है—

"जिस जिसको जो तालीम मिली है वह उसी पर क़ायम रहे। हरेक का दिल जो मानता है वह उसी पर जमा रहे। जिन्होंने तुम्हें धर्म का रास्ता बताया है उन्हें याद रखो···जितनी (बड़ी बड़ी) धार्मिक या मज़हबी किताबें दुनिया में हैं सब ईश्वर अल्लाह से हैं। सब में आदमी फ़ायदा उठा सकता है। तालीम ले सकता है, बुराई से बच सकता है, अपने को सुधार सकता है, अपने इख़लाक़ सदाचार को ऊँचा ले जा सकता है। इनमें से किसी भी किताब से आदमी ईश्वर अल्लाह का बन सकता है और सब तरह के नेक काम करने के योग्य क़ाबिल बन सकता है।*

* इञ्जील, Timothy, 3. 16-17.

सूली के बाद

हज़रत ईसा के जन्म से लेकर सूली पर चढ़ाए जाने तक का हाल इन चारों किताबों से थोड़ा सा मिलता है। पर उसके बाद क्या हुआ यह इनसे बिल्कुल पता नहीं चलता। इन किताबों में यही लिखा है कि हज़रत ईसा उसी दिन तीसरे पहर सूली पर मर गए। यही आम ईसाई मानते हैं। उनका कहना है कि ख़ुदा ने अपने इकलौते बेटे को इसीलिये भेजा था कि वह सब आदमियों के पापों का बोझ अपने सर पर लेकर सूली पर जान दे।

दूसरी तरफ़ इंजील ही को ध्यान से पढ़ने और आस पास की और हालत पर ग़ौर करने से यह भी मालूम होता है कि शायद हज़रत ईसा सूली पर नहीं मरे। इतिहास के कई आज़ाद ख़याल विद्वानों की भी यही राय है। नीचे लिखी बातें इस राय को मज़बूत करती हैं।

शुक्र यानी जुमे के दिन सुबह नौ बजे के बाद हज़रत ईसा को सूली पर लटकाया गया। जिस ढङ्ग से लोगों को उन दिनों सूली दी जाती थी और हज़रत ईसा को दी गई वह यह था—

"फिर उन्हें नंगा करके सूली पर ठोंक दिया गया।"

"सूली (क्रॉस) दो लकड़ियों की बनी होती थी, जो अंगरेज़ी हरफ़ 'T' (टी) की शक्ल में एक सीधी और एक आड़ी कसी होती थीं। सूली ज़्यादा ऊँची न होती थी। मुजरिम के पैर क़रीब क़रीब ज़मीन से लगे रहते थे। पहले सूली की दोनों लकड़ियों को ठीक तरह कस दिया जाता था। फिर मुजरिम के दोनों हाथों में दो कीलें ठोंक कर उन्हें सूली पर कस दिया जाता था। कभी कभी पैरों में भी एक कील ठोंक दी जाती थी। कभी कभी पैर सिर्फ़ रस्सी से बांध दिये जाते थे। सूली की सीधी लकड़ी के क़रीब क़रीब बीच में मुजरिम की दोनों टांगों के बीच एक छोटी सी लकड़ी और लगा दी जाती थी जिससे मुजरिम का बदन उस पर टिक जावे। ऐसा न किया जाता तो बदन नीचे लटक पड़ता और दोनो हाथ चिर जाते। कभी कभी एक छोटी सी आड़ी लकड़ी पैरों के नीचे लगा दी जाती थी जिस पर पैर सम्हले रहें।"

"सूली की सब से बड़ी बेदरदी यह थी कि आदमी इस तकलीफ़ की हालत में उन सितमभरी लकड़ियों पर तीन तीन, चार चार दिन बिना मरे लटका रहता था। हाथों से ख़ून का बहना बहुत जल्दी बन्द हो जाता था और जितना खून बहता था उससे आदमी मरता न था। मौत बदन के इस बुरी तरह देर तक लटके और कसे रहने से होती थी, जिससे पहले तो बदन के अन्दर खून के बहने में सख़्त रुकावट पड़ती थी, फिर सर में और दिल में ज़ोर का दर्द होने लगता था और आख़ीर में जाकर हाथ पैर ठण्डे और कड़े पड़ जाते थे। जिनका

बदन मज़बूत होता था वे इस सब को भी सह जाते थे और दाना पानी न मिलने की वजह से और भी देर में मरते थे।"

"सूली देने का यह ढङ्ग रोम वालों का ढङ्ग था। यहूदियों में दूसरी तरह का रिवाज था। वह था—इस तरह के मुजरिम को पत्थर मार मार कर मार डालना। हज़रत ईसा को सज़ा देना अगर यहूदियों ही के हाथ में होता तो उन्हें इसी तरह मारा जाता। यहूदियों की एक किताब 'तालमूद आफ़ जेरुसलम' में एक जगह यह भी लिखा है कि हज़रत ईसा को पत्थर मार मार कर मार डाला गया था। रोम वालों में सूली देने का रिवाज सिर्फ़ गुलामों या बहुत ही घटिया और ऐसे छोटे लोगों के लिये था जिन्हें वे तलवार से मारे जाने की इज़्ज़त देना नहीं चाहते थे।"

"इस जुल्म की ग़रज़ सिर्फ़ मार डालना नहीं थी बल्कि यह थी कि अपने जिन हाथों से मुजरिम ने कोई बुरा काम किया है उन पर कीलें ठोंक कर मुजरिम को लकड़ी के तख़्तों पर सड़ने दिया जावे।"*

हज़रत ईसा को इसी तरह सूली दी गई थी। शुरू सदियों की जितनी तसवीरें 'क्रास पर ईसा' की मिलती हैं सब इसी ढङ्ग की हैं। बाद की कुछ तसवीरों में एक कील छाती पर भी ठुकी हुई दिखाई जाती है। यह बाद की सूझ है और ठीक नहीं। इंजील ही में लिखा है कि सूली दिये जाने के कम से कम छै घण्टे बाद तक ईसा बातें करते रहे। छाती में कील ठोंके जाने

---

* "Life of Jesus" by Renan, pp. 284, 287, 290-291.

की सूरत में यह नामुमकिन था। यह भी लिखा है कि छै घण्टे बाद वे क्रॉस से उतार लिये गए थे।

दो और आदमी, दोनों मामूली डाकू, ठीक उसी वक़्त हज़रत ईसा के साथ साथ सूली पर चढ़ाए गए थे। एक दाहिने हाथ, दूसरा बांए हाथ। इन दोनों को भी इसी तरह सूली दी गई थी।

सूली पर ठुकते ही हज़रत ईसा ने अपने सताने वालों की तरफ़ इशारा करते हुए ख़ुदा से दुआ मांगी—

"ऐ पिता! इन्हें माफ़ कर दे। ये जो कुछ कर रहे हैं नासमझी से कर रहे हैं।"*

'पिता' के लिये हज़रत ईसा इबरानी में "अब्बा!" कहते थे।

इसके बाद हज़रत ईसा ने आँख उठाकर देखा। उनकी माँ मरियम, जो ख़बर सुनकर आ गई थीं, सामने खड़ी थीं। उसी के पास ईसा का एक प्यारा चेला खड़ा था। ईसा ने माँ की तरफ़ देखा, फिर चेले की तरफ़ इशारा करके कहा—"माँ! अब यह तेरा बेटा है!" फिर चेले की तरफ़ देखकर कहा—"यह अब तेरी माँ है!" इसके बाद वह चेला मरियम को अपने साथ ले गया और माँ की तरह उसने उसकी सेवा की।

तीन घण्टे तक यानी बारह बजे दोपहर तक हज़रत ईसा बीच बीच में अपने दोनों डाकू साथियों से बातें करते रहे।

* Luke 23-34.

कहते हैं उस दिन बारह बजे से तीन बजे तक सूरज ग्रहण था। अगले दिन सनीचर था। यहूदी रिवाज यह था कि जुमे को सूरज डूबने के बाद बदन सूली पर टंगे हुए न रह सकते थे। जुमे ही को यहूदियों ने पाइलट से कहा कि ईसा को सूली से उतार लिया जावे। ऐसे मौक़ों पर सूली से उतारने से पहले मुजरिम की दोनों टांगें तोड़ दी जाती थीं जिससे मुजरिम बच न जावे! यहूदियों के कहने पर तीनों मुजरिमों की टांगें तोड़ने के लिये सिपाही भेजे गए। इंजील में साफ़ लिखा है कि सिपाहियों ने मुजरिमों की टाँगें तोड़ दीं पर हज़रत ईसा की नहीं तोड़ीं।* यह भी लिखा है कि वे दोनों मुजरिम टाँगें तोड़ दिये जाने पर भी सूली से उतारे जाने के वक्त ज़िन्दा थे। जगह जगह यह भी लिखा है कि पहरे के सिपाही और उनका कप्तान हज़रत ईसा के साथ अन्दर ही अन्दर हमदर्दी रखते थे। यहूदियों को उन सिपाहियों पर भरोसा न था और पाइलट और उसके सिपाही सब चाहते थे कि हो सके तो किसी तरह ईसा की जान बचा ली जावे।

उधर बड़े पुजारी क़य्याफ़ा की जिस कौन्सिल ने सब से पहले हज़रत ईसा को मुजरिम ठहराया था उस कौन्सिल का एक मेम्बर यूसुफ़ रोमा गाँव का रहने वाला और बड़ा अमीर था। यूसुफ़ अन्दर ही अन्दर हज़रत ईसा का भक्त था और

* John XX, 34.

उन्हें बेगुनाह मानता था*। वह उन्हें सज़ा दिये जाने के खिलाफ़ था। पर उस अकेले की राय से क्या हो सकता था। पाइलट उसका बड़ा दोस्त था। यूसुफ़ बराबर धुन में लगा हुआ था। यूसुफ़ ने शुक्रवार को तीसरे पहर ही पाइलट से जाकर कहा कि ईसा मर चुके हैं, उनकी लाश मुझे दे दी जावे। पाइलट को भरोसा न हुआ कि ईसा इतनी जल्दी मर गए।† उसने पहरे के सिपाहियों को बुलाकर पूछा और उनके यह बयान दे देने पर कि ईसा मर चुके पाइलट ने ख़ुशी से हुकुम दे दिया कि ईसा की लाश फ़ौरन् यूसुफ़ को दे दी जावे। यूसुफ़ ईसा के एक दूसरे भक्त निकोदेमस को लेकर मौक़े पर पहुँचा। सिपाही हमदर्द थे ही। उन्होंने उसी दिन शाम से पहले ईसा को यूसफ़ के हवाले कर दिया। यूसुफ़ और उसके साथी ने मरहम पट्टी करके ईसा को पास की पहाड़ी में एक अच्छी जगह रात भर रखा। वहाँ दरवाज़े को एक भारी पत्थर से बन्द कर दिया। यह सब बड़ी जल्दी जल्दी किया गया।

जिस जगह ईसा को रखा गया उसे कुछ लोगों ने देख लिया। इनमें ईसा के भक्त और दुशमन दोनों थे। पहरेदारों के अफ़सर ने मशहूर कर दिया था कि ईसा मर गए हैं और उन्हें इसी जगह दफ़नाया जायगा। सनीचर को कुछ यहूदी पुजारियों ने पाइलट से जाकर कहा—"कम से कम तीन दिन

* John and Luke.

† Mark 15-44.

तक उस जगह का कड़ाई के साथ पहरा दिया जावे जहां ईसा को रखा गया है। ऐसा न हो कि ईसा के चेले आकर उसे उठा ले जावें।"* पाइलट ने उनकी तसल्ली के लिये पहरे के सिपाहियों की तादाद और बढ़ा दी।

जगह जगह लिखा है कि यहूदियों को इन सिपाहियों पर भरोसा न था। लेकिन उस दिन सनीचर यानी 'सब्बथ' का दिन था।

कोई पुराने ख़याल का यहूदी जुमे के सूरज डूबने से लेकर सनीचर के सूरज डूबने तक न उस जगह के आस पास रह सकता था और न इस तरह की चीज़ की देख भाल कर सकता था। इसी में यूसुफ़ और उसके साथियों को मौक़ा मिल गया। जुमे ही की रात को या सनीचर को हज़रत ईसा घायल लेकिन ज़िन्दा हालत में किसी तरह चुपके से वहां से हटा लिये गये। दूर किसी छिपी हुई जगह रखकर यूसुफ़ ने उनकी मरहम पट्टी की, हाथों और पैरों के निशान न जा सके, पर हज़रत ईसा अच्छे हो गए और मालूम होता है कुछ दिनों फ़िलिस्तीन में छिपे हुए रहने के बाद इधर उधर निकल गए।

"ज़ाहिर है कि लोगों के दिलों में शुरू से इस बात का शक था कि ईसा सचमुच मरे हैं या नहीं। जिन लोगों ने कई बार लोगों को सूली दिये जाते हुए देखा था उन्हें पता था कि कुछ घण्टे सूली पर लटके रहने से मौत हरगिज़ नहीं हो सकती। वे इस तरह की कई

---

* Math. 27, 64.

मिसालें देते थे जिनमें लोगों को सूली पर चढ़ाकर जल्दी उतार लिया गया और अच्छी अच्छी दवाओं की मदद से उन्हें फिर होश आ गया और वे बच गए।* तीसरी सदी ईसवी में हज़रत ईसा की इस अनोखी मौत का सबब बताने के लिये मशहूर पादरी औरिजेन को यह लिखना पड़ा था कि उनकी इस अचानक मौत का सबब ईश्वर का चमत्कार था।† मार्क की गास्पल में भी इस तरह की अचानक मौत पर हैरानी ज़ाहिर की गई है।+

"बाद में जब ईसाइयों और यहूदियों में इस बात पर बहस चली कि ईसा मरे हैं या नहीं तो ईसाई लेखकों ने बढ़ा बढ़ाकर यह कहना शुरू किया कि यहूदियों ही ने इस बात को पक्का कर लेने के लिये कि ईसा सचमुच मर गए, ख़ुद सब चीज़ें हर तरह से ठीक कर ली थीं। यह बातें ख़ास कर तब उड़ाई गईं जब यहूदी साफ़ साफ़ और दावे के साथ यह कहते थे कि लोग ईसा को चुरा कर ले गए।"×

एक जगह यह भी लिखा है कि पहरे के सिपाहियों ने जाकर पाइलट से रिपोर्ट की कि—"ईसा के कुछ आदमी रात ही को आकर जब हमारी आँख लग गई थी ईसा को चुरा ले गए।"

इतवार को बहुत सबेरे गैलिली की कुछ औरतें सामान लेकर वहाँ पहुँचीं। वे समझती थीं कि ईसा मर चुके और यहीं

---

* Herodotus vii, 194 ; Jos, Vita. 75.

† In Matt Comment Series, 140.

+ Math. 44-45.

× "Life of Jesus" by Renan, pp. 292-293.

उनकी क़ब्र बना दी जावेगी। वे यह देखकर हैरान रह गईं कि ईसा वहाँ थे ही नहीं। किसी ने जो वहाँ मौजूद था उनसे कहा—"घबराओ मत! तुम ईसा नसरानी को ढूँढ़ रही हो जिसे सूली दी गई थी? वह इसी जगह था। वह अभी ज़िन्दा है। उसे तुम मुर्दों में क्यों ढूँढ़ रही हो। जाकर उसके चेलों और पीटर से कह दो ईसा तुम्हें गैलिली में मिलेगा।"*

जब उन्होंने ईसा के चेलों से जाकर यह बात कही उन्हें भरोसा न हुआ। पीटर ने जल्दी से जाकर देखा। उसे वहाँ सिवाय ज़ख़्मों की पट्टियों के और कुछ न मिला। ईसा के बदन का क्या हुआ इसके बारे में तब ही से फ़िलिस्तीन भर में बड़ी बड़ी अजीब ख़बरें फैलती रहीं। यहूदियों या ईसाइयों के सारे इतिहास में हज़रत ईसा के कहीं पर भी दफ़न किये जाने या उनकी किसी तरह की भी आख़री रस्मों का कोई हाल नहीं मिलता। हज़रत ईसा के साथ के दोनों और मुजरिमों के दफ़न किये जाने का हाल मिलता है।

दूसरी तरफ़ इसके बाद ईसा के अपने ख़ास ख़ास चेलों से मिलने का बयान आता है। सूली के कुछ दिनों बाद सब से पहले वे मेरी नाम की एक औरत से मिले जिसने जाकर ईसा के कुछ चेलों से कहा—"आप लोग रंज न करें। ईसा अभी ज़िन्दा हैं। मैंने ख़ुद उन्हें देखा है।" पर उन लोगों को भरोसा न हुआ।†

* Luke 24-5, Mark—16, 6-7.

† Mark 16, 10-11.

एक दूसरा बयान है कि हज़रत ईसा ने ख़ुद कहीं पर दो औरतों से कहा—

"डरो मत ! मैं अभी तक अपने बाप (ख़ुदा) के पास नहीं गया । जाकर मेरे भाइयों से कह दो कि वे गैलिली जावें । मैं वहीं उनसे मिलूँगा ।"*

अपने ग्यारह ख़ास ख़ास चेलों से हज़रत ईसा ने गैलिली में एक ख़ास पहाड़ी पर मिलने को कहला भेजा था, † और वे लोग वहाँ पहुँचे । ज़ाहिर है यूसुफ़ और उसके साथी जिन्होंने पाइलट की इजाज़त से ईसा को एक ख़ास जगह ले जाकर रखा था और फिर किसी तरह उन्हें वहाँ से हटा लिया था इन ग्यारह को या कम से कम इन सब को अपना सारा भेद बताना ठीक न समझते थे । हज़रत ईसा वहाँ पहुँचे । उनसे मिले । उनमें से कुछ डर गए । कुछ को शक हुआ कि शायद ईसा मर चुके और यह उनका भूत है । उनका यह डर देखकर हज़रत ईसा ने उनसे कहा—"तुम इतना घबरा क्यों गए ? तुम्हारे मन में शक क्यों हो रहे हैं ? मेरे हाथों को और मेरे पैरों को अच्छी तरह देखो । मैं ही हूँ ! मुझे छूकर देखो । भूत प्रेतों के इस तरह माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं जिस तरह तुम मेरी देख रहे हो ।" यह कहकर ईसा ने उन्हें अपने हाथ पैर

* Matth. 28, 10, John 20, 17.

† Matth. 28, 16.

दिखलाए। फिर ईसा ने उनके साथ बैठकर खाना खाया।*

इसके बाद कम से कम दो बार और ईसा अपने ख़ास ख़ास चेलों से मिले।

एक बार ईसा ने इसी तरह की एक मुलाकात में अपने एक प्यारे चेले यहूना के बेटे साइमन से तीन बार यह पूछ कर कि क्या तुम सचमुच मुझसे प्रेम करते हो कहा कि—

"जो तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरे साथियों के खाने पीने का उसी तरह ख़याल रखना जिस तरह गड़रिया अपनी भेड़ों का रखता है।"

इस तरह की बातें इतनी ज्यादह और इतनी साफ़ हैं कि इनमें कुछ न कुछ ज़रूर सच्ची हैं। इन सब लोगों से हज़रत ईसा जिस तरह से मिले उससे भी पता चलता है कि वे उनसे छिप छिप कर ही मिले। सूली दिये जाने से लेकर तीन सौ साल बाद तक हज़रत ईसा की किसी क़ब्र का कहीं ज़िक्र नहीं मिलता!

ईसा अगर सूली पर मरे होते तो उनकी क़ब्र के बनाए जाने में रोमी हाकिम, यहूदी पुजारी या जनता कोई रुकावट न डालता। कट्टर ईसाई मानते हैं कि ईसा पहले दिन ही सूली पर मरे, शाम को एक ख़ास जगह उनकी लाश रख दी गई और एक बड़े पत्थर से दरवाज़ा बन्द कर दिया गया, तीसरे दिन बहुत सबेरे वह फिर जी उठे और अपने बदन समेत आसमान

* Luke 24, 37, 43.

पर चले गए, इसके बाद जब जब वह और लोगों को दिखाई देते रहे तो आसमान से किसी तरह आकर लोगों को दर्शन देते थे और फिर आसमान लौट जाते थे, और आज तक वे उसी तरह आसमान पर मौजूद हैं।

इस तरह आसमान पर जाने के क़िस्से हर धर्म की किताबों में हैं। इसलाम में हज़रत मोहम्मद के मैराज का क़िस्सा है। हिन्दू धर्म में राम, युधिष्ठिर जैसों के इस तरह के बहुत से क़िस्से हैं। हज़रत ईसा के इस तरह आसमान पर जाने के क़िस्से को सच न माना जावे तो फिर दूसरी बात यही हो सकती है और यह कहीं ज्यादह समझ में आती है कि ईसा सूली पर नहीं मरे, उनके घाव अच्छे हो गए, और थोड़े दिनों तक इधर उधर रहने के बाद वे दूसरे देशों को चले गए। यह भी पता चलता है कि सूली दिये जाने के क़रीब छै हफ़्ते बाद तक ईसा फ़िलिस्तीन ही में रहे।

यरुसलम में जो जगह आज ईसा की क़ब्र कहलाती है, जिसे वहाँ के मुसलमान बादशाहों से छीनने के लिये सन् १०६५ ई० से लेकर १२७१ ई० तक १७६ वर्ष के अन्दर यूरोप के कई कई देशों के ईसाई बादशाहों ने करोड़ों जानें गवांईं और अरबों रुपया खोया, वह रोम के पहले ईसाई सम्राट कान्सटैण्टाइन आज़म (३२५ ईसवी) के दिमाग़ की उपज है। इस मनगढ़न्त और जालसाज़ी का खुलासा बयान हमने एक

दूसरी किताब में दिया है। दुनिया के इतिहास जानने वालों और छानबीन करने वालों की अब पक्की और मानी हुई राय है कि वह ईसा की क़ब्र नहीं है और न हज़रत ईसा कभी भी वहां पर दफ़न किये गए।* अठाहरवीं और उन्नीसवीं सदी में उसके आस पास और भी कई जगहें 'ईसा की क़ब्र' कह कर बताई गई हैं। लेकिन इतिहासकार उन सब को उतना ही ग़लत मानते हैं।

दूसरी तरफ़ हाल की खोज से पता चला है कि बाबुल के साम्राज्य के दिनों में यहूदियों के फ़िलिस्तीन से निकाले जाने के वक्त यहूदियों के दस क़बीले अफ़ग़ानिस्तान और काशमीर में आकर बस गए थे। काशमीर में अभी तक बहुत से गाँव और क़सबों के नाम वही हैं जो फ़िलिस्तीन के क़स्बों और गांवों के। ये दस क़बीले यहूदी किताबों में "इसराईलियों के दस खोए क़बीले" कहलाते हैं। अफ़ग़ानिस्तान और काशमीर दोनों उन दिनों हिन्दुस्तान में शामिल थे। दोनों में बौद्ध धर्म फैला हुआ था। दोनों के रहने वाले मज़हब के मामले में अपनी उदारता या रवादारी के लिये मशहूर थे। अपने देशवासियों की तरफ़ से इस कड़ुवे सलूक के बाद हज़रत ईसा पूरब की तरफ़ चले

* Encyclopedia Brittanica, Vol XIII, article on Jeruselem, Vol XX p. 337, article on The Holy Sepulchre, the Dictionary of Universal Information, p. 686 and Renan's "Life of Jesus" etc. etc.

आए और उन्होंने अपना बाक़ी जीवन अफ़ग़ानिस्तान और काशमीर में घूम घूमकर यहां के परदेशी यहूदियों के अन्दर अपने उसूलों का प्रचार करने में बिताया।

ईसा के सूली पर मरने की बात को शुरू से ही बहुत से बड़े बड़े विद्वान ग़लत बताते रहे हैं। तीसरी सदी ईसवी का इराक़ का मशहूर सन्त महात्मा मानी (Mani), जिसके नए धर्म को एशिया के बीच से लेकर यूरोप तक लाखों शायद करोड़ों आदमी एक हज़ार साल तक मानते रहे, ईसा को दुनिया की ऊँची से ऊँची आत्माओं में गिनते हुए भी उनके सूली पर मरने के क़िस्से को ग़लत बताता है। यही राय ज़्यादहतर अरब इतिहास लेखकों की है। क़ुरान की भी एक आयत है—"हज़रत ईसा को न क़त्ल किया गया न सूली दी गई, सिर्फ़ लोगों को इस बारे में धोखा हुआ।"

नवीं सदी ईसवी की एक मशहूर अरबी किताब "इकमालुद्दीन" में लिखा है कि नबी 'यूस आसफ़' ने पच्छिम की तरफ़ से चलकर पूरब के कई मुल्कों का सफ़र किया और वहां प्रचार किया। यूस आसफ़ के जो उपदेश इस किताब में दिये हुए हैं वे एक एक कर ठीक वही हैं जो इंजील में हज़रत ईसा के। एक दूसरे विद्वान यूसुफ़ याक़ूब (Joseph Jacobs) ने सन् १८९६ में एक बहुत पुरानी किताब 'बरलाम और योसाफ़त' (Barlaam and Josaphat) को नए सिरे से ठीक करके छापा है। अपनी इस किताब को शुरू करते हुए कुछ पुराने

लेखों के सहारे उन्होंने लिखा है कि 'यूस आसफ़' काशमीर पहुँचकर मरा। इस किताब में भी यूस आसफ़ के जो उपदेश दिए गए हैं वे एक एक कर इंजील के हज़रत ईसा के उपदेश हैं, वही बातें, वही मिसालें और वही क़िस्से। यूस और यासू दोनों ईसू या ईसा के अरबी रूप हैं और यूसुफ़ या आसफ़ हज़रत ईसा के बाप का नाम था।

काशमीर की राजधानी श्रीनगर की खानयार गली में आज तक एक बहुत पुरानी क़ब्र है जिसे वहां के लोग 'नबी साहब की क़ब्र' या 'ईसा साहब की क़ब्र' या 'यूस आसफ़ नबी की क़ब्र' कहते हैं। काशमीर में यह पुरानी कहानी चली आती है कि यह क़ब्र एक नबी की है जो क़रीब दो हज़ार साल हुए पच्छिम से चलकर काशमीर आया था। क़रीब दो सौ साल की पुरानी एक इतिहास की किताब 'तारीख़े आज़मी' में लिखा है कि यह क़ब्र यूस आसफ़ नबी की है जो परदेश से आकर काशमीर में बसा था। मुसलमान इतिहास लेखकों का यूस आसफ़ नबी मानना भी बताता है कि हज़रत ईसा और यूस आसफ़ दोनों एक ही थे। कोई सुबूत इसके ख़िलाफ़ नहीं मिलता।

ये सब बातें इतिहास के ख़याल से बिल्कुल पक्की नहीं कही जा सकतीं। पर इसमें शक नहीं कि हज़रत ईसा सूली पर नहीं मरे और जहाँ जहाँ भी अब तक हज़रत ईसा की क़ब्र बताई जाती है उनमें सब से ज्यादह ठीक अगर कोई मालूम

होती है तो वह श्रीनगर में ईसा साहब की क़ब्र है।

हज़रत ईसा की ज़िन्दगी का इञ्जील से इतना कम पता चलता है कि इस बारे में खोज अभी तक जारी है। इन खोजियों में से एक रूसी विद्वान डा० नोतोविच का नाम ख़ास तौर पर लिया जा सकता है। हज़रत ईसा की ज़िन्दगी की खोज में उन्होंने ४० साल तक यूरोप, मिस्र, तुरकी, अरब, इराक़, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, कश्मीर, तिब्बत और हिन्दुस्तान की यात्रा की। उन्होंने सैकड़ों पुराने मठों, पुराने मन्दिरों और पुरानी ख़ानक़ाहों की लाइब्रेरियों में बैठकर वहाँ की पुरानी किताबें पढ़ीं। अंगादी के रेगिस्तान में एक मठ के अन्दर उन्हें पहिली बार पता लगा कि हज़रत ईसा पहिली यरुसलम यात्रा के बाद यानी क़रीब १४ साल की उमर में तिब्बत और हिन्दुस्तान चले आए थे। क़रीब १७ साल यहाँ रह कर वह अपने देश लौट गए थे। तिब्बत और हिन्दुस्तान के बीच में हेमिस (Himis) नाम की जगह पर डाक्टर नोतोविच को एक पुरानी हाथ की लिखी किताब पाली भाषा की मिली जिसमें हज़रत ईसा के तिब्बत और हिन्दुस्तान आने का हाल तफ़सील के साथ लिखा हुआ था। यह किताब बाद में अंग्रेज़ी में 'अननोन लाइफ़ आफ़ जीज़स' (Unknown Life of Jesus) के नाम से छपी। इस किताब के एक हिस्से का ख़ुलासा यह है—

"ईसा जब १३ साल के हुए तो लोगों ने उनकी शादी की सलाहें करनी शुरू कीं। इस पर वह घर छोड़ कर चले आए। वह बुद्ध की

तरह धर्म के खोजी थे। कुछ सौदागरों के साथ वह सिन्ध आए और फिर वहाँ से हिन्दुस्तान। बहुत दिनों वह जैनियों के साथ रहे। फिर वह जगन्नाथ धाम भी गए। ६ साल तक वह राजगृह, बनारस और कपिलवस्तु में घूमते रहे। बौद्ध भिक्षुओं से उन्होंने बौद्ध किताबों को पढ़ा। फिर नैपाल और हिमालय होते हुए वह ईरान चले गए और फिर वहाँ से अपने देश में जाकर उन्होंने प्रेम और अहिंसा का प्रचार शुरू किया।"

विन्ध्या पहाड़ी के ऊपर 'नाथ नामावली' नाम की एक और हाथ की लिखी किताब मिली जिसमें यह सब हाल देने के बाद लिखा है कि किस तरह हज़रत ईसा को उनके देश में सूली दी गई, उनके हाथों और पैरों में कीलें ठोंकी गईं, किस तरह उनकी जान बची और फिर वह अपने एक गुरु चेतननाथ के साथ हिन्दुस्तान लौटे। यहाँ हिमालय में उन्होंने एक मठ क़ायम किया और ४९ बरस की उमर में उसी मठ में उनका शरीर छूटा।

यह सब बातें कहाँ तक ठीक हैं और कहाँ तक नहीं, कहना बहुत कठिन है। अन्दाज़ा यह ज़रूर होता है कि हज़रत ईसा की ज़िन्दगी का कुछ न कुछ हिस्सा हिन्दुस्तान और दूसरे देशों में भी बीता। यह भी ज़ाहिर है कि उनके उपदेशों का अपने से पहिले के धर्मों ख़ास कर बौद्ध धर्म से गहरा सम्बन्ध था। इसमें भी शक नहीं कि हज़रत ईसा किसी एक देश एक क़ौम के न थे, वह सारी मानव जाति, सारी इन्सानी क़ौम की एक बराबर मिलकियत थे।

निचोड़

हज़रत ईसा का सारा जीवन एशिया की उनसे पहले की धार्मिक और सांस्कृतिक, मज़हबी और कलचरल लहरों का क़ुदरती नतीजा था। वह उन महान आत्माओं में से थे जो किसी भी एक मुल्क या एक समाज या एक धर्म वालों के न होकर सारी दुनिया के लिए बरकत और सारी इन्सानी क़ौम की एक अनमोल बपौती हैं। इसके साथ ही यहूदी क़ौम के शुरू से उस वक़्त तक के इतिहास के साथ भी उनका गहरा नाता था। उस इतिहास की वह एक क़ुदरती और सुन्दर उपज थे। उस क़ौमी बाग़ के वह सबसे सुन्दर फूल थे। अबराहाम से लेकर उस ज़माने तक जो बहुत से 'पैग़म्बर' यहूदियों में एक दूसरे के बाद पैदा हुए उनमें वह सब से आख़री और सब से महान थे। यहूदी क़ौम को एक नये पैग़म्बर की ज़रूरत थी। सारी क़ौम की आंखें उधर लगी हुई थीं। हज़रत ईसा उस क़ौम की इसी ज़रूरत और इसी आशा के क़ुदरती फल थे।

ईसा ने कोई नया धर्म नहीं चलाया। इन्सानी दुनिया और ख़ास कर यहूदी समाज के पुराने भण्डार से सच्चाई और सब

से काम की सच्चाई के दाने बीन कर उन्होंने लोगों के सामने रख दिये। उन्होंने हम सब के 'बाप' एक परमेश्वर का ऊँचे से ऊँचा ख़याल यहूदियों के सामने पेश किया। अबराहाम की नसल से होने के झूठे घमण्ड को तोड़कर उन्होंने सब आदमियों को भाई और परमेश्वर की नज़रों में सबको बराबर बताया। मज़हबी रीतिरिवाज, कर्म काण्ड और पूजा पाठ की जगह, जिनका उन दिनों यहूदियों में ज़ोर था, उन्होंने आदमी-आदमी के बीच प्रेम और ईमानदारी की ज़िन्दगी को सच्चा धर्म बताया। स्वार्थ यानी ख़ुदग़रज़ी, परिग्रह यानी लालच, द्वेष यानी दुश्मनी और हिंसा यानी किसी को ईज़ा पहुंचाने को आदमी के लिए बुरा और उसकी भलाई और तरक़्क़ी में रुकावट बताकर उन्होंने ख़ुदी से ऊपर उठने (निःस्वार्थता), माल जमा न करने (अपरिग्रह), प्रेम और अहिंसा (अदम तशद्दुद) को ही आदमी और समाज दोनों की भलाई का सिर्फ़ एक रास्ता बताया। ख़ुद अपने जीवन में इन्हीं उसूलों पर चल कर उन्होंने एक 'आदर्श मनुष्य' या उस तरह की ज़िन्दगी की मिसाल दुनिया के सामने रखी जिस पर सब को चलना चाहिये।

इस जगह हज़रत ईसा के अहिंसा के उसूल की थोड़ी सी छान बीन की जा सकती है। अहिंसा का उसूल हज़रत ईसा से हज़ारों साल पहले का है। हिन्दुस्तान और चीन के कई मज़हबों ने बहुत पहले से इस उसूल का प्रचार किया था कि

अहिंसा ही 'परम धर्म' यानी सब से बड़ा धर्म है। लेकिन शायद हज़रत ईसा से पहले किसी ने अहिंसा को इस तरह अमली रूप देने की कोशिश नहीं की थी जिस तरह हज़रत ईसा ने।

इस ज़माने में महात्मा गान्धी ने भी अहिंसा को एक अमली रूप देने की बड़ी कोशिश की है। लेकिन महात्मा गान्धी की अहिंसा और हज़रत ईसा की अहिंसा में ख़ासा फ़रक़ है। महात्मा गान्धी की 'अहिंसा' बुराई का मुक़ाबला न करना नहीं सिखाती; महात्मा गान्धी बुराई का मुक़ाबला करना हर आदमी का फ़र्ज़ बताते हैं। वह सिर्फ़ यह कहते हैं कि बुराई का मुक़ाबला बुराई या हिंसा से नहीं बल्कि भलाई और अहिंसा से किया जावे। इसके ख़िलाफ़ हज़रत ईसा का उसूल है कि बुराई का किसी तरह भी मुक़ाबला न करो। उसे खुले अपने रास्ते चलने दो। मिसाल के तौर पर अगर कोई हमें ज़बरदस्ती एक मील ले जाना चाहे तो महात्मा गान्धी का कहना है कि हमें उसकी इस बेजा इच्छा को पूरा नहीं करना चाहिये। हमें उसका मुक़ाबला करना चाहिये प्रेम में भर कर अहिंसा के ढङ्ग से। हमें धरना देकर ज़मीन पर बैठ जाना चाहिये और बिना उसे चोट पहुंचाए उसे मौक़ा देना चाहिये कि वह चाहे तो हमारे बदन के टुकड़े टुकड़े कर दे, पर हम किसी तरह भी उसकी इस ज़बरदस्ती में उसकी मदद न करेंगे। इसके ख़िलाफ़ हज़रत ईसा का साफ़ हुकुम है कि अगर कोई हमें एक मील ज़बरदस्ती

ले जाना चाहे तो हमें ख़ुशी से उसके साथ दो मील चले जाना चाहिये। हमें किसी तरह भी उसका मुक़ाबिला नहीं करना चाहिये। ख़ुद उस तरह की बुराई को न करते हुए अपनी आत्मा को उससे अलग रखते हुए हमें सिर्फ़ अपने दिल की सफ़ाई और अपने प्रेम से दूसरों के दिलों से बुराई को उखाड़ देने की उम्मीद रखनी चाहिये।

हमें इस बात पर बहस करने की ज़रूरत नहीं है कि इन दोनों उसूलों में से किस पर कितना अमल किया जा सकता है, और कितना नहीं। आदमी के दिल और दिमाग़ के विकास और उनकी तरक़्क़ी में कई ऐसी बातों ने जो हवाई समझी जाती थीं और अमल के क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं सैकड़ों और हज़ारों 'अमली' चीज़ों से कहीं बढ़कर और टिकाऊ हिस्सा लिया है। लेकिन इसमें शक नहीं कि आदर्श यानी मयार के ख़याल से हज़रत ईसा का उसूल महात्मा गान्धी के उसूल से ज़्यादह बारीक और ऊँचा है।

पिछले १९०० साल में हज़रत ईसा के उसूलों का कहाँ तक ठीक इस्तेमाल हुआ या नहीं, उनके बिखरे हुए बीज कहाँ कहाँ बंजर ज़मीन पर पड़े और कहां कहां उपजाऊ मिट्टी में, यह सब भी एक अलग सवाल है।

लेकिन इसमें भी शक नहीं कि इन १९०० साल के अन्दर करोड़ों ही आदमियों को हज़रत ईसा के सन्देश से शान्ति और सन्तोष मिला, करोड़ों ही के अँधेरे जीवन में उस पाक सन्देश

ने उम्मेद की किरन को जगाए रखा, करोड़ों ही को मुसीबतों और लोभ लालच के होते हुए सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर क़ायम रखा।

अपने को हज़रत ईसा के चेले कहने वाले जिन लोगों के हाथों में आज दुनिया के जीवन की बागडोर नज़र आती है उनमें से ज़्यादहतर हज़रत ईसा के बताये हुए रास्ते से ठीक उलटे रास्ते पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं और उसी में अपना भला समझते हैं। फिर भी कौन कह सकता है कि अपने अब तक के तजरुबों में उन्हें किसी तरह की भी टिकाऊ कामयाबी मिली है, और आगे चलकर आदमी की भलाई का वही एक सच्चा रास्ता सावित न होगा, जिसे अब तक वे ख़याली या हवाई कहकर मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं। इन्सानी क़ौम के जीवन में दो हज़ार साल कुछ बहुत नहीं होते। यूरोपियन नेताओं के दूसरों के ख़ून में रंगे हुए हाथ, उनके थके हुए पैर और बेचैन दिल अब भी कभी कभी उनमें से कइयों को नाज़रथ के इस बढ़ई और उसके उपदेशों की याद दिलाते रहते हैं। यूरोप के सोचने समझने वाले लोगों को ज़ोरों के साथ ऐसा पता चल रहा है कि उनका अब तक का रास्ता शायद किसी के भी भले का रास्ता नहीं है। दुनिया के उन लोगों की बढ़ती हुई तादाद जो लड़ाई के ख़िलाफ़ हैं और हिन्दुस्तान की अहिंसा या अदम तशद्दुद की तहरीक दोनों कम्पास की सुई की तरह हमें आगे का रास्ता दिखा रही हैं। दोनों हज़ारों साल के तजरुबों और

मेहनत के बाद इन्सान के दिल की बड़ी से बड़ी गहराइयों से निकली हुई अमर जीवन यानी अबदी ज़िन्दगी की चमकती हुई किरने हैं। दोनों का निकास उसी जगह से है जिससे हज़रत ईसा और उनके सन्देश का। ये सब एक ही सच्चाई के अलग अलग रूप हैं, एक ही मतलब को ज़ाहिर करने वाले अलग अलग वाक्य या फ़िक़रे हैं।